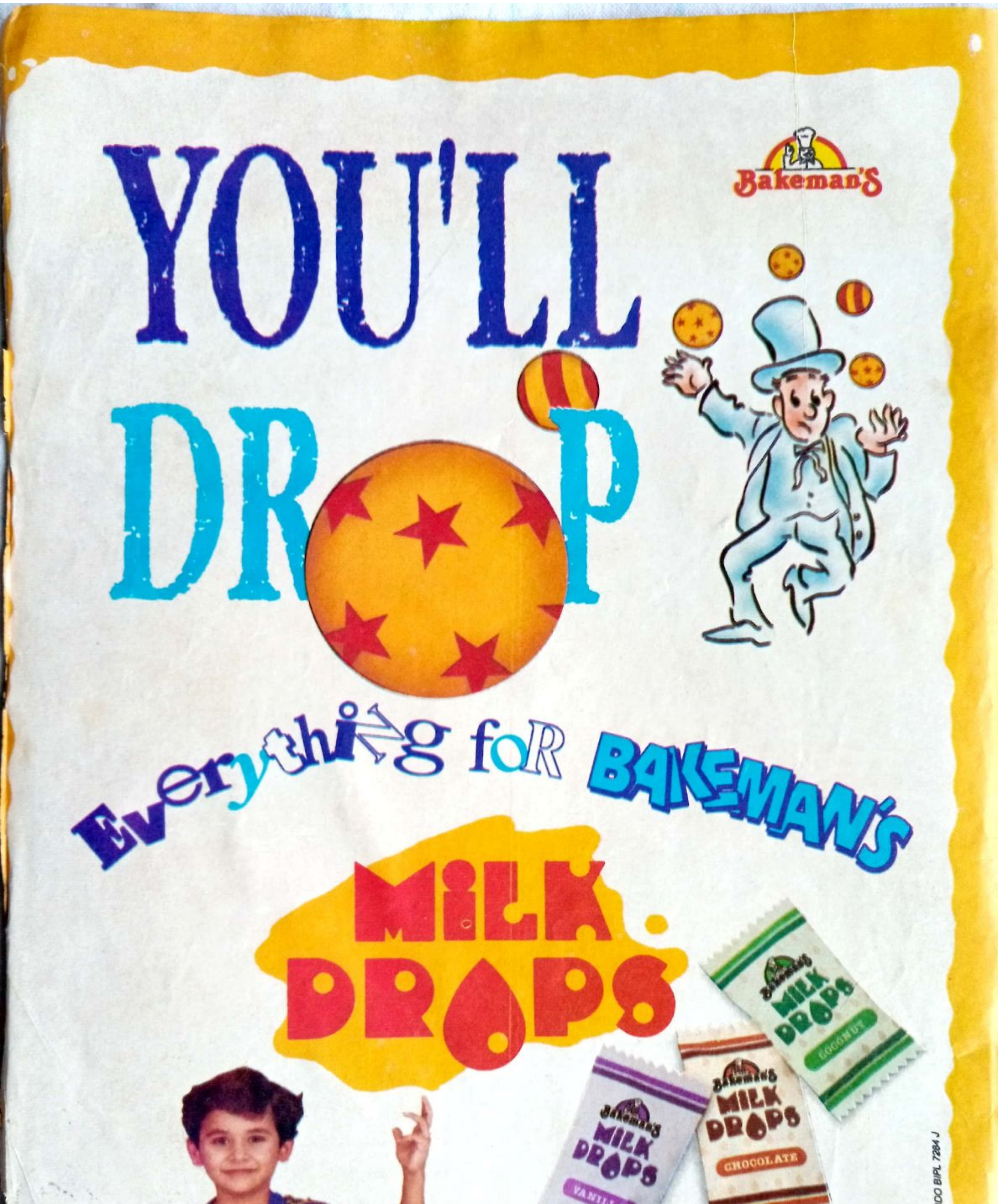
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

# नंदन

सितम्बर'९३




हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन



Bakeman's
YOU'LL DROP
Everything for BAKEMAN'S
MILK DROPS
Bakeman's MILK DROPS VANILLA
Bakeman's MILK DROPS CHOCOLATE
Bakeman's MILK DROPS COCONUT
R K SWAMY/BBDO BIPL 7284 J


'श्रीमतीजी' और उसके पति किशोर की हंसाने और गुदगुदाने वाली नोकझोंक। पूरे परिवार के लिए स्वस्थ मनोरंजन से भरी चुटीली रंगीन कॉमिक।
श्रीमतीजी - 'शादी की वर्षगांठ
प्राण
श्रीमतीजी
'शादी की वर्षगांठ
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
मध्यमवर्गीय क्लर्क की समस्याओं से जूझना कार्टूनिस्ट प्राण का अनूठा चरित्र रमन सैकड़ों ठहाकों से भरपूर रमन का नया कॉमिक
रमन का मकान
प्राण
रमन
का मकान
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
प्राण
दाबू और विदेशी जासूस
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
चाचा भतीजा और सामरी की चुनौती
स्टिकर फ्री!
महाबली शाका और खूनी चमगादड़
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
लम्बू मोटू और ग्रीन सिग्नल
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-26
मुफ्त! स्टिकर इस कॉमिक के साथ
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

# पत्र मिला

□ आपके सम्पादन में 'नंदन' ने जो प्रगति की है, उससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। 'प्राचीन कथा विशेषांक' विशेष रूप से आकर्षक बना है। इसकी सामग्री की प्रामाणिकता से इसका गौरव और बढ़ गया है। **—डा. मंडन मिश्र, कुलपति, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली**

□ 'परी कथा विशेषांक' की हर एक कहानी मन को भा गई। चित्र कथाएं 'अनोखा मूसल' और 'पिंजरे में छड़ी' बहुत बढ़िया थीं। 'तेनालीराम' भी मजेदार था। 'नंदन' ऐसी पत्रिका है जिसे पूरा परिवार पढ़ सकता है। **—नागेंद्रदास, बोकारो**

□ जुलाई अंक का मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगा। 'पेड़ चांदी का', 'सिर पर चिड़िया', 'सोने का लोटा', 'लो उपहार' आदि कहानियां बहुत रोचक लगीं।

**—रोहतासकुमार, अनूपगढ़**

□ प्रिय मित्र 'नंदन' तुम खूब फलो-फूलो। हम पाठक वर्ग का साथ सच्चे मित्र की तरह निभाते रहो। नई पीढ़ी की नैया को घाट तक पहुंचाने में तुम्हारे जैसे मित्रों का कम योगदान नहीं रहता। तुम्हारी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

**—सुमंत विश्वास, हजारीबाग**

□ 'परी कथा विशेषांक' अपने आप में एक अनूठा लाजवाब तोहफा है, बच्चों के लिए। परी कथाओं को अनावश्यक बताने वालों की आंखें खुल जाएंगी, इस अंक से।

**—श्रीराम सिंह 'उदय', बलिया**

□ 'खो गई परी', 'फिर चली जाना', 'सिर पर चिड़िया', 'भले को भला', 'सुना न सुना', 'आधा खाना' कहानियों के अलावा 'आओ बात करें' बहुत पसंद आया। आशा है इसी प्रकार 'नंदन' हमारा मन बहलाता रहेगा।

**—भरत कुमार टी. सतनाणी, अकोला**

□ तुलसीदास जी का चित्र बहुत पसंद आया। 'आओ बात करें' में राजा रवि वर्मा के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

**—निशिकांत खदरिया, नोहर (राज.)**

□ आपको जानकर खुशी होगी कि मेरे दोस्तों से ज्यादा 'नंदन' मेरे पास हैं। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। मैं अपने सभी दोस्तों को 'नंदन' पढ़ने के लिए देती हूं।

**—कीर्ति मिश्र, राऊरकेला**

□ जुलाई अंक के क्या कहने! 'चांदी का पेड़', 'आधा खाना', 'चाल बेचाल' और 'मैं चला' कहानियां अनूठी थीं। 'रूप अनोखा गंध निराली' रंगीन झांकी भी अच्छी लगी।

**—रमिंदर कौर, नई दिल्ली**

□ मैं सोचता था कि 'नंदन' में ऐसी क्या विशेषता है जो सबको अपनी ओर आकर्षित करती है। जुलाई अंक की अनोखी सामग्री देख, सारी विशेषताओं का पता चल गया।

**—सन्नी खुराना, रोहतक (हरि.)**

**इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : ध्रुव कुमार अग्रवाल, नौहझील, मथुरा; भगवान दास वैष्णव, पाली; नवलकिशोर शर्मा, देहीखेड़ा (राज.)।**

## आगामी अंक

'त्योहारों की चमक-दमक और नंदन का अक्तूबर अंक

सोने पर सुहागा

● **एलबम में थल सेनाध्यक्ष जनरल बिपिनचन्द्र जोशी**

● भांति-भांति के पंछी। दो पृष्ठों में बहुरंगी छवियां

● **पिता नहीं रहे। अब बच्चे को घर-बार संभालना था। वह घर से बाहर निकला, तो मुसीबत सामने थी। विश्व की महान कृतियों में पिप्लाक फ्रूचेन की रचना 'एस्किमो ब्राय' का सार-संक्षेप।**

● राजा ने चश्मा लगाकर दर्पण में देखा, तो नजर आया भेड़िया। रहस्य भरी चित्र-कथा-पहचान। साथ में एक और चित्र-कथा।

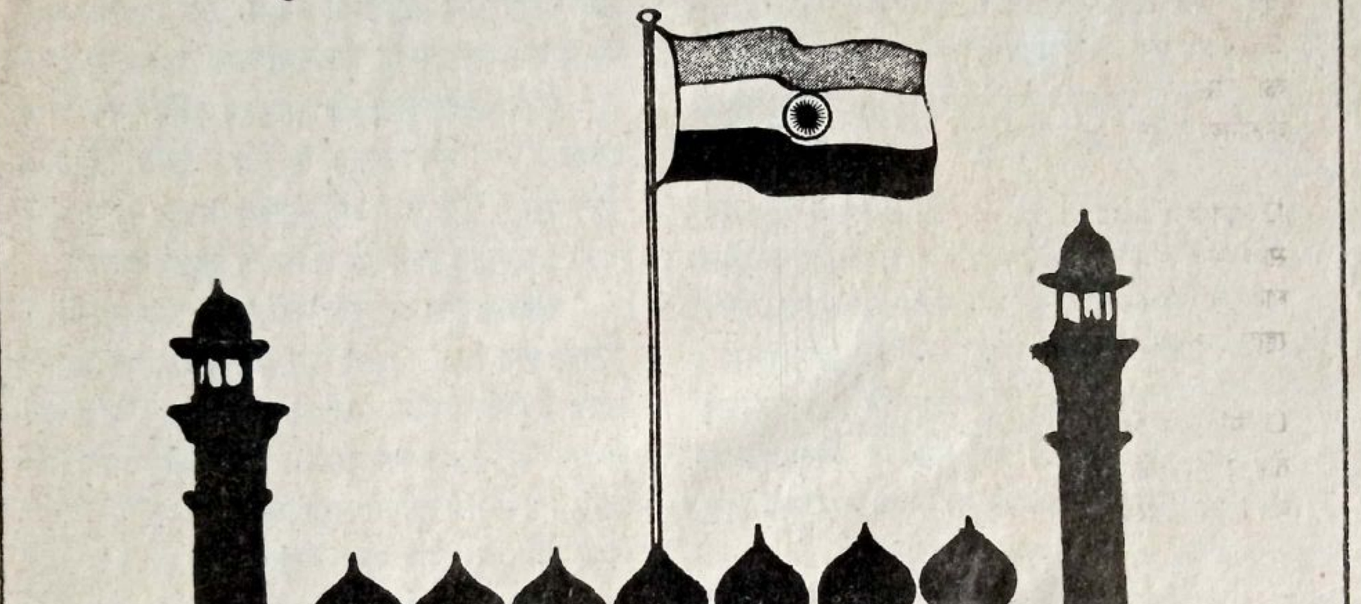
● **नमक कौन ले गया—तेनालीराम की विचित्र खोज और चीटू-नीटू गए रामलीला देखने।**

साथ में अन्य अनेक गुदगुदाहटें और स्थायी स्तम्भ

**अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं**

# आज़ादी
# हमारा कवच

# एकता हमारी शक्ति



# आओ बात करें

एक बगिया थी हरी-भरी। वहां गलीचे जैसी मुलायम-मुलायम घास थी। तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल थे। फलदार पेड़ भी थे। पत्थरों की चहारदीवारी थी। दीवार के नीचे जंगली घास के पौधे उग आए थे। उनमें भी कुछ नन्हे-नन्हे फूल उगे थे—बेरंग, बेगंध। शुरू से ही घास के ये पौधे दीवार की ओट में थे। हवाएं चलतीं, तूफान आते पर वे तो दीवार की आड़ में बचकर जीते थे।

रोज सूरज निकलता-बगिया में रोशनी हो जाती। चहल-पहल, चहक-महक से सब कुछ गमक-गमक उठता। पर घास के उन फूलों को कुछ खास पता न चलता—कब सूरज उगा, कब सूरज डूबा, कब रोशनी हुई, कब रोशनी गई। वे तो उस गुफा जैसी जगह में, पत्थरों की ओट में ही छिपे रहते। रात होती, चांद निकलता। चांदनी में पूरी बगिया नहाने लगती। तारे खिल-खिल करके खेलने लगते। पर वे नन्हे फूल तो बेसुध रहते थे। वर्षा आती या ओले पट-पट पड़ते, उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। वे सुरक्षित रहते, कोई खतरा उन्हें सताता न था।

घास के उन पौधों में से एक पौधा कुछ अधिक लम्बा हो गया। उसके ऊपर चिंदिया से फूल ने इधर झांका, उधर ताका। उसने देखा कि गुलाब का पौधा कैसा तना खड़ा है! उस पर खिला सुर्ख गुलाब आसमान की ओर सिर उठाए है। घास के उस फूल के मन में लालसा जाग उठी— 'क्या मैं भी गुलाब नहीं बन सकता? मैं भी उसकी तरह ऊपर को नहीं उठ सकता।'

बेसहारा का सहारा तो विधाता है। उस नन्हे फूल ने विधाता का गुणगान किया। बार-बार प्रार्थना की—"मुझे भी गुलाब बना दो। मुझे भी वैसा ही रंग-रूप दे दो।"

विधाता ने उसे समझाया—"अरे पगले, तू एकदम सुरक्षित है। गुलाब आज खिलता है, कल झड़ जाता है। घास का फूल खिलता है, खिला ही रहता है।"

लेकिन भला वह छुटका फूल कहां मानने वाला था। बोला—"प्रभो, मैंने सब कुछ समझा। घास का फूल तो रूखा-सूखा होता है—बेआब, बेरंग। उसका खिलना क्या, मुरझाना क्या! खिलता तो गुलाब है। गुलाब की मखमली पत्तियां, उन पर ओस गिरकर मोती बन जाती है। फूल खिला नहीं कि हर दिशा महक उठती है। मैं इस ओट में अब जीना नहीं चाहता। आकाश में सिर उठाकर जीना चाहता हूं, डाल पर झूमना चाहता हूं। चाहे एक दिन को सही, पर सिर तो उठा सकूं, चांद-तारों को तो देख सकूं।"

उस छुटके फूल को घास के दूसरे फूलों ने भी समझाया—"तुम पगला गए हो। हमारी जाति के फूल ऐसे ही होते हैं। अरे, गुलाब के दर्द को तुम क्या जानो। बरसात होती है, पत्ती-पत्ती बिखर जाती है।"

लेकिन घास का फूल नहीं माना। विधाता ने उसे गुलाब बना दिया। दूसरे दिन वह गुलाब की कंटीली डाल पर खिला हुआ, गर्व से मुसकरा रहा था। तभी बादल घिरे, हवा चलने लगी। गुलाब का पौधा हिलने लगा। हवा तेज हुई तो लगा कि अब गिरा, तब गिरा। तभी घास के दूसरे फूल चिल्ला उठे—"अरे मूर्ख, अब मरेगा। अपनी नासमझी का फल अब तुझे मिलेगा।"

लेकिन गुलाब का पौधा गिरा नहीं। कुछ दूसरे पौधे आंधी-पानी में जरूर धरती पर गिर गए।

दो दिन बाद मौसम खुला। एक लड़की बगिया में आई। उसने गुलाब का वह फूल तोड़ लिया। उस फूल को ले जाकर, मंदिर में देवता को अर्पित कर दिया।

फूल खुश था, बहुत खुश। बरसों तक ओट में जीते-जीते उसने जो न देखा था, वह देख लिया। खतरों का मुकाबला करते हुए जीना ही जीना है। कठिनाइयों से जूझते हुए जीना ही जीना है।

**—तुम्हारे भइया**

# नंदन

सितम्बर '९३
वर्ष : २९ अंक : ११

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

## कहां क्या है

### कहानियां



### कविताएं



### इस अंक में विशेष



### स्तम्भ





मुखपृष्ठ : राजेन्द्रकुमार वधवा
एलबम : इन्द्रजीत जुनेजा, एस. एस. बृजवासी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्र कुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन

# राजा ने वर मांगा

—जय प्रभा

धरती पर न जाने कितने राजा-महाराजा हो चुके। लेकिन आदिराज यानी पृथ्वी का पहला राजा किसे कहा गया ? वह थे महाराज पृथु। उन्हें 'विधाता', 'प्रजापति', 'प्रथम नृप' जैसी उपाधियां दी गईं। इससे पहले लोग पशु-पक्षियों की तरह इधर-उधर घूमा करते थे। पृथु ने खेती करने की व्यवस्था दी। पहली बार उन्होंने ऊबड़-खाबड़ धरती को समतल किया।

पृथु के जन्म के समय उनके दाहिने हाथ में चक्र और चरणों में कमल के चिन्ह थे। ऋषियों ने देखकर ही समझ लिया कि वह भगवान के अंश से जन्मे हैं। उन दिनों चोर-डाकू अपनी मनमानी किया करते थे। उन्हें किसी का भय नहीं था। ऋषि-मुनियों ने तय किया कि पृथु का अभिषेक किया जाए।

महाराज पृथु और महारानी अर्चि जब सिंहासन पर बैठे, तो ऐसा लगा जैसे अग्निदेव स्वयं बैठे हों। कुबेर के दिए सोने के सिंहासन पर वह विराज रहे थे। वरुण का दिया श्वेत छत्र उन की शोभा बढ़ा रहा था, जिसमें से सुगंधित जल की फुहारें झरती थीं। अन्य देवी-देवताओं ने भी उत्तम उपहार महाराज पृथु को भेंट किए।

अभिषेक से पहले सूत, मागध और चारण उनकी स्तुति करने खड़े हुए। तभी पृथु बोले—"अभी तो लोक-हित के कुछ भी काम मैंने नहीं किए। मेरा कोई गुण भी प्रकट नहीं हुआ। ऐसे में मेरी स्तुति करना ठीक नहीं। श्रीहरि गुणों की खान हैं। वह सदा-सर्वदा रहते हैं। शिष्ट जनों को उनकी स्तुति करनी चाहिए।"

यह सुनकर सूत तथा गायक महाराज पृथु के बारे में कहने लगे—"आप बड़े दयालु हैं।। शत्रु आपको कभी हरा न सकेंगे। आप सदा धर्म का पालन करेंगे। प्रजा के सारे कष्ट दूर करेंगे। पर्वतों को तोड़-तोड़कर पृथ्वी को समतल करेंगे। अपने शत्रु के पुत्र को दंडनीय होने पर भी कोई दंड न देंगे। अपराध करने पर पुत्र को भी दंड देंगे।"

महाराज पृथु ने बड़ाई करने वालों को तरह-तरह की मनचाही वस्तुएं भेंट कीं। उन्होंने मंत्रियों, पुरोहितों, पुरवासियों तथा देशवासियों को मान-सम्मान दिए।

पृथु का राजतिलक तो हो गया, किंतु चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। दूसरे ही दिन उनके महल के बाहर हजारों लोग एकत्र हो गए। उन्होंने महाराज पृथु से कहा—"राजन, हम पेट की भीषण ज्वाला से जले जा रहे हैं। आप हमारे अन्नदाता बनाए गए हैं। हम सब आपकी शरण में आए हैं। हमारे लिए अन्न का



प्रबंध कीजिए।"

प्रजा का करुण विलाप सुनकर, महाराज पृथु सोच में पड़ गए। विचार करने पर उन्हें अन्न की कमी के कारण का पता चल गया। पृथ्वी ने ही अन्न और वनस्पति को अपने भीतर छिपा लिया था। पृथु ने क्रोध में भरकर धनुष उठाया। बाण चढ़ाया और तय किया कि वह पृथ्वी के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। लगा मानो वह काल बन गए हों।

पृथ्वी ने क्रोध में भरे पृथु को देखा तो वह कांप उठी। गौ का रूप धरकर, भागने लगी। किंतु जहां-जहां वह गौ गई, धनुष पर बाण चढ़ाए पृथु ने उसका पीछा किया। जिस प्रकार मृत्यु से कोई नहीं बच सकता, इसी प्रकार पृथु से बचाने वाला उसे कोई न मिला। तब वह डरी हुई पीछे की ओर लौटी। महाराज पृथु से बोली—"राजन्, मेरा कोई अपराध नहीं है, फिर भी आप मुझे क्यों मारना चाहते हैं ? मुझे नष्ट करके आप अपने को और प्रजा को जल के ऊपर कैसे रखेंगे ?"

पृथु ने कहा—"पृथ्वी, मेरी प्रजा अकाल और महामारी से परेशान है। अन्न और बीज तू पचा लेती है। माया से ही अब गौ का रूप बनाकर आई है। मैं तेरा गर्व नष्ट करके रहूंगा।"

यह सुनकर पृथ्वी कांपने लगी। उसने विनीत होकर कहा—"प्रभो, आप क्रोध शांत कीजिए और मेरी प्रार्थना सुनिए। आपको मुझे समतल करना होगा, ताकि वर्षा बीत जाने पर भी इन्द्र का बरसाया जल सर्वत्र बना रहे। यदि आपको प्राणियों के लिए अन्न की आवश्यकता है, तो आप मेरा दोहन कीजिए। योग्य बछड़ा, दोहन पात्र और दुहने वाले की व्यवस्था कीजिए। मैं आपको सभी वस्तुएं दे दूंगी।"

पृथ्वी की यह प्रार्थना पृथु ने मान ली। पृथ्वी से अलग-अलग वस्तुएं प्राप्त करने (दोहन) के लिए देव, गंधर्व, मनुष्य तैयार हो गए। महाराज पृथु ने स्वयं सभी तरह के धान्य (अन्न) पाने के लिए कृषि की शुरुआत की। धरती के भीतर से धातुएं भी निकाली जाने लगीं। कई मंत्रियों को ये काम सौंपे गए।



औषधियां और रत्न भी प्राप्त होने लगे। पृथ्वी तो सभी मनचाही वस्तुओं को देने वाली है। इस समय वह पृथु के अधीन थी। सभी ने अपनी-अपनी जाति के मुखिया की देखरेख में उससे भिन्न-भिन्न प्रकार के पदार्थ प्राप्त किए। महाराज पृथु तो इतने प्रसन्न थे कि पृथ्वी को वह अपनी पुत्री के समान मानने लगे। उन्होंने पृथ्वी को समतल करके, उस पर प्रजा के लिए जहां-तहां नगर, गांव, बस्तियां और छावनियों का निर्माण कराया। लोग अपनी-अपनी सुविधा अनुसार जहां ठीक लगा, वहां बस गए।

महाराज पृथु ने सरस्वती नदी के तट पर सौ अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया। इन्द्र ने सोचा – 'यदि पृथु सौ यज्ञ पूरे कर लेंगे, तो मुझसे भी ऊपर हो जाएंगे।' इसलिए इन्द्रदेव ने यज्ञ में बाधा डालने का प्रयास किया। उन्होंने पाखंड से वेश बदलकर, यज्ञ का घोड़ा हर लिया। वह घोड़े को लेकर आकाश मार्ग से जा रहे थे, तभी अत्रि मुनि ने उन्हें देख लिया। अत्रि के कहने पर महाराज पृथु का पुत्र इन्द्र को मारने दौड़ा। वह क्रोध से बोला—"अरे खड़ा रह, खड़ा रह।"

इन्द्र सिर पर जटाजूट और शरीर में भस्म धारण किए हुए थे। उनका ऐसा रूप देखकर, पृथु कुमार भ्रम में पड़ गया। उसने इन्द्र पर बाण नहीं चलाया। तब अत्रि मुनि ने फिर उसे इन्द्र को मारने की आज्ञा

दी—"वत्स, इस इन्द्र ने तुम्हारे यज्ञ में विघ्न डाला है, तुम इसे मार डालो।"

अत्रि मुनि के इस प्रकार कहने पर पृथु कुमार का क्रोध भड़क उठा। इन्द्र आकाश में तेजी से जा रहे थे। वह उनके पीछे इस तरह दौड़ा, जैसे रावण के पीछे जटायु। उसे पीछे आते देख, उस वेश और घोड़े को छोड़ इन्द्र वहीं अंतर्धान हो गए। वह वीर अपना घोड़ा लेकर, पिता की यज्ञशाला में लौट आया। उसके पराक्रम को देखकर, महर्षियों ने उसे विजिताश्व नाम दिया।

घोड़े को वापस यज्ञशाला में खंभे से बांध दिया गया। इन्द्र को भला चैन कहां ! शक्तिशाली इन्द्र ने घोर अंधकार फैला दिया। उसी में छिपकर वह फिर से इस घोड़े को उसकी सोने की जंजीर समेत ले चले।



अत्रि मुनि ने आकाश में तेजी से जाते फिर उन्हें दिखा दिया। पृथुपुत्र ने इन्द्र के मार्ग में कोई बाधा न डाली। किंतु अत्रि मुनि ने उसे उकसाया तो पृथुपुत्र ने गुस्से से इन्द्र का पीछा किया। उसने लक्ष्य साधकर बाण चढ़ाया, तो देवराज घोड़े को वहीं छोड़ फिर अंतर्धान हो गए। विजिताश्व फिर से घोड़े को लेकर यज्ञशाला में आ गया।

इन्द्र द्वारा बार-बार ऐसी कुचाल चलने का पता पृथु को लगा। पराक्रमी पृथु को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अपना धनुष उठाकर उस पर बाण चढ़ाया। पृथु की भुजाएं फड़क रही थीं। क्रोध से मुंह लाल हो गया था। उनकी ओर देखा नहीं जाता था। महाराज पृथु इन्द्र का वध करने को पूरी तरह तैयार थे। तभी कई ऋषि-मुनि आगे आए और बोले—"राजन्, आप तो बड़े बुद्धिमान हैं। यज्ञ की दीक्षा ले लेने पर किसी को दंड देना उचित नहीं। यह मर्यादा है। आपके यश और कीर्ति से ईर्ष्या के कारण ही इन्द्र इस कार्य में बार-बार विघ्न डाल रहे हैं। हम उन्हें मंत्रों से यहां बुला लेते हैं और उनका तेज खत्म कर देते हैं।"

ऐसा ही किया गया। इन्द्र वहां खिंचे चले आए। अब क्या-कुछ किया जाए—यह विचार चल रहा था, तभी ब्रह्माजी वहां प्रकट हुए। ब्रह्माजी बोले—"प्रजापालक पृथु, आपको सौ यज्ञ करके इन्द्र पद तो पाना नहीं है। अतः इस यज्ञ को अब बंद कर दें। देवराज इन्द्र को भी आप क्षमा कर दें।"

ब्रह्माजी की आज्ञा मानकर, पृथु ने यज्ञ की पूर्ण आहुति कर दी। देवराज इन्द्र ने उनसे क्षमा मांगी और संधि कर ली।

महाराज पृथु के निन्यानवे यज्ञों से भगवान विष्णु को बड़ा संतोष हुआ। श्रीहरि ने पृथु को साक्षात दर्शन दिए। श्रीहरि ने पृथु से कहा—"राजन्, जो राजा प्रजा का पालन तो नहीं करता, किंतु उससे कर वसूल करता है, उसका सारा पुण्य प्रजा छीन लेती है। तुम्हारे गुणों ने और स्वभाव ने मुझे वश में कर लिया है। तुम्हें जो इच्छा हो, वर मांग लो।"

पृथु ने श्रीहरि का पूजन किया। फिर श्रीहरि से कहा—"प्रभो, मेरे कान सदा आपकी कथा ही सुनते रहें। मुझे मोह में डालने वाली संसार की वस्तुएं नहीं चाहिएं।"

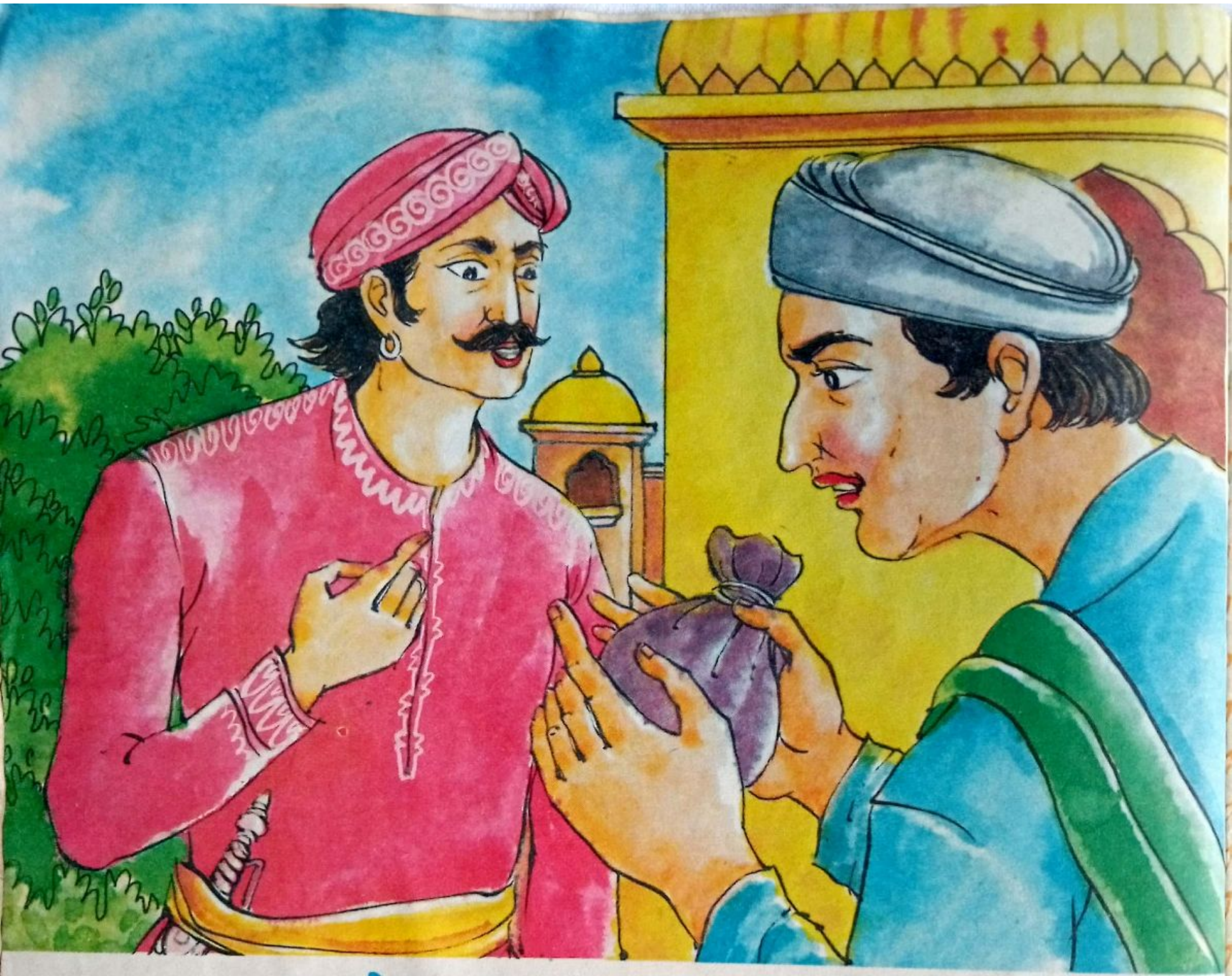
"राजन्, तुम्हारी बुद्धि मुझ में लगी रहे। धर्म का पालन तुम करते रहो।"—यह वरदान देकर श्रीहरि अपने धाम को चले गए।

पृथु सदा ही अपनी प्रजा के कल्याण में लगे रहते। सातों द्वीपों पर उनका शासन था। वह अनेक यज्ञ और पूजन-उत्सव किया करते थे। देवताओं, ब्रह्मर्षियों और राज ऋषियों तथा अतिथियों का भरपूर सत्कार किया करते। अपनी प्रजा को भी धैर्य का पालन करने को हमेशा कहा करते थे। बहुत समय तक पृथु ने राज किया। फिर वह पुत्र को सिंहासन सौंपकर तपोवन को चले गए। ●



ऋषि पंचमी के अवसर पर

## आदि कवि वाल्मीकि



# तब में अब

— कविराज ओमप्रकाश

रामविलास रियासत बेलापुर के बड़े अधिकारी थे।

बेलापुर के राजा जयदेव उन पर बहुत विश्वास करते थे। हर मामले में उनसे राय जरूर लेते थे। रामविलास भी पूरी ईमानदारी और लगन से अपना काम करते थे। लोभ-लालच तो उन्हें छू भी नहीं गया था।

उन दिनों भारत में अंग्रेजों का राज था। यों कहने को जयदेव रियासत बेलापुर के राजा थे। उनका दरबार लगता था। पर असली मालिक तो अंग्रेज थे। रियासत के सारे बड़े मामले अंग्रेजों की बिना मर्जी के तय नहीं होते थे। रामविलास मन ही मन विदेशी शासकों से नफरत करते थे। अंदर ही अंदर आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेते रहते थे।

बेलापुर के बड़े व्यापारी जीवाभाई से रामविलास की अच्छी दोस्ती थी। जीवाभाई का कार-बार खूब बढ़ा-चढ़ा था। कई बार तो उन्होंने जरूरत पड़ने पर जयदेव की सहायता की थी। बाहर किसी को कुछ पता नहीं चला था। अगर कोई तीसरा जानता था, तो बस रामविलास।

एक दिन जीवाभाई रामविलास से मिलने आए। उनके साथ एक व्यक्ति और था। वह था जीवाभाई का एक सम्बंधी लालजी। वह कुछ समय पहले ही बेलापुर में आया था। लालजी बेलापुर में व्यापार करने लगा। रुपए-पैसे की उसके पास कमी नहीं थी।

एक बार लालजी ने रामविलास से कहा— "मैं

रिवाल्वर का लाइसेंस लेना चाहता हूं। रात में इधर-उधर आना-जाना पड़ता है। शायद कभी जरूरत पड़ जाए।''

रामविलास ने कह दिया— ''कल मेरे कार्यालय में आ जाना। काम हो जाएगा।''

अगले दिन लालजी रामविलास के पास गया। पर उसे रिवाल्वर का लाइसेंस न मिल सका। क्योंकि एक दिन पहले ही अंग्रेज रेजीडेंड कमिश्नर और राजा जयदेव के बीच झड़प हो गई थी। कमिश्नर ने राजा से कहा कि वह अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वालों को सहायता दे रहे हैं। बस, बात बढ़ गई। रेजीडेंट कमिश्नर ने शस्त्रागार पर अंग्रेज सिपाहियों का पहरा लगा दिया।

रामविलास मामले को सुलझाने में जुट गए। मामला टेढ़ा था। एक तरफ राजा की प्रतिष्ठा, दूसरी तरफ अंग्रेज कमिश्नर का अहंकार। ऐसे में रामविलास के लिए राजा के स्वाभिमान की रक्षा कठिन हो गई। इसी बीच लालजी बार-बार उनसे लाइसेंस के लिए कहता रहा। वह फिर आने को कह देते।

लालजी समझा, शायद रामविलास उससे लाइसेंस बनाने की रिश्वत लेना चाहते हैं, इसीलिए टालते आ रहे हैं। बस, एक दिन सुबह-सुबह उनके घर जा पहुंचा। जाते ही बोला—''मैं जान गया हूं कि आप मामले को क्यों टालते जा रहे हैं। लाइसेंस दिलाने की भेंट-पूजा चाहते हैं न ! यह लीजिए।'' और उसने सोने की तीन गिन्नियां रामविलास के सामने रख दीं —और एक थैली में कुछ उपहार !

कुछ पल वहां सन्नाटा छाया रहा। रामविलास ने आज तक किसी से एक पैसा रिश्वत नहीं ली थी। उन्होंने कभी सोचा नहीं था कि अपने दोस्त से ही ऐसी बात सुनने को मिलेगी। वह एकदम नाराज हो उठे। फिर भी अपने क्रोध पर काबू पाकर उन्होंने कहा—''लालजी, ये गिन्नियां उठा लो।''

लालजी ने रामविलास की बात को नहीं समझा। बोला—''यह तो आपको लेनी ही होंगी।''

अब तो रामविलास का संयम टूट गया। उन्होंने कड़क कर कहा—''तुम एक राज कर्मचारी को रिश्वत देते हो। तुम्हारी यह मजाल ! तुम्हें इसका दंड मिलेगा।'' उन्होंने उसी समय लालजी की गिरफ्तारी का आदेश दिया। उसे कारागार में भिजवा दिया।

कारागार में लालजी के होश उड़ गए। अब उसे अपनी भूल मालूम हुई। बार-बार पछताने लगा, लेकिन अब क्या हो सकता था !

कुछ देर बाद रामविलास उससे मिलने आए। वह भी मन ही मन दुखी हो रहे थे। सोच रहे थे—'यह मैंने क्रोध में क्या कर डाला ! अब जीवा भाई से क्या कहूंगा ?' उन्होंने लालजी को पूरी स्थिति बता दी कि उसे लाइसेंस क्यों नहीं मिल पा रहा था।

लालजी क्षमा मांगने लगा।

रामविलास ने उसी समय अपनी जमानत पर लालजी को छुड़वा दिया।

लालजी ने हंसकर कहा—''आपने ही सजा दी, फिर क्षमा भी कर दिया। आप धन्य हैं ! मैं सारी बात समझ गया हूं। मेरे मन में आपके लिए सम्मान और भी बढ़ गया है।''

कुछ ही दिनों में स्थिति सामान्य हुई, तो लालजी को रिवाल्वर का लाइसेंस मिल गया। उन दोनों ने जीवा भाई से भी इस सम्बंध में कुछ न कहा।

समय बीतता रहा। अब रामविलास स्वाधीनता आंदोलन में खुलकर भाग लेने लगे थे। खादी पहनते



थे। उनके देश प्रेम की चर्चा राजा के कानों में भी पहुंची। रामविलास के कारण अंग्रेज रेज़िडेंट कमिश्नर राजा को धमकियां देता रहता था।

रामविलास ने देश की स्वाधीनता के लिए लड़ना नहीं छोड़ा। हां, नौकरी अवश्य छोड़ दी, ताकि आंदोलन को पूरा समय दे सकें।

रामविलास का पद जरूर बड़ा था, पर पैसा कभी नहीं रहा उनके पास। सादगी से रहते थे। जो कुछ था, उसे भी साथियों की मदद में लगा दिया। अब दिन बदले और वह पैसे-पैसे को मोहताज हो गए।

ज्यादा दिक्कत हुई, तो नगर छोड़ दिया। बेलापुर से दूर एक गांव में जाकर रहने लगे। वहां पुश्तैनी मकान था—छोटा और खंडहर।

यह सब कुछ लालजी को पता था। वह रामविलास की मदद भी करना चाहता था, लेकिन कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती थी। एक दिन गांव जा पहुंचा। लालजी को देखकर रामविलास खुश हुए। इतने दिनों बाद किसी ने उनसे मिलने का साहस दिखाया था। समय बदलने के साथ उनके सभी मित्र आंखें चुराने लगे थे।

लालजी थोड़ी ही देर में घर की सारी स्थिति समझ गया कि रामविलास का परिवार संकट में दिन बिता रहा है। उसने साहस करके रामविलास से कहा—"सुनो मित्र, मेरे पास धन की कमी नहीं है। मैं चाहता हूं, थोड़ा-सा तुम ले लो। उससे कुछ काम कर लो। जब तुम्हारे पास पैसे हों, तो लौटा देना।"

जैसा लालजी ने सोचा था, रामविलास ने उधार लेने से इंकार कर दिया। इसके बाद उसने रामविलास की पत्नी कमला से बात की। कहा—"अपने लड़के को कोई व्यापार करवा दो। मैं जानता हूं, रामविलास हठी आदमी हैं। वह कभी नहीं लेंगे। आप ही उन्हें समझाइए।"

उस रात कमला रामविलास को देर तक समझाती रही। आखिर वह इस बात पर राजी हो गए कि उनका बेटा लालजी से पैसे लेकर व्यापार करे और फिर जल्दी से जल्दी लौटाने का प्रयास करे।

रामविलास के बेटे ने लालजी की मदद से व्यापार शुरू कर दिया। मेहनत और लगन से काम किया, तो कारोबार चल निकला। घर की स्थिति सुधरने लगी। जैसे ही कुछ रकम जमा हुई, रामविलास लेकर लालजी के पास जा पहुंचे। कहा—"तुम्हारे कारण बेटे का व्यापार चल निकला है। अपनी रकम वापस संभाल लो।"

लालजी ने रुपए लेने से इंकार कर दिया। कहा—"तुम्हारा बेटा मेरा भतीजा भी है। मैं रकम वापस नहीं लूंगा।"

इस पर रामविलास क्रोधित हो उठे। उन्होंने कहा—"तुम अगर नहीं लोगे, तो मैं अभी घर छोड़कर चला जाऊंगा। बेटे से व्यापार बंद करने को कह दूंगा। एक बार फिर तुम मुझे धन देकर झुकाने की कोशिश कर रहे हो। ऐसा कभी नहीं होगा।"

लालजी रामविलास को अच्छी तरह जान गया था। वह समझ गया कि रामविलास जैसा कह रहे हैं, वैसा ही करेंगे। उसने झट रुपए ले लिए। फिर आंखों में आंसू भरकर बोला—"मित्र, आज तुमने मुझे दूसरी बार झुकाया है। वे तीन गिन्नियां अभी तक मेरे पास रखी हैं। मैं जब भी उन्हें देखता हूं, मुझे पुरानी घटना याद आ जाती है।"

रामविलास ने कहा—"लाओ, गिन्नियां मुझे दो।"

लालजी ने गिन्नियां रामविलास का दे दीं। वह लालजी को साथ लेकर पास वाले मंदिर में चले गए। वहां गिन्नियां चुपचाप देव प्रतिमा के चरणों में चढ़ा दीं और बाहर निकल आए। लालजी से कहा—"मित्र, अब हम दोनों के मन पर रखा बोझ उतर गया है। अब मैं आराम से रह सकूंगा।"

अगली सुबह रामविलास ने लालजी से विदा ली, तो वह बोला—"दोस्त, तुमने मुझे दूसरी बार हरा दिया है।"

इस पर रामविलास बोले—"यह तुम्हारी हार नहीं, हम दोनों की जीत है।"

दोनों मित्र विदा हुए, तो हंस रहे थे। ●

# अचूक निशाना

—स्नेह अग्रवाल



मद्र देश के राजा बृहत्सेन थे। उनकी लाड़ली बिटिया का नाम लक्ष्मणा था। देवर्षि नारद का स्वभाव है घुमक्कड़ी करना। वह घूमते-फिरते बृहत्सेन के दरबार में भी आया करते थे। समय-समय पर वहां भगवान की लीलाओं का गान किया करते। उनके अवतार की कथाएं सुनाते। ये कथाएं लक्ष्मणा भी ध्यान से सुना करती। वह सोचा करती—'लक्ष्मीजी ने सारे लोकपालों को छोड़कर, भगवान का ही वरण किया। क्या मैं वैसा नहीं कर सकती ?'

लक्ष्मणा का चित्त भगवान की भक्ति में लगने लगा। वह जाप तथा पूजा-पाठ नियम से किया करती। मन ही मन उसने भगवान को ही अपना सब कुछ मान लिया।

बृहत्सेन अपनी बेटी को बहुत चाहते थे। लक्ष्मणा बड़ी हो गई थी। उन्होंने लक्ष्मणा के लिए स्वयंवर करने का निश्चय किया। द्रौपदी के विवाह में अनोखा स्वयंवर हुआ था। उसमें एक मछली ऊपर लटकाई गई थी। उसकी परछाईं देखकर ही उस पर निशाना लगाना था। लक्ष्मणा के स्वयंवर में भी मछली भेदन की शर्त रखी गई थी। लेकिन कृत्रिम मछली को इस प्रकार ढक दिया गया था कि वह चारों ओर से दिखाई नहीं देती थी। नीचे रखे जल में उसकी परछाईं पड़ रही थी। उसे देखकर ही, बाण चलाकर मछली को बेधना था। पास में ही धनुष और बाण रखे हुए थे।

स्वयंवर का समाचार अलग-अलग राजाओं को मिला। सब दिशाओं से सैकड़ों राजा वहां आने लगे। अस्त्र-शस्त्रों के चालन में कुशल राजा-महाराजा बृहत्सेन की राजधानी में पहुंचते। बृहत्सेन सभी अतिथियों का उचित स्वागत करते। उनके ठहरने और खान-पान की ठीक व्यवस्था करते।

राजाओं ने स्वयंवर सभा में रखे हुए धनुष और बाण उठा-उठाकर देखे। कितने ही राजा तो धनुष पर तांत भी न चढ़ा सके। उन्होंने धनुष की डोरी को एक सिरे से बांधकर, दूसरे सिरे तक खींच लिया, किंतु वे उसे दूसरे सिरे से बांधने में सफल नहीं हुए। उसका झटका लगने से गिर पड़ते। यह देख, अन्य लोग अपनी हंसी न रोक पाते।

बड़े-बड़े नामी वीर यथा जरासंध, अम्बष्ठ नरेश, शिशुपाल, भीमसेन, दुर्योधन और कर्ण जैसे धनुर्धरों ने



धनुष पर डोरी चढ़ा ली, लेकिन उन्हें मछली की स्थिति का सही पता न लग पाया। पांडव वीर अर्जुन ने जल में उस मछली की परछाईं देख ली। अर्जुन ने यह भी जान लिया कि वह कहां है ? बड़ी सावधानी से उन्होंने बाण छोड़ा भी , परंतु उससे लक्ष्यवेध न हो सका। उनका बाण मछली को छूता हुआ निकल गया।

यह देखकर सभी राजा-महाराजा बड़े हैरान थे। बड़े-बड़े अभिमानियों का मान-मर्दन हो गया था। अधिकतर राजाओं ने लक्ष्मणा को पाने की लालसा और लक्ष्यवेध की कोशिश छोड़ दी।

अर्जुन जैसे प्रसिद्ध धनुर्धारी के असफल हो जाने पर सभी कहने लगे कि बृहत्सेन की बेटी को योग्य वर नहीं मिलेगा। या फिर उन्हें अपनी शर्त बदलनी पड़ेगी।

स्वयंवर में श्रीकृष्ण भी आए हुए थे। वह अपनी जगह से उठे। धीरे से चलकर धनुष के निकट जा पहुंचे। खेल-खेल में धनुष पर डोरी चढ़ा दी, बाण साधा। जल में केवल एक बार मछली की परछाईं देखकर, बाण मारा और उसे नीचे गिरा दिया। श्रीकृष्ण के अचूक निशाने को देखकर, रंगशाला में उपस्थित लोग 'वाह-वाह' कर उठे।

ठीक दोपहर का समय था। शुभ मुहूर्त था। चारों दिशाओं में जय-जयकार होने लगी। देवता आकाश से पुष्प वर्षा करने लगे। तभी लक्ष्मणा ने रंगशाला में प्रवेश किया। सुंदर रेशमी वस्त्रों में सजी हुई, वह धीरे-धीरे बढ़ रही थी। सभी शांत हो गए थे। केवल पैरों की पाजेब की रुनझुन-रुनझुन सुनाई दे रही थी।

लक्ष्मणा ने अपना मुख तनिक उठाया। तिरछी चितवन से चारों ओर बैठे हुए राजाओं पर निगाह डाली। उसके हाथों में रत्नों का हार था जो बीच-बीच में सोने से मढ़ा था। इसलिए वह हार खूब दमक रहा था। उसने वह हार धीरे-से भगवान श्रीकृष्ण के गले में पहना दिया। ज्यों ही वरमाला पहनाई, शंख बज उठे। तभी मृदंग, पखावज, ढोल, नगाड़े आदि भी बजने लगे। नट और नर्तकियां नाचने लगे। गवैये मंगल गान गाने लगे।

लक्ष्मणा ने श्रीकृष्ण का वरण कर लिया, तो अनेक राजा चिढ़ गए। वे फब्तियां कसने लगे और युद्ध के लिए ललकारने लगे। यह देख, भगवान श्रीकृष्ण ने लक्ष्मणा को चार घोड़ों वाले रथ पर चढ़ा लिया। उन्होंने कवच पहन लिया। हाथ में शार्ङ्ग धनुष ले लिया।

श्रीकृष्ण युद्ध करने के लिए रथ पर खड़े हो गए। लेकिन तभी दारुक ने सोने के साज-सामान से लदे रथ को द्वारका के लिए हांक दिया। उस समय लगा मानो हरिणों के बीच से कोई सिंह निकल गया हो।

कुछ राजाओं ने श्रीकृष्ण के रथ का पीछा किया। निशाना साध-साधकर वे बाण छोड़ने लगे। लेकिन श्रीकृष्ण को भला वे क्या रोक पाते ! धनुर्विद्या में श्रीकृष्ण की बराबरी कौन कर सकता था। उन्हें उत्तर देने के लिए श्रीकृष्ण ने भी धनुष से बाण छोड़े। वे राजा घायल हो-होकर वहीं धूल चाटने लगे।

श्रीकृष्ण ने लक्ष्मणा के साथ द्वारका में प्रवेश किया। यह समाचार तो द्वारका में पहले ही पहुंच चुका था। द्वारका को खूब सजाया गया था। अनगिनत झंडियां, पताकाएं और तोरण लगाए गए थे। नगर के मुख्य द्वार पर हाथी झूम रहे थे। द्वारका के मार्गों पर स्त्री-पुरुष और बच्चों की भारी भीड़ थी। लक्ष्मणा महल में पहुंची। वहां भी उसका बहुत स्वागत हुआ। उसे पटरानी का मान-सम्मान दिया गया।



# उड़ा तोता

—अपर्णा ठाकुर

एक थे राजा भूपेंद्र । बहुत नेक और बहादुर । सारी प्रजा उनसे खुश थी । वह भी अपनी प्रजा का हमेशा ख्याल रखते थे । बस,एक ही कमी थी कि राजा निःसंतान थे । इस कारण रानी भी अक्सर उदास रहती थी । वह रोज भगवान की पूजा करती और अपने लिए संतान मांगती । आखिर भगवान ने उसकी पुकार सुन ली । रानी ने एक सुंदर पुत्री को जन्म दिया । राजा के पास जब यह खबर पहुंची, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा ।

नवजात राजकुमारी का नाम सोमवती रखा गया । वह धीरे-धीरे बड़ी होने लगी । उसकी सुंदरता भी निखरने लगी । वह थी तो बहुत नेक दिल, लेकिन माता-पिता के लाड़-प्यार ने उसे बहुत जिद्दी बना दिया था । एक दिन राजकुमारी सोमवती अपनी सहेलियों के साथ घूमने निकली । जंगल के किनारे, उसकी नजर एक सुंदर तोते पर पड़ी । तोता कम ऊंचाई के एक पेड़ पर बैठा हुआ था । राजकुमारी उस तोते को पकड़ने के लिए जैसे ही लपकी, तोता फुर्र से उड़ गया और जंगल में खो गया ।

सोमवती राजमहल लौट आई । अपने कमरे में उदास और खामोश होकर, घंटों चुपचाप लेटी रही । उसने खाना-पीना भी त्याग दिया । महल की दासियों ने यह खबर राजा और रानी तक पहुंचाई, तो वे दोनों अपनी बेटी को देखने दौड़ पड़े । राजा ने सोमवती से पूछा— "आखिर तुम्हें हुआ क्या है ? तुमने अपनी यह दशा क्यों बना ली है ?" राजकुमारी ने बताया कि एक सुनहरे रंग का तोता उसकी पकड़ में नहीं आया । वह पूरब दिशा के जंगल की ओर उड़ गया । इसलिए जब तक वह तोता उसे लाकर नहीं दिया जाएगा, तब तक वह न कुछ खाएगी और न पिएगी ।

राजकुमारी की इस जिद से, राजा और रानी दोनों परेशान हो उठे । जिस जंगल की ओर तोता उड़ा था, वह बहुत ही भयानक था । वहां से तोता पकड़कर लाना असम्भव था । राजा-रानी यह सोचकर चिंतित हो रहे थे । आखिरकार उन्होंने पूरे राज्य में मुनादी करवा दी— 'उस जंगल से जो व्यक्ति सुनहरे रंग का तोता पकड़कर ला देगा, उसे बतौर इनाम, अच्छी-खासी रकम दी जाएगी ।' यह सुनकर, कई युवकों के मन तो ललचाने लगे, लेकिन खतरनाक जंगल से तोता पकड़कर लाने की हिम्मत उनमें से कोई नहीं जुटा सका ।

उसी राज्य में एक गरीब लड़का था— रामचंद्र । वह बहुत दुखी रहा करता था । उसकी मां लम्बे समय से बीमार थी । उसके पास अपनी मां के इलाज के लिए पैसे नहीं थे । रामचंद्र ने जब यह मुनादी सुनी, तो वह इनाम की खातिर, अपनी जान जोखिम में डालकर भी तोता पकड़ने के लिए तैयार हो गया । राजा के पास जाकर उसने कहा— "महाराज, मैं एक शर्त पर सुनहरा तोता ले आने को तैयार हूं । शर्त यह है कि अगर मैं जंगल में मारा गया, तो भी आप मेरी बीमार मां का इलाज करा देंगे और उसकी देखभाल का इंतजाम करेंगे ।"

राजा ने रामचंद्र की शर्त मान ली । गरीब रामचंद्र अपनी मां की खातिर, एक जोखिम भरे अभियान पर निकल पड़ा ।

उसी शाम रामचंद्र ने ज़ंगल की राह पकड़ी । हथियार के नाम पर, उसने तीर-धनुष साथ ले लिए थे । उस पर जैसे यही धुन सवार थी कि हर हालत में तोते को पकड़कर, राजकुमारी को सौंप देना है । उसके भीतर गजब का साहस भर गया था । हालांकि वह शरीर से कमजोर दिखता था, लेकिन उसके हौसले

बहुत बुलंद थे।

जब वह घने जंगल में घुसा, तो एक से बढ़कर एक खूंखार जानवरों से उसका पाला पड़ा। एक बार तो वह बब्बर शेर के चंगुल में आते-आते बचा। रामचंद्र की नजर जंगल के पात-पात पर, सुनहरे तोते को तलाश रही थी। उसे लगता था कि तोते के साथ उसकी मां की जिंदगी जुड़ी है, इसलिए अगर मां चाहिए, तो सुनहरा तोता खोज निकालना ही होगा।

इतने में उसकी आंखों के सामने एक सुनहरा तोता आकर मंडराने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे तोते को भी रामचंद्र की ही तलाश थी। रामचंद्र की खुशी का ठिकाना न रहा। तोता आगे-आगे उड़ता जा रहा था और रामचंद्र उसके पीछे तीर-धनुष ताने हुए दौड़ रहा था। तोता एक निश्चित दिशा की ओर उड़ रहा था। वह अपने को रामचंद्र की आंखों से ओझल भी नहीं होने दे रहा था।

थोड़ी ही देर बाद, रामचंद्र ने देखा कि सुनहरा तोता एक विशाल पेड़ की फुनगी पर जाकर बैठ गया है। तोता उसकी ओर देख रहा था। रामचंद्र ने उसी समय तीर चलाकर, तोते को घायल कर दिया। तोता जमीन पर आ गिरा। उसके शरीर से खून बह रहा था। रामचंद्र को जिंदा तोता पकड़कर राजकुमारी के पास ले जाना था, इसलिए उसने तोते के शरीर से फौरन तीर निकाला। मरहम-पट्टी की और उसी विशाल पेड़ का एक पत्ता तोड़ा। पत्ते पर पेड़ का दूधनुमा रस डालकर, उससे तोते के घाव पर पट्टी की तरह बांध दिया। इतना करते ही तोते की जगह एक खूबसूरत राजकुमार प्रकट हो गया।

राजकुमार को देखकर, रामचंद्र हैरत में पड़ गया। राजकुमार ने कहा— "इस चमत्कार के पीछे एक करुण कथा है। मैं चंद्रनगर का राजकुमार अंशुल हूं। मैंने एक बार शिकार खेलते समय, एक सुनहरे तोते का वध कर दिया था। वह तोता तीर से घायल होकर, एक तपस्वी की गोद में जा गिरा था। तपस्वी ने नाराज होकर शाप दिया कि जिस तरह तुमने इस तोते को मार गिराया है, उसी तरह तुम्हें भी कोई मार गिराएगा। आज से तुम सुनहरे तोते की शक्ल में रहोगे। मेरे बहुत गिड़गिड़ाने पर तपस्वी ने मेरी मुक्ति का रास्ता बताया। उन्होंने कहा कि जब कोई गरीब आदमी किसी मजबूरी में तुम्हें पकड़ने के लिए, घायल करेगा और सोनरस नामक महावृक्ष का रस लगाकर तुम्हें बचाना चाहेगा, तभी तुम अपने असली रूप में आ सकोगे।"

रामचंद्र फटी-फटी आंखों से राजकुमार अंशुल की तरफ देख रहा था। अंशुल ने फिर कहा— "मैं जानता हूं कि राजकुमारी सोमवती बेहद जिद्दी है, इसलिए मैं उसके सामने उड़कर गया था, ताकि वह मुझे पाने के लिए किसी को मेरे पीछे लगाए। चूंकि मुझे इसी महावृक्ष के पास मुक्ति मिल सकती थी, इसलिए मैंने खुद आपको यहां तक लाने का प्रयास किया। साथ ही मुझे यह भी पता था कि कोई जरूरतमंद इंसान ही अपनी जान जोखिम में डालकर, इस जंगल में आ सकता है।"

इस कहानी को सुनकर, रामचंद्र अचंभित तो था ही, अचानक वह उदास हो गया। उसने राजकुमार अंशुल से कहा कि अब राजकुमारी सोमवती के पास वह कौन-सा सुनहरा तोता ले जाएगा ? उसकी मां का इलाज कैसे सम्भव होगा ? इस पर राजकुमार अंशुल ने कहा— "मैं स्वयं चलकर राजकुमारी को पूरी कहानी सुनाऊंगा और उनसे विवाह का प्रस्ताव भी रखूंगा।"

इस तरह रामचंद्र और राजकुमार अंशुल, दोनों राजकुमारी सोमवती के पास पहुंचे। अंशुल ने उन्हें आपबीती सुनाई। अंशुल की कहानी सुनकर, राजकुमारी समेत राजा-रानी के भी हृदय द्रवित हो उठे। अंशुल ने जब सोमवती से विवाह का प्रस्ताव किया, तो वे खुशी-खुशी राजी हो गए। राजा ने रामचंद्र को अपने दरबार में ही नौकरी दे दी। इनाम की राशि से रामचंद्र की मां का इलाज कराया गया। रामचंद्र और राजकुमार अंशुल दोनों मित्र बन गए। दोनों हर समय गरीबों की मदद करने के लिए तैयार रहते। ●

# भूखी गुड़िया



सुबह हो गई, क्या-क्या खाया ?
चाय-वाय के संग क्या पाया ?
अरे, कुछ नहीं कुछ तो खाती ।
डांट-डपट खा, चुगली खाती ।
भूखी गुड़िया, सूखी गुड़िया, रूखी गुड़िया !



मार खा चुकी, ताव खा चुकी,
जान खा चुकी, दांव खा चुकी
समय कई लोगों का खाया ।
फिर दिमाग खा, खूब पचाया ।
गुमसुम गुड़िया, भूखी बुढ़िया, बढ़िया गुड़िया



मेरे संग चल, गेंद खिलाऊं?
बाहर चलकर 'हवा खिलाऊं ।
बातों-बातों मजा चखाऊं,
दांत दिखाऊं, आंख दिखाऊं ।
रूठी गुड़िया, भूखी गुड़िया, प्यारी गुड़िया ।

—डा. राष्ट्रबंधु

# सभी पास हो जाते

यदि मैं कहीं मिनिस्टर होता
ऐसा नियम बनाता,
सभी पास हो जाते, कोई
फेल न होने पाता !
बिना परीक्षा के ही सबको
पास कराया करता,
रट्टू तोते टापा करते,
उन्हें चिढ़ाया करता ।
अट्ठारह दिन छुट्टी रहती
बारह रोज पढ़ाई,
मौज-मजा मस्ती की बदली
रहती हर दिन छाई ।
बच्चो, हरगिज चूक न जाना
कसकर जोर लगाना,
जैसे हो, इस बार मिनिस्टर
मुझको ही बनवाना ।

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

# नहीं खिलौने

घटती जाती दिन-दिन ताकत जेबों की,
घर पर आती नहीं टोकरी सेबों की ।
लगता है, महंगाई हमसे लेगी छीन,
चाकलेट, टाफी, बिसकुट, मीठे-नमकीन ।
आइसक्रीम खाना भी कम हो जाएगा,
फीका गरमी का मौसम हो जाएगा ।
नहीं खिलौने मिल पाएंगे मनचाहे,
सपनों पर भी अंकुश होंगे अनचाहे ।
एक-एक करके होती जाएंगी बंद,
वे चीजें जो बच्चों को हैं बड़ी पसंद ।
यही देखकर है अपना माथा ठनका,
मजा खत्म हो न जाए सारा बचपन का ?

— दिनेश दधीचि

# एक चपाती



ताती-ताती, एक चपाती,
दिखी तवे पर पेट फुलाती ।
बिल्ली मौसी बोली—'म्याऊं
भूख लगी, मैं तुझको खाऊं
सुनकर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आंखें मटकाती—
'मौसी, पहले मक्खन ला ।
फिर चाहे मुझको खा जा ।'

देख चपाती के ठनगन,
बिल्ली ले आई मक्खन ।
गुर्राकर फिर बोली—'म्याऊं !
अब तो मैं तुझको खा जाऊं ?'
सुनकर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आंखें मटकाती—
'हां, हां, पहले गुड़ तो ला ।
फिर चाहे मुझको खा जा ।'



बिल्ली चल दी गुड़ लाने,
लगी लौटकर झुंझलाने,
म्याऊं ! म्याऊं ! म्याऊं ! म्याऊं !
अब मैं खाऊं ! अब मैं खाऊं !
मन ही मन में डरी चपाती ।
चिढ़कर बोली—'खा नकटी' !
बिल्ली जल्दी से झपटी ।
खा ली चप-चप चप्प चपाती ।
हप्प चपाती ! गप्प चपाती ।

—रमेश तैलंग

# नारद ने कहा

—हंसा चन्दन

एक बार नारद जी मृत्यु लोक में घूम-फिरकर, विष्णु लोक की ओर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें सप्त ऋषियों के दर्शन हुए। सप्त ऋषियों ने पूछा—"देवर्षि, कहां-कहां भ्रमण करके आ रहे हैं और इस समय कहां जा रहे हैं ?"

उनकी बात सुनकर नारद जी ने मुसकराते हुए कहा—"महर्षिगण, आप तो जानते ही हैं कि नारद का काम तो दूसरों का उपकार करना है। मैं मृत्यु लोक से आ रहा हूं। वहां मैंने भगवान विष्णु के बहुत-से भक्त देखे हैं। एक भक्त तो ऐसा देखा, जिसने भगवान विष्णु के नाम पर कई मंदिर, धर्मशालाएं तथा अन्य कई धार्मिक स्थलों का निर्माण कराया है। उसके घर में चौबीसों घंटे भगवान के नाम का पूजा-पाठ चलता रहता है। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ, भगवान का उस भक्त की ओर ध्यान ही नहीं जाता। आप ही बताएं, ऐसे भक्त को तो भगवान को दर्शन देने ही चाहिएं।" इतना कहकर नारद जी वीणा बजाते हुए आगे बढ़ गए।

इसके बाद वह भगवान विष्णु के पास पहुंचे। नारद जी को देखते ही भगवान विष्णु ने बड़े आदर-सत्कार के साथ उन्हें बैठाया और पूछा—"आइए देवर्षि नारद, कहिए कहां से आ रहे हैं ?"

नारद जी बोले—"प्रभु, मैं मृत्यु लोक से आ रहा हूं। यदि आप आज्ञा दें, तो कुछ निवेदन करूं ?"

भगवान विष्णु बोले—"हां-हां, कहिए क्या बात है ?"

नारद जी ने कहा—"भगवन, आप तीन लोक के स्वामी हैं। अपने भक्तों की पुकार भी सुनें। वे आपके दर्शन पाने के लिए क्या कुछ नहीं करते, किंतु उन बेचारों को फिर भी आपके दर्शन नहीं मिल पाते।"

भगवान विष्णु बोले— "नारद जी, आप यह क्या कह रहे हैं? मैं तो सदा से अपने भक्तों के अधीन हूं।"

नारद जी ने कहा—"प्रभु, आज मैं आपके एक भक्त के पास से आ रहा हूं। वह बड़ी भक्ति करता है आपकी। कृपा करके आप उसे दर्शन अवश्य दें।"

—"किसके बारे में कह रहे हो ?" भगवान ने पूछा, तो नारद ने कहा—"अंवतिकापुरी में वीरवर्धन नामक एक सेठ है। मैं अभी उसी से मिलकर आ रहा हूं। उसकी भक्ति भावना देखकर ही मैंने निश्चय किया है कि आपसे प्रार्थना करूं कि आप उसे अवश्य दर्शन दें।"

भगवान विष्णु कहने लगे—"नारद; मैं जानता हूं कि वह मेरी कैसी भक्ति करता है। वह अभी मेरे दर्शन पाने का अधिकारी नहीं है। जिस दिन वह अपने मन से मेरे दर्शन पाना चाहेगा, मैं उसे अवश्य दर्शन दूंगा।"

नारद जी के बार-बार आग्रह करने पर भगवान विष्णु सेठ के पास जाने को तैयार हो गए। उन्होंने कहा—"अच्छा नारद जी, आप नहीं मानते, तो मैं बूढ़े ब्राह्मण के रूप में सेठ की हवेली के मुख्य द्वार पर जाकर उसे दर्शन देने का प्रयास करता हूं।"

इतना कहकर भगवान बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर, सेठ की हवेली के द्वार पर पहुंचे। द्वारपाल से जाकर कहा—"मैं सेठ से मिलने आया हूं। उनसे जाकर कहो कि भगवान एक ब्राह्मण के रूप में आपसे मिलने आए हैं।" बूढ़े ब्राह्मण को देखकर पहले तो द्वारपाल अंदर जाने को तैयार नहीं हुआ। परंतु ब्राह्मण के बार-बार कहने पर वह सेठ के पास गया और जाकर सेठ को सूचना दी। सुनकर सेठ ने क्रोध में आकर द्वारपाल को डांटते हुए कहा—"देखते नहीं, मैं काम में कितना व्यस्त हूं। भला कहीं भगवान यूं आते हैं ? जाकर मुनीम से कहो कि उस ब्राह्मण को कुछ दक्षिणा देकर विदा करें।"

और वही हुआ। ब्राह्मण के वेश में आए भगवान को हवेली के द्वार से ही वापस जाना पड़ा। भगवान विष्णु ने वापस जाकर नारद जी को सारी बात बताई। नारद जी बोले—"प्रभु, सेठ ने आपको ठीक से नहीं पहचाना। आप कोई अच्छा-सा रूप धारण करके वहां जाएं।"

भगवान बोले—"ठीक है, तुम नहीं मानते तो मैं फिर जाता हूं।" भगवान एक योगी के वेश में से की हवेली के द्वार पर पहुंचे। जाकर द्वारपालों से कहा—"जाओ, अपने सेठ से कहो कि हिमालय के महान योगी आपको दर्शन देने आए हैं।" द्वारपाल ने सेठ को योगी के आने की सूचना दी, तो सुनकर सेठ भड़क उठा। बोला—"अरे मूर्खो, तुम लोग उसके चक्कर में आकर मुझे परेशान कर रहे हो! जरा अक्ल से काम लो। सोचो कि हिमालय का तपस्वी यहां क्यों आएगा? निश्चय ही वह कोई पाखंडी होगा। लो, ये दो मुद्राएं उसे देकर विदा कर दो।"

और फिर भगवान विष्णु सेठ के द्वार से वापस विष्णु लोक पहुंचे। नारद जी को सारी बात बता दी। मगर नारद जी अपनी जिद पर अड़े रहे। उन्होंने फिर भगवान से कहा—"प्रभु, एक अवसर उस भक्त को और दे दो। साथ ही मेरा अनुरोध है कि इस बार आप अपने वास्तविक रूप में ही उसे दर्शन देने जाएं।"

भगवान बोले—"ठीक है, मैं तो भक्तों के अधीन हूं। इस बार मैं अपने असली रूप में ही जाऊंगा।"

इसके बाद भगवान अपने असली रूप में शंख, चक्र धारण करके सेठ की हवेली के द्वार पर पहुंचे। द्वारपाल से कहा—"देखते क्या हो, अपने सेठ से कहो कि स्वयं भगवान दर्शन देने पधारे हैं।" इस बार दौड़ते हुए द्वारपाल ने सेठ के पास जाकर कहा—"मालिक, द्वार पर भगवान विष्णु स्वयं पधारे हैं, जल्दी चलिए।"

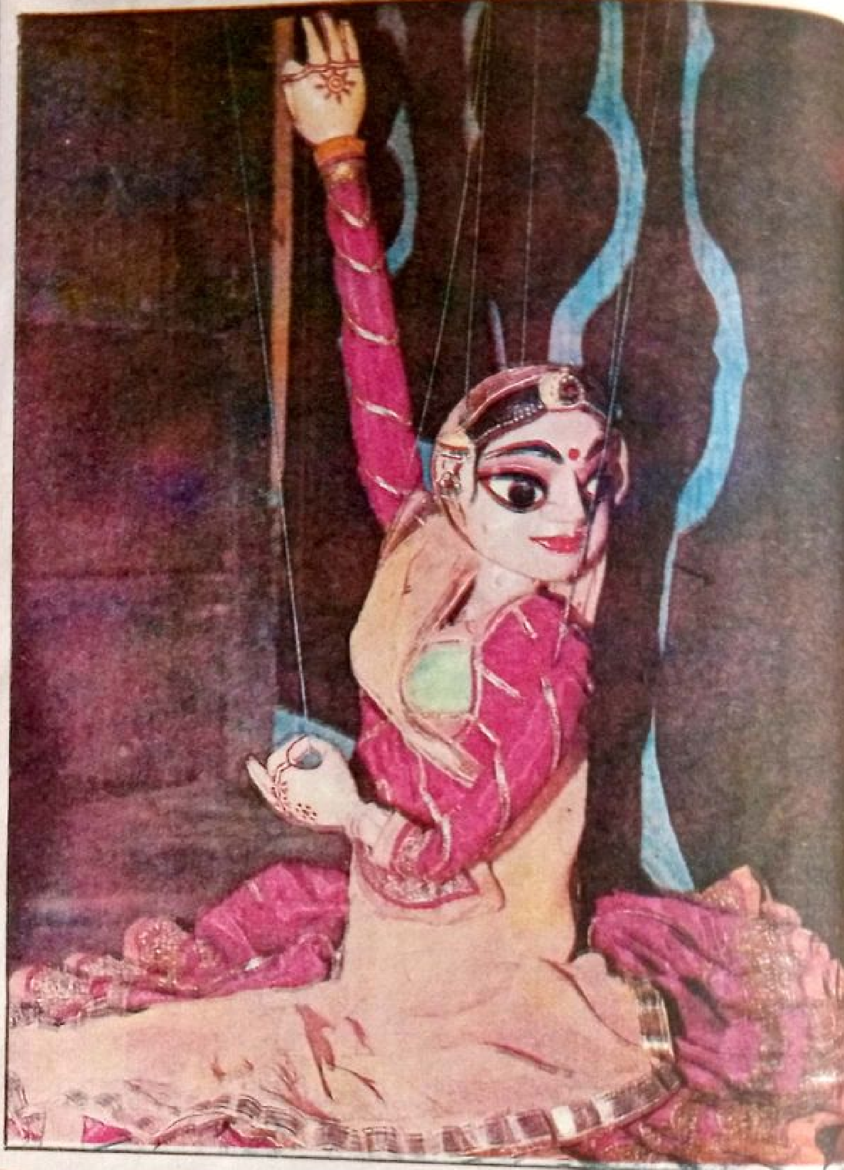
उस समय सेठ दिन का भोजन कर रहा था। उसने द्वारपाल से चीखते हुए कहा—"तुम लोग इतना भी नहीं जानते कि भगवान विष्णु इस तरह किसी के द्वार पर नहीं आते। उन्हें पाने के लिए तो बड़ी तपस्या करनी पड़ती है। अवश्य ही वह कोई बहरूपिया है, जो भगवान का रूप बनाकर आया है। जाओ, मुझे तंग न करो। मुझे ऐसे किसी भगवान के दर्शन नहीं करने हैं।"

और फिर तीसरी बार दर्शन देने आए भगवान को उलटे पैरों बैकुंठ लोक लौटना पड़ा। इस बार नारद जी भी उदास थे। भगवान विष्णु ने नारद जी से कहा—"नारद जी! मैंने पहले ही कहा था, जो व्यक्ति मेरी भक्ति मन से नहीं करता, उसे मेरे दर्शन नहीं होते।"

नारद जी ने अपनी हार मानते हुए भगवान विष्णु के चरण पकड़ लिए। बोले—"भगवन, आपकी माया अपरम्पार है। सचमुच जो सच्ची भक्ति नहीं करता, वह आपका दर्शन कैसे पा सकता है!" ●







# धागे नाच नचाएं मन बहलाएं

↑ छम-छम, छम-छम नाचे पुतली



राजा जी सुख पाते
←

रानी जीं शाबासी देतीं ↓





मंत्री जी मुसकाते ↑

तभी संपेरे ने आकर
जो काला नाग दिखाया ↓



उठकर भागे सभी
जिधर भी जिसका सींग समाया ↓



चित्र : राजेन्द्र कुमार बथवा, प्रदीप सोनी



# कूम लौट आया

—विलिस लिंक्रिस्ट

घना जंगल, उस पर अंधेरी रात। सब डरे हुए थे, पर हाजी खुश था। उसने सुना था—माजा कूम मरा नहीं था। कुछ दिन पहले ही जंगली हाथियों के एक झुंड के साथ देखा गया था। माजा कूम एक विशालकाय हाथी था, जो कई वर्ष पहले पागल होकर न जाने कहां चला गया था।

माजा कूम और हाजी दोस्त थे। हाजी के पिता उसके महावत थे। हाजी निडर होकर माजा कूम की पीठ पर सवारी करता था। उसके साथ खिलवाड़ करता था। वैसे गुस्सैल माजा कूम किसी और को अपने पास फटकने भी नहीं देता था।

एक बार हाजी के पिता पेड़ गिरने से घायल हो गए थे। इसीलिए उन्हें हाजी के साथ उनके गांव भेज दिया गया था। उनके चले जाने से माजा कूम बिगड़कर कैम्प से भाग गया। जंगल में इधर-उधर घूमने लगा। फिर उसे कोई वापस नहीं ला सका। वह दूसरे जंगली हाथियों के साथ खेत और बस्तियां उजाड़ता हुआ घूमता रहता।

जंगल में जेनसन नामक अंग्रेज का शिविर था। वह लकड़ी का व्यापारी था। उसके नौकर बड़े-बड़े पेड़ काटते, जिन्हें हाथी खींचकर नदी तक ले जाते। माजा कूम भी भाग जाने से पहले यही काम किया करता था। अब उसी माजा कूम के कारण जेनसन का

काम ठप हो गया था । माजा कूम के डर से कोई जंगल में ठहरना ही नहीं चाहता था ।

माजा कूम को पकड़ने के प्रयास में जेनसन के दो महावत जान से हाथ धो बैठे । सब इस बात को समझ गए थे, जब तक माजा कूम को नहीं पकड़ा जाएगा, जंगल में कोई काम नहीं हो सकता । किसी ने जेनसन से कहा कि हाजी को उसके गांव से बुला लिया जाए । वह शायद माजा कूम को पकड़ सके ।

हाजी को गांव से शिविर में बुलवाया गया । लेकिन उसे देखकर जेनसन गुस्से से भर उठा । उसने कहा— "यह क्या मजाक है ! यह तो १२-१३ साल का दुबला-पतला लड़का है । यह भला कैसे पकड़ेगा उस शैतान को ?" और उसने हाजी को अपने शिविर से बाहर निकाल दिया ।

इससे हाजी बेहद निराश हो गया । तभी महावतों के सरदार ओ यान ने उससे कहा— "हाजी, तुम्हें जेनसन को अपना कमाल दिखाना होगा । हमारे शिविर में एक हथिनी है सी पो । वह घने जंगल में दूर गई हुई है । सुबह तुम सी पो की खोज में जाना और उसे अपने साथ लेकर आना । इससे जेनसन को पता चल जाएगा कि तुम उतने छोटे और कमजोर नहीं हो, जितना वह समझता है । तब शायद वह तुम्हें माजा कूम की खोज में भेजने को तैयार हो जाए ।"

उस रात हाजी ठीक तरह सो न सका । मन में रह-रहकर एक ही बात उठ रही थी— 'क्या मैं कभी माजा कूम को वापस ला सकूंगा ?'

अभी दिन ठीक से उगा नहीं था । हाजी घने वन में आगे चल दिया । माजा कूम से पहले उसे सी पो को लेकर आना था । तभी जेनसन से माजा कूम की खोज में जाने की अनुमति मिल सकती थी । जंगल में अनेक हाथी घूम रहे थे, पर हाजी ने सी पो के पैरों के निशान पहचान लिए और उसी दिशा में बढ़ चला ।

आगे ऊंची घास का मैदान था । तभी हाजी रुक गया । उसे एक बाघ के पंजों के निशान दिखाई दिए । वहीं कुछ खून के छींटे भी थे । इसका मतलब था कि पास में ही कोई घायल बाघ भी मौजूद था । वह मन ही मन कांप उठा । घायल बाघ बहुत खतरनाक होता है । वह कहीं और किसी पर भी हमला बोल सकता है । कहीं ऐसा तो नहीं कि घायल बाघ सी पो का पीछा कर रहा हो । ऐसा हुआ, तो बहुत ही गड़बड़ हो जाएगी ।

पर अब डरने से भी कुछ नहीं होगा, यह जानता था हाजी । उस घने जंगल में उसे अकेले ही एक घायल बाघ से टक्कर लेनी थी और सी पो को सुरक्षित शिविर में ले जाना था ।

कुछ दूर ऊंची घास में उसे सी पो के गले से बंधी घंटियों की आवाज सुनाई दी और वह रुक गया । हथिनी मजे से घास खा रही थी । उसे घायल बाघ के खतरे का कोई आभास नहीं था । हाजी उसे बाघ से खबरदार करना चाहता था, लेकिन कैसे ! वह ऊंची, घनी घास में स्वयं जाना नहीं चाहता था, क्योंकि वहां बाघ भी छिपा हो सकता था ।

थोड़ी देर बाद घास सरसराई और हाजी ने एक बाघ को चुपचाप बढ़ते हुए देखा । बाघ सी पो पर घात लगाकर हमला करने वाला था । अब तो सी पो को सावधान करना ही था । उसने धीरे-धीरे सी पो को पुकारा, तो वह घास खाना छोड़कर, बाहर खुले में चली आई और हाजी से थोड़ी दूरी पर रुक गई । हथिनी को बाघ के बारे में अब तक कुछ पता नहीं था ।

हाजी ने सी पो को नीचे झुकने का आदेश दिया । वह झुक गई और हाजी उसकी पीठ पर चढ़ गया । तभी जोर से गुर्राकर एक बाघ सी पो की पीठ पर



कूदा। सी पो घबराकर मुड़ी, तो हाजी उसकी पीठ से दूर जा गिरा और बेहोश हो गया।

हाजी को होश आ गया। सब तरफ सन्नाटा था। बस, ऊंची घास तेज हवा में सरसरा रही थी। वह झटके से उठा और इधर-उधर देखने लगा। सी पो कहां है ? और बाघ ? उसका क्या हुआ ? थोड़ी दूर पर बाघ उसे जमीन पर पड़ा मिला। वह मर गया था। देखने से साफ पता चलता था कि सी पो ने उसे पैर से कुचलकर मार डाला था।

हाजी अंधेरा होने तक वन में सी पो को ढूंढ़ता रहा, पर उसका कहीं पता न चला। आखिर वह थका-हारा शिविर की ओर लौट चला।

रास्ते में उसने एक पोखर के किनारे विशालकाय हाथी को खड़े देखा। वह रुक गया। हाजी उसे पहचान गया। वह माजा कूम था। उसका खोया हुआ दोस्त, जिसे सब पागल हाथी कहने लगे थे।

हाजी ने माजा कूम को कई बार पुकारा। फिर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। तभी माजा कूम सूंड उठाकर चिंघाड़ उठा और जंगल में गायब हो गया।

हाजी के लिए यह दूसरी चोट थी। उसे पूरी आशा थी कि माजा कूम उसे भूला न होगा। कुछ देर निराश वहीं पोखर के किनारे बैठा रहा, फिर शिविर में जा पहुंचा। उसे देखते ही ओ यान् ने सी पो के बारे में पूछा। हाजी ने सब कुछ सच-सच बता दिया। यह भी कहा कि उसने माजा कूम को देखा था।

ओ यान गुस्से में भड़क उठा। उसने कहा— "मैंने तुम पर भरोसा करके गलती की। हम सी पो को कभी नहीं पा सकेंगे। यह सब तुम्हारी गलती से हुआ। अब हम तुम्हें शिविर में नहीं रख सकेंगे। जाओ, भाग जाओ।"

अपमान और दुःख के कारण हाजी रो पड़ा। वह गिड़गिड़ाने लगा— "मुझे माफ कर दो।"

लेकिन हाजी की एक न सुनी गई। उसे धक्के मारकर शिविर से खदेड़ दिया गया। उसके कारण ही सी पो हाथ से निकल गई थी।

अब हाजी के लिए एक ही रास्ता था कि वह अपने गांव लौट जाए।

हाजी अपने घर पहुंचा, तो बहुत उदास था। उसके पिता अब चल-फिर नहीं सकते थे। उन्होंने पूरी बात सुनी, तो बोले—"बेटा, मानो न मानो, सी पो तुम्हारी भूल के कारण ही भाग गई। अगर तुमने बाघ को देख लिया था, तो सी पो को खुले में कभी नहीं बुलाना चाहिए था। बाघ के चले जाने के बाद तुम उसे आराम से शिविर में ला सकते थे। अपने साथ-साथ तुमने सी पो के प्राण भी संकट में डाल दिए थे। खैर, माजा कूम को ढूंढ़ने का विचार छोड़ो और गांव में रहकर खेती का काम करो।"

हाजी सिर झुकाए सुनता रहा। वह भला क्या कह सकता था।

इसी तरह कुछ दिन निकल गए। एक रोज वह खेतों में काम कर रहा था। तभी कहीं ढोल बजने की आवाज सुनी। सब गांव वाले आवाज की दिशा में भागे जा रहे थे। हाजी भी वहां जा पहुंचा। एक आदमी ऊंची आवाज में कह रहा था— "सावधान, सावधान, उत्तर दिशा से जंगली हाथियों का झुंड आ पहुंचा है। वे खेत नष्ट कर रहे हैं। बस्तियां उजाड़ रहे हैं। इन जंगली हाथियों का सरदार है माजा कूम।"

सब डर गए, लेकिन हाजी का मन प्रसन्न हो उठा। वह सोच रहा था— 'तो माजा कूम इधर आ गया है। अब तो मैं उसे पकड़कर ही रहूंगा।' तभी उसने लोगों को कहते सुना— "हमें सैनिकों को बुलाना चाहिए। वे इन हाथियों को मार डालेंगे।"

"नहीं, नहीं, सैनिकों को मत बुलाना। मैं अकेला ही माजा कूम को पकड़ लूंगा। एक बार वह मुझे पहचान जाए, तो फिर मेरी हर बात मानेगा।"— हाजी ने कहा। पर उतने शोर में उसकी आवाज भला कौन सुनता।

हाजी जल्दी-जल्दी घर आ गया। पिता से बोला— "बाबा, वे सब माजा कूम को मार डालेंगे। उनसे कहिए न, मैं उसे पकड़ सकता हूं। वह पागल नहीं है। आपके गांव चले आने से ऐसा हो गया है।"

रात हुई। सब गांव वाले खेतों में बने मचानों पर चढ़ गए। उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर साथ रख लिए।

हाजी ने अपने साथी से कहा— "जंगली हाथियों

पर पत्थर कभी मत फेंकना । अगर वे भड़क गए, तो सब कुछ तहस-नहस कर डालेंगे ।"

आधी रात हुई । चांदनी में हाथियों का झुंड दिखाई दिया । वे चुपचाप खेतों की ओर बढ़े आ रहे थे । जंगली हाथियों को देखकर मचानों पर बैठे लोग शोर मचाने लगे, पत्थर फेंकने लगे ।

हाथियों का झुंड खेतों को रौंदने लगा । पत्थर लगने से जंगली हाथी क्रोधित हो उठे । चिंघाड़ते हुए मचानों को गिराने लगे । ऊपर बैठे लोग कूदकर भागने लगे । कई लोग चोट खा बैठे ।

चांदनी में हाजी ने माजा कूम को पहचान लिया । वह सबसे आगे था । लगता था,जैसे बाकी हाथी उसी के आदेश पर चल रहे हों ।

"भागो, भागो, जान बचाओ ।"— रखवाले चीखते हुए भाग रहे थे । सब बुरी तरह घबरा गए थे ।

हाजी ने देखा, माजा कूम उधर ही दौड़ा आ रहा था, जिधर वह मचान पर बैठा था । माजा कूम को रोकने का अब एक ही उपाय था कि उसे किसी तरह डरा दिया जाए । अगर वह डर कर भागने लगे, तो बाकी हाथी भी भाग जाएंगे, और गांव की रक्षा हो जाएगी । हाजी ने कुछ सोचा, जैसे ही माजा कूम मचान के निकट आया, हाजी उसकी पीठ पर कूद गया । फिर उसकी खाल में नाखून गड़ाते हुए बाघ की आवाज में गुर्राने लगा ।

बाघ की गुर्राहट सुनकर माजा कूम भ्रम में पड़ गया । उसे लगा,कोई बाघ सचमुच उसकी पीठ पर आ कूदा है । उसने डरकर सूंड उठाई, और चिंघाड़ते हुए भाग निकला । अपने नेता को भागते देख, झुंड के बाकी हाथी भी भागने लगे ।

गांव बच गया, लेकिन हाजी के प्राण संकट में थे । वह माजा कूम की पीठ से चिपका हुआ बाघ की तरह गुर्रा रहा था।लेकिन कब तक ? पीठ पर पकड़ने-थामने के लिए कुछ नहीं था । माजा कूम उसे गिराने का प्रयास कर रहा था । हाजी को पता था, उसके जमीन पर गिरते ही माजा कूम कुचल डालेगा । जब तक वह हाजी की पीठ पर था, तभी तक उसके प्राण सुरक्षित थे ।

माजा कूम हाजी को लिए हुए कांटेदार झाड़ियों के जंगल में घुस गया । कांटों से उसका सारा बदन बिंध गया । कपड़े तार-तार हो गए ।

जंगल के बीच खुली जगह थी । वहां पहुंचकर माजा कूम रुक गया । शायद वह अपने शत्रु को मारने की कोई तरकीब सोच रहा था । फिर वह पीछे को झुकने लगा, जैसे हाजी को गिराकर मार देना चाहता हो । हाजी कूदकर दूर जा खड़ा हुआ और जोर से बोला— "माजा कूम, यह तो मैं हूं हाजी, तुम्हारा दोस्त ।"

लेकिन शायद माजा कूम ने उसे नहीं पहचाना । वह चिंघाड़ता हुआ हाजी के पीछे दौड़ा । आगे-आगे हाजी और पीछे धम-धम करता आता पहाड़ जैसा माजा कूम । साक्षात् मृत्यु उसका पीछा कर रही थी । तभी हाजी का सिर एक डाल से टकराया और वह जमीन पर गिर पड़ा । फिर उसे होश न रहा ।

हाजी की आंखें खुल गईं । वह हड़बड़ा कर उठ बैठा । उसे याद आया, वह डाल से टकराकर जमीन पर गिर पड़ा था, तब माजा कूम उसका पीछा कर रहा था । फिर क्या हुआ ? उसने इधर-उधर देखा और चौंक उठा । थोड़ी दूर पर माजा कूम खड़ा अपनी सूंड हिला रहा था । यानी उसने हाजी को मारा नहीं था । फिर माजा कूम ने अपनी सूंड बढ़ाकर उसे हौले से छुआ, जैसे उसे गुदगुदा रहा हो ।

—'तो माजा कूम ने मुझे पहचान लिया । अपने दोस्त को भूला नहीं है वह । अगर मेरी जगह कोई और होता,तो माजा कूम ने उसे पीस डाला होता ।'

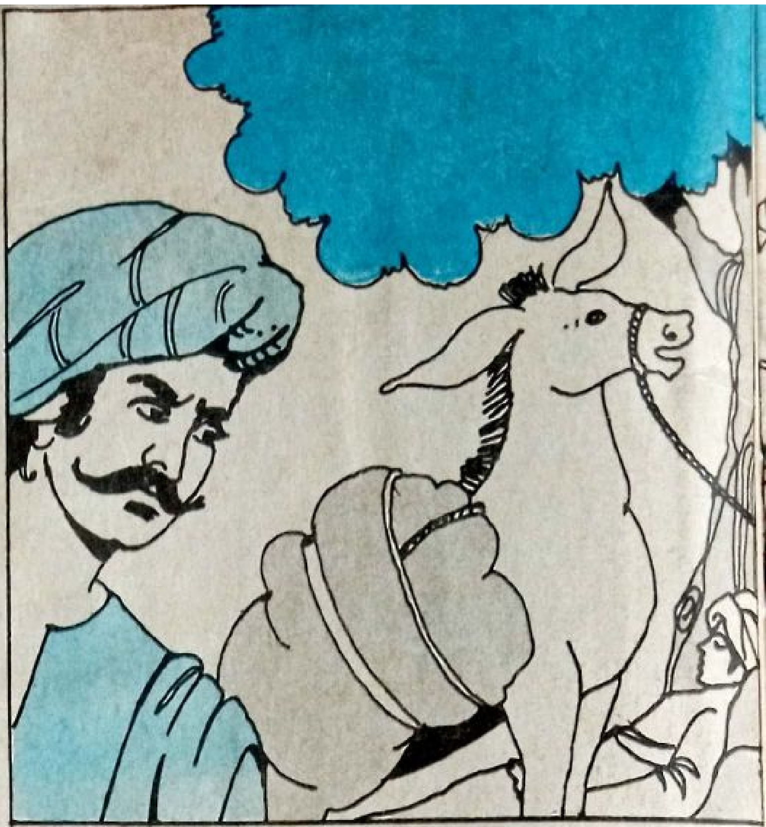
"माजा कूम, मेरे दोस्त ।"— कहता हुआ हाजी उससे लिपट गया । उसकी सूंड को थपथपाने लगा ।

हाजी माजा कूम की पीठ पर बैठा हुआ शिविर में घुसा, तो वहां खलबली मच गई । सब कह रहे थे— 'हाजी माजा कूम को ले आया । छोकरे ने चमत्कार कर दिखाया ।' जेनसन और ओ यान फटी-फटी आंखों से माजा कूम की ओर देख रहे थे । और उसकी पीठ पर बैठा हाजी मुसकरा रहा था । दो बिछड़े हुए दोस्त बहुत दिन बाद मिले थे ।

प्रस्तुत : देवेन्द्र कुमार

# ठग-महाठग

—राजेश श्रीवास्तव



एक था ठग । एक था महाठग । दोनों पक्के दोस्त थे । ठगी का धंधा भी साथ-साथ करते थे, मगर एक दूसरे को ठगने की ताक में रहते थे । जब कभी बड़ा माल हाथ लगता, तो दोनों ही उसे अकेले हजम कर जाना चाहते । खूब लड़ते-झगड़ते, लेकिन अगली बार फिर साथ-साथ ठगी करने चल पड़ते । दोनों रूप और आवाज बदलने में माहिर थे । इसलिए पकड़ में भी नहीं आते थे ।

एक बार दोनों ने बहुत बड़ा हाथ मारा । मिले हीरे और जवाहरात । उन्होंने माल गधे पर लादा । ऊपर से कचरा भर दिया, ताकि किसी को पता न चले । फिर चल दिए अपने गांव की ओर । चलते-चलते रात हो गई । पहाड़ी इलाका था । गांव अभी दूर था । दोनों ने बरगद के नीचे रात काटने का फैसला किया । गधे को पेड़ से बांधा और अगल-बगल लेट गए ।

दोनों लेट तो गए, आंखें भी मूंद लीं, पर आंखों में नींद का नामोनिशान नहीं । डर था कि कहीं कोई माल न लेकर भाग जाए । सुबह के समय महाठग की आंख लग गई । बस फिर क्या था ! ठग उठा । धीरे से गधे को खोला और नंगे पैर यह जा, वह जा । लेकिन जल्दी-जल्दी में जूतियां वहीं छोड़ गया ।

आधा घंटे बाद महाठग की नींद खुली, तो वह हक्का-बक्का रह गया । ठग और गधा दोनों गायब । उसने आव देखा न ताव । पेड़ की सबसे ऊंची शाखा पर चढ़ गया । क्या देखता है कि ठग नंगे पैर गधे समेत दूर भागा जा रहा है । महाठग ने तुरंत कच्चा रास्ता पकड़ा । उस रास्ते पर आ गया, जहां से ठग गुजरने वाला था । एक नई जूती निकाली । बीच सड़क पर उसे रख, खुद एक पेड़ के पीछे छिप गया ।

थोड़ी देर में ठग वहां आ पहुंचा । सड़क पर जूती पड़ी देख, वह एक पल को ठिठका । फिर उसने जूती उठाई । पहनकर देखी, और वहीं पटक दी । झल्लाकर बोला—"मिली भी तो एक पैर की । इसका क्या करूं ?" फिर आगे चल दिया । महाठग ने यह सब देखा तो उठा । कच्चे रास्ते से चला, ठग से आगे जा पहुंचा । इस बार उसने दूसरी जूती सड़क के बीचोंबीच रख दी और खुद छिप गया । ठग वहां पहुंचा, तो फिर ठिठक गया —"अरे, दूसरी जूती ।" उसने कहा—"ओह, मैंने कितनी बड़ी बेवकूफी कर डाली । एक जूती पीछे पड़ी थी । वह मैंने छोड़ दी । ले आता, तो अब नंगे पैर तो न चलना पड़ता ।" बस, फिर क्या था । उसने गधे को पेड़ से बांधा और दूसरी जूती लेने पीछे की ओर दौड़ पड़ा ।

महाठग की चाल काम कर गई । ठग के जाते ही वह पेड़ के पीछे से निकला । गधे को खोला और यह जा, वह जा । अपने घर पहुंचकर महाठग ने अपनी पत्नी को जूतियों वाली बात बताकर कहा—"लाखों के हीरे-जवाहरात हैं । इनमें से कुछ चूल्हे के नीचे, कुछ चक्की के नीचे और कुछ पीपल के नीचे छिपा दो । ठग आता ही होगा । मैं गांव के बाहर वाले सूखे कुएं में बैठता हूं । तुम रोज पानी के बहाने आना और कुएं में खाना लटका जाना । सब हाल-चाल भी बताती रहना । ठग आकर मेरे बारे में पूछे, तो कहना कि जब से गए हैं, आए ही नहीं ।"

इतना कहकर महाठग जाकर सूखे कुएं में छिप गया । उसकी पत्नी ने हीरे-जवाहरातों को छिपा दिया और गधे को भगा दिया ।



उधर ठग भी समझ गया था कि जूतियों वाली चाल महाठग के अलावा किसी और की नहीं हो सकती। वह सीधा गांव में आया। अपने ढंग से पूछताछ की, तो पता चल गया कि महाठग गधे के साथ आया था। ठग उसकी पत्नी से बोला—"भाभी, महाठग कहां है ?"

वह पहले से ही सावधान थी। उसने कहा—"भैया, मैं क्या जानूं ? तुम्हारे ही तो साथ गए थे।" इतना कहकर उसने रोने जैसा मुंह बना लिया।

ठग समझ गया कि सीधी अंगुली घी नहीं निकलेगा। वह चुपचाप वहां से चला आया। महाठग के घर के सामने पीपल का पेड़ था। उस पर जा बैठा। देखता रहा कि महाठग के घर में कौन-कौन आता-जाता है। उसने देखा कि महाठग की पत्नी पानी लेने बाल्टी और रस्सी लेकर जाती है, मगर उधर नहीं जाती, जिधर गांव की सारी औरतें जाती हैं। उसे शक हो गया। एक रोज छिपता-छिपता वह उसके पीछे पीछे कुएं तक पहुंच गया। देखा कि महाठग की पत्नी ने खाने की पोटली डोल में रखकर कुएं में लटका दी। वापस खींची, तो उसमें खाली बर्तन थे। बस, उसे पता लग गया है कि महाठग यहीं छिपा है।

अगले दिन वह महाठग की पत्नी से पहले ही खिचड़ी लेकर कुएं पर पहुंच गया। उसने जान-बूझकर बिना घी वाली कच्ची-पक्की खिचड़ी बनाई थी। देखते ही महाठग गुस्से से चिल्लाकर बोला—"यह क्या बनाया है?" ठग ने जनाना आवाज में कहा–"क्या करती, घर में सारा सामान खत्म हो गया। घी भी चुक गया। मेरे पास पैसे भी नहीं हैं।"

महाठग जोर से चिल्लाकर बोला–"पैसे नहीं थे तो चूल्हे के नीचे, चक्की के नीचे या पीपल के नीचे—कहीं से भी निकाल लेती।" इतना सुनते ही ठग वहां से खिसक गया। उसे जानकारी मिल गई थी।

थोड़ी देर बाद महाठग की पत्नी वहां खिचड़ी लेकर पहुंची। उसने डोल में रखकर खिचड़ी नीचे लटकाई, तो महाठग बोला—"अरे इतनी जल्दी खिचड़ी दोबारा कैसे पका लाई ? इतनी जल्दी तो तू घर भी नहीं पहुंच सकती थी।" महाठग की पत्नी अचरज से बोली—"दोबारा ! मैं तो पहली बार खिचड़ी पकाकर ला रही हूं।"

महाठग चकरा गया। वह जोर से चिल्लाया—"जल्दी से कुएं में रस्सी फेंक, जिससे मैं बाहर निकलूं। लगता है, ठग मुझसे ठगी कर गया।"

इस बीच ठग महाठग के घर से सारा माल समेट रफूचक्कर हो गया। घर पहुंचकर वह अपनी पत्नी से बोला—"इस बार बहुत तगड़ा माल हाथ लगा है। जल्दी से एक तकिए में इसे छिपा दो। महाठग आता ही होगा। उसके आते ही मैं मरने का नाटक करूंगा। बाकी तुम संभाल लेना।" अभी वह अपनी पत्नी को समझा ही रहा था कि महाठग आता दिखाई दिया। पत्नी ने जल्दी से सारा माल छोटे तकिए में भरा। ठग को लिटाकर उस पर सफेद चादर डाल दी। जैसे महाठग पास आया, उसने रोना शुरू कर दिया। महाठग ने पूछा—"भाभी, क्या बात है ? क्या हुआ ?"

ठग की पत्नी ने जोर-जोर से रोते हुए कहा—"अरे भैया, अभी थोड़ी देर पहले ही तो यह लौटे थे। आते ही बोले कि सीने में तेज दर्द है। महाठग ने सब कुछ ठग लिया और देखते ही देखते इनके प्राण निकल

गए। हाय भैया, मेरा तो सब कुछ लुट गया।"

महाठग उसकी चालबाजी समझ गया। बोला—"मैं उसका जिगरी दोस्त हूं। जब जीते जी इसके लिए सब कुछ किया, तो मरने के बाद भी मैं ही करूंगा। चलो, इसकी अंतिम क्रिया कर दें।"

ठग को अपने कंधे पर लाद लिया और चल पड़ा। पीछे-पीछे एक गठरी और माल वाला तकिया उठाए ठग की पत्नी चल रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करें।? शमशानघाट पहुंच कर महाठग ने उसके हाथ में तकिया देखा, तो उसे शक हुआ। उसने पूछा—"भाभी, यह तकिया किसलिए ?"

—"यह तकिया इन्हें बहुत प्यारा था। हमेशा इसी पर सिर रखकर सोते थे। अब इनके मरने के बाद इनकी याद के तौर पर यह तकिया ही तो मेरे पास बचा है। इसे मैं हमेशा अपने सीने से लगाकर रखूंगी।"

महाठग मन ही मन मुसकराया। बोला—"भाभी, कहते हैं मरने वाले की जो चीज सबसे प्यारी हो, उसे उसके साथ ही जला देना चाहिए।" कहते हुए उसने ठग की पत्नी के हाथ से तकिया छीन लिया। ठग की पत्नी हक्की-बक्की रह गई। वह कुछ भी न कह सकी।

महाठग ने फिर कहा—"भाभी, मैं अब अपने दोस्त की लाश को जलाने से पहले नहलाऊंगा। तुम जरा दूर चली जाओ।"

अब महाठग जान-बूझकर जोर से बोला—"जलाने से पहले इसके हाथ-पैर तो बांध ही दूं। सुना है, कभी-कभी मुर्दों में भी जान आ जाती है। अब माल तो मेरे हाथ आ ही गया है।"

इतना सुनते ही मरने का नाटक करते-करते ठग का धैर्य टूट गया। एकदम उठकर उसने महाठग का गिरहबान पकड़ लिया।

यह देख, महाठग जोर से हंस पड़ा। अब तो ठग को भी हंसी आ गई। बोला—"चलो महाठग, अब ठगी समाप्त। सारा माल आधा-आधा।"

महाठग ने हंसकर कहा—"माल तो बंट ही जाएगा, पर फिर कभी मुझसे ठगी मत करना।"

ठग ने कहा—"तुम भी मत करना।" फिर दोनों साथ-साथ घर की तरफ चल दिए। ●

# कौन हंसा ?

— उमा पंत

गुरुजी ने अपने दोनों शिष्यों को आशीर्वाद दिया—"आज तुम्हारी शिक्षा पूरी हुई। आगे अपने कर्म का रास्ता तुमको स्वयं चुनना है। जाओ, श्रेष्ठ धर्म का पालन करो।" शिष्य खुशी-खुशी विदा हुए।

सुशर्मा अपने घर की ओर चल पड़ा। उसको देखते ही बूढ़े माता-पिता का चेहरा खिल उठा। पुत्र को घर-गृहस्थी का बोझ सौंपकर वे निश्चिंत हो गए।

दूसरी ओर पिप्पल ने तपस्या करने के इरादे से जंगल का रास्ता चुना। लता-पत्रों से लिपटे एक विशाल वृक्ष के नीचे पालथी मारकर बैठ गए। उन्होंने भूख-प्यास को जीत लिया। जाड़ा, गरमी, आंधी-तूफान, किसी का उन पर कोई असर न होता था। जंगल में हाथी चिंघाड़ते, शेर दहाड़ते, सियार डरावनी बोलियां बोलते, परंतु पिप्पल जरा भी विचलित नहीं होते थे। उनके शरीर पर दीमकों ने घर बना लिया। वृक्ष की लताओं में लिपटे सांपों ने बांबियां बना लीं। तपस्वी की विशाल जटाओं में मकड़ी का जाल भी था और बर्र का छत्ता भी। छोटे-बड़े सभी जीव-जंतु अपना हिंस्र स्वभाव भूलकर उनके आसपास घूमते रहते थे। बरसों बीत गए। पिप्पल का शरीर दीमक लगी मिट्टी से पूरी तरह ढक गया।

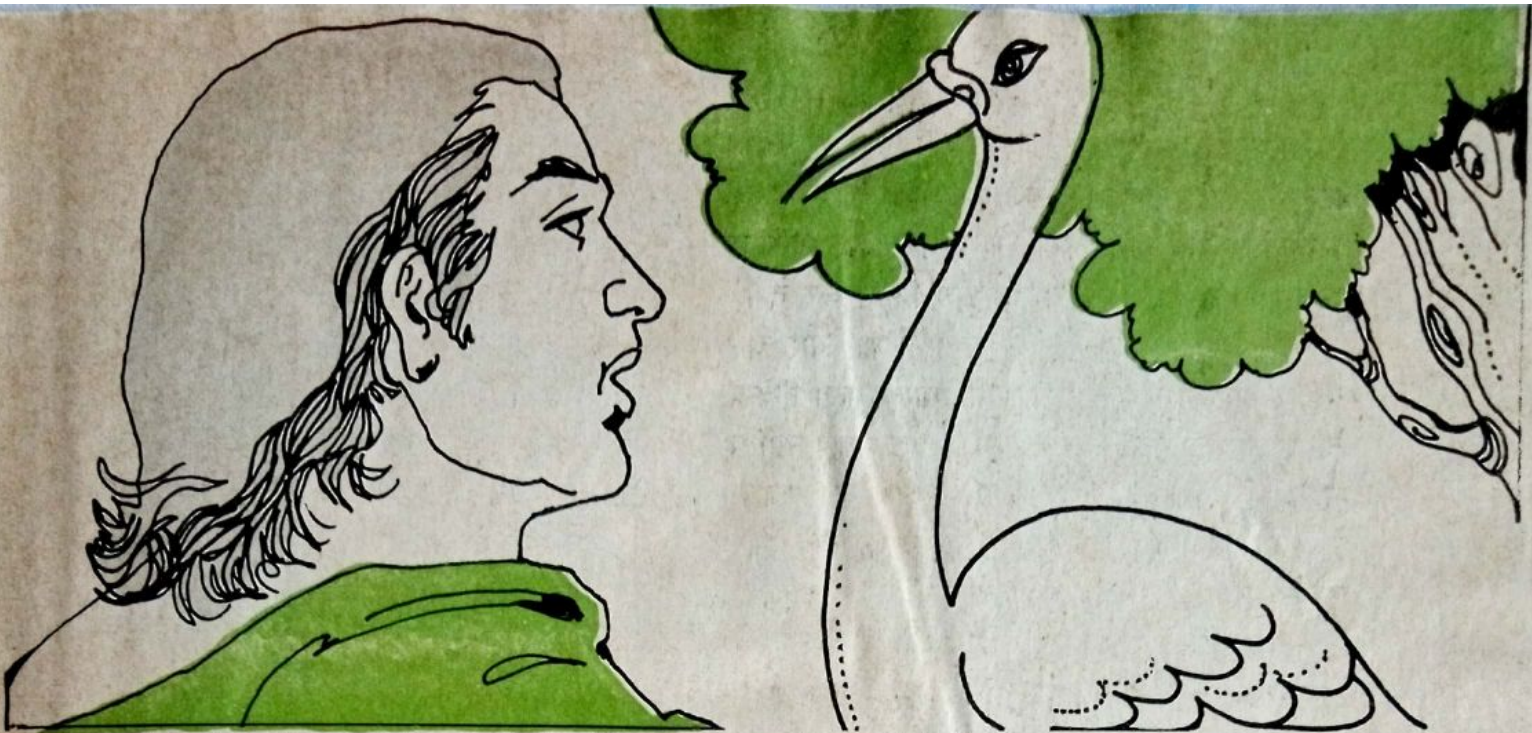
उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी तपस्वी के पास जा पहुंचे। पिप्पल ने आंखें खोलीं, ब्रह्माजी को प्रणाम किया।

"मांगो तपस्वी, जो चाहो मांग लो।"— ब्रह्मा जी बोले।

— "मैं विद्याधर बनना चाहता हूं प्रभो, ताकि जब जहां जाने की इच्छा हो, तुरंत वहां पहुंच जाऊं।"

"ऐसा ही होगा।"— कहकर ब्रह्मा जी अंतर्धान हो गए।

पिप्पल मिट्टी झाड़कर उठ खड़े हुए। उनके मन में स्नान की इच्छा हुई। पल भर में ही उन्होंने स्वयं को गंगा नदी के किनारे खड़ा पाया। चारों तरफ



देखा, गंगा की लहरों पर पड़ती सूरज की किरणें बहुत अच्छी लग रही थीं। पानी में बत्तखों का झुंड किलोल कर रहा था। बड़ा ही मनोरम दृश्य था। पिप्पल अपनी तपस्या के प्रताप पर मुग्ध हो उठे।

मन में अहंकार जागा— "कितना महान तपस्वी हूं मैं ?अभी जंगल में था, अब यहां पर हूं। अभी हिमालय की चोटी पर पहुंच सकता हूं।" मन में इस विचार के आते ही उन्हें किसी के हंसने की आवाज सुनाई दी।

पिप्पल सोचने लगे, यहां इस सुनसान में मेरे अलावा और कोई भी नहीं। फिर यहां कौन हंसा होगा ?

आवाज आई— "मूर्ख है तू !"

आश्चर्य से पिप्पल ने देखा कि पानी के बीचों-बीच खड़ा सारस मनुष्य की बोली बोल रहा है।

— "मैं विद्याधर हूं। मैंने कठोर तपस्या की है।"

— "विद्याधर बन गया, तो इससे अपने को महान समझने लगा ? महान तो सुशर्मा है। उसके तप के आगे तेरी तपस्या कुछ भी नहीं। उसके तप में इतना तेज है कि जिसका स्मरण करे, उसके दर्शन कर सकता है ?"

तपस्वी पिप्पल सुशर्मा को देखने के लिए व्याकुल हो उठे। वहां पहुंचे तो देखा, सुशर्मा घर-गृहस्थी के कामों में लीन है।

बरसों बाद मित्र को सामने देख, सुशर्मा प्रसन्न हो गए। मित्र का खूब सत्कार किया। हाल पूछे, पिप्पल ने अपने बारे में सब-कुछ बतलाया। फिर बोले— "तुमने इतने वर्ष क्या किया सुशर्मा ?"

— "मैंने अपने माता-पिता की सेवा की। उनके कहने पर मैंने अच्छे गृहस्थ का धर्म पालन किया। माता-पिता को घर-गृहस्थी की चिंताओं से दूर रखा।"

— "क्या यही तुम्हारी तपस्या है ?"

— "हां पिप्पल, यही मेरी तपस्या है।"

— "इस तपस्या का फल तुम्हें क्या मिला ?"

— "माता-पिता का आशीर्वाद।"

— "मैं ईश्वर के दर्शन करना चाहता हूं। क्या तुम मुझे अभी दर्शन करा सकते हो ?"

"माता-पिता के आशीर्वाद पर संशय न करो मित्र।"— कहकर सुशर्मा मुसकरा उठे।

पिप्पल ने देखा, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों ही सुशर्मा के पीछे खड़े थे। तपस्वी पिप्पल का सारा अहंकार जाता रहा।

सुशर्मा बोले— "आओ मित्र, तुम भी माता-पिता का आशीर्वाद लो।"

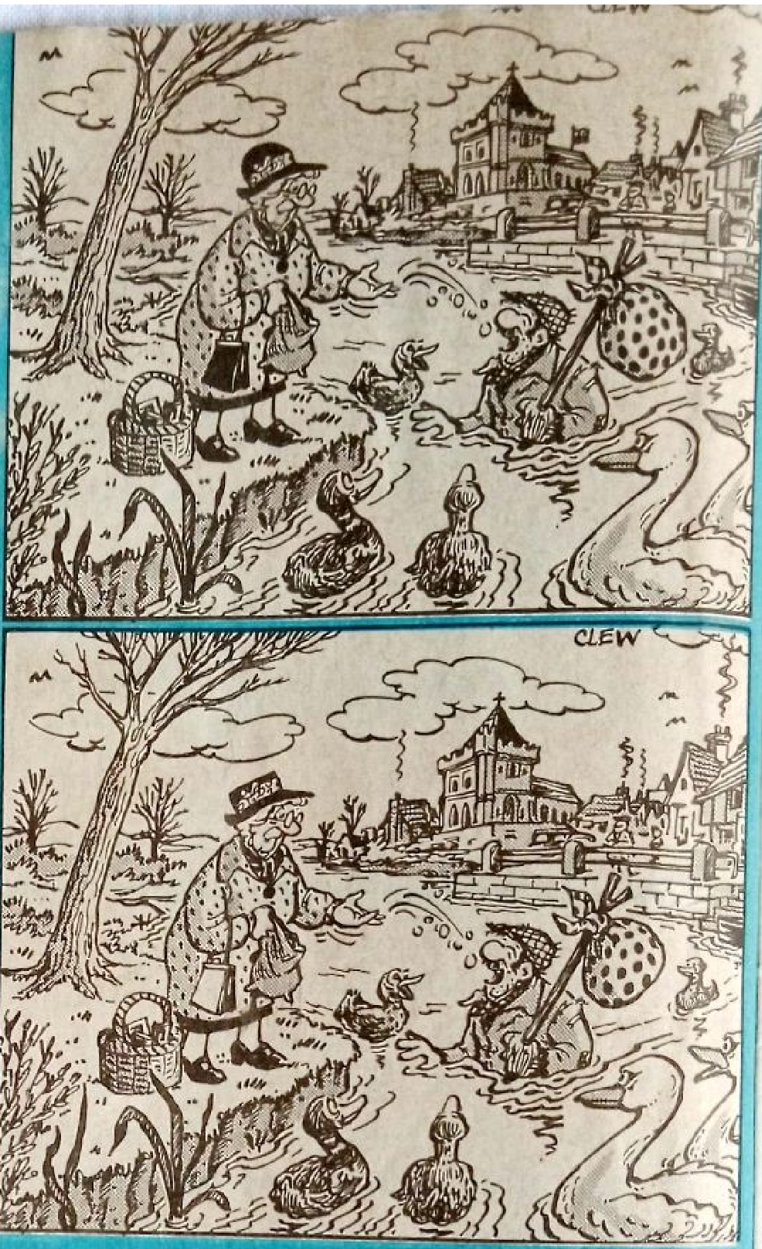
दोनों ने माता-पिता के चरणों में प्रणाम किया और अपने कर्तव्य पालन में जुट पड़े।

(अग्निपुराण)

# आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।






## कहानी लिखो: ११८

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १५ सितम्बर '९३ तक **कहानी लिखो—११८, नंदन, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : नवम्बर '९३ अंक

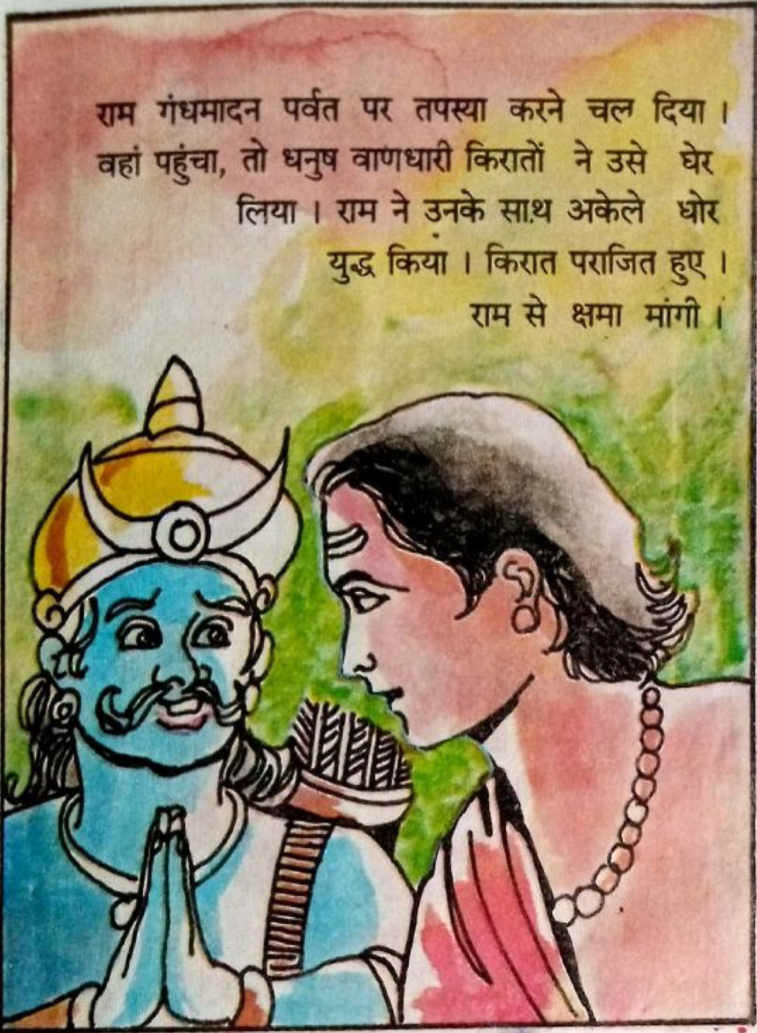
## चित्र-पहेली : ११८

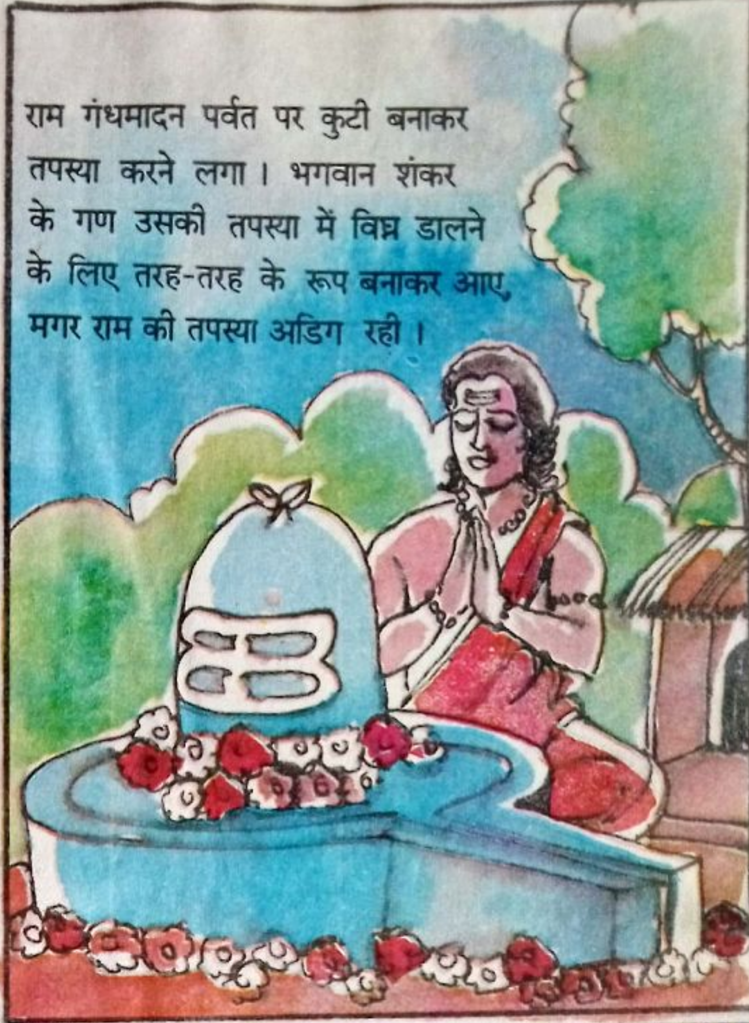
**काश, मैं होता राजा।** तो फिर क्या होता ? सोचिए और उसका चित्र बनाकर १५ सितम्बर '९३ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा आयु स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखिए। चित्र चटख रंगों में बनाकर भेजिए।** चुना गया चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा।

परिणाम : दिसम्बर '९३ अंक


परशु की भेंट
राम महर्षि जमदग्नि का पुत्र था। पंद्रह वर्ष की आयु में ही उसने शास्त्रों का अध्ययन पूरा कर लिया था। शरीर से बलवान था। आश्रम के विद्यार्थियों के साथ झगड़ा करता। मां चिंतित रहतीं। एक दिन राम को पास बुलाकर कहा— "बेटा, कुछ पढ़ा कर।"
तभी महर्षि आ गए। बोले— "अब इसे शस्त्रों की शिक्षा देनी चाहिए।" राम दौड़कर अपने पिता से लिपट गया— "हां, पिताश्री, शस्त्र विद्या सीखने में मेरी गहरी रुचि है।"
महर्षि जमदग्नि शास्त्र और शस्त्र दोनों ही विद्याओं में निपुण थे। वह अपने पुत्र को युद्ध विद्या सिखाने लगे। थोड़े अभ्यास के बाद ही राम तलवार और गदा चलाने में निपुण हो गया।
इसके बाद महर्षि जमदग्नि ने राम को सही निशाना साधने की शिक्षा दी। कुछ ही दिनों में राम धनुर्विद्या भी सीख गया।


महर्षि जमदग्नि अपनी पत्नी रेणुका से बोले— "हमारा पुत्र बहुत ही तेजस्वी है। मुझे जो आता था, उसे सारा सिखा दिया। मगर मुझे लगता है, अभी उसे किसी महान गुरु से शस्त्र विद्या सीखनी चाहिए।"
रेणुका बोली— "मेरा राम अभी छोटा है। मैं उसे अपनी आंखों से कैसे दूर कर सकती हूं? क्या ऐसा कोई गुरु नहीं, जो इसे अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा आश्रम में ही दे सके।"
जमदग्नि ने हंसते हुए कहा— "पहले, मेरे साथ चलकर राम के करतब देख लो।" दोनों जंगल में गए। राम धनुष-विद्या का अभ्यास कर रहा था। उसने एक ही वाण से एक बड़े वृक्ष को धराशायी कर दिया। हाथी को भी गिरा दिया।
रेणुका को पूरा विश्वास हो गया कि उसका बेटा महान धनुर्धर है। तब जमदग्नि ने राम से कहा— "बेटा, तुम देवाधिदेव भगवान शंकर को तपस्या करके प्रसन्न करो। वह शस्त्र-विद्या के महान आचार्य हैं।"


राम गंधमादन पर्वत पर तपस्या करने चल दिया। वहां पहुंचा, तो धनुष वाणधारी किरातों ने उसे घेर लिया। राम ने उनके साथ अकेले घोर युद्ध किया। किरात पराजित हुए। राम से क्षमा मांगी।


राम गंधमादन पर्वत पर कुटी बनाकर तपस्या करने लगा। भगवान शंकर के गण उसकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए तरह-तरह के रूप बनाकर आए, मगर राम की तपस्या अडिग रही।


भगवान शंकर प्रसन्न हो, प्रकट हुए। वरदान मांगने को कहा। राम ने हाथ जोड़कर कहा— "भगवन, मेरे पिता जमदग्नि ने मुझे शस्त्र-विद्या सीखने के लिए आपकी शरण में भेजा है।" भगवान शंकर ने राम की बात मान ली।


शंकरजी राम को शस्त्र विद्या सिखाने लगे। राम में अपार बल था। वह घंटों भगवान शंकर के साथ द्वंद्व युद्ध करता रहता था।


भगवान शंकर ने राम को अनेक दिव्य शस्त्रों की शिक्षा दी। उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर उसे शब्दभेदी वाण चलाना भी सिखाया।
शिक्षा पूरी कर राम जाने लगा, तो भगवान शंकर ने उसे एक बड़ा परशु दिया।
राम ने प्रणाम कर भगवान शंकर से विदा ली। शंकर ने आशीर्वाद दिया— "पुत्र, यह परशु तुम्हें अजेय बना देगा।"
पिता को भगवान शंकर द्वारा दिया गया परशु दिखाया। जमदग्नि बोले— "बेटा, इसके द्वारा तुम्हें कीर्ति मिलेगी। परशु धारण करने के कारण आज से तुम परशुराम कहलाओगे।"

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

# नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : २९ अंक : ११ सितम्बर '९३, नई दिल्ली; भाद्रपद-क्वार; शक सं. १९१५

## हम रहें न रहें, रहेंगे पेड़

**जोधपुर । पिछली सदी में जोधपुर में डाकुओं का बहुत जोर था । वे घने जंगलों में छिप जाते थे । महाराज ने जंगल कटवाने का फैसला किया । तब पेड़ों को बचाने के लिए हजारों बिश्नोई उनके तनों से लिपट गए । अपनी जान गंवा दी । उन्हीं शहीदों की याद में जोधपुर के पास, हर साल सितम्बर में मेला लगता है । यहां हजारों लोग इकट्ठे होते हैं ।**

आज पेड़ों और जानवरों की रक्षा की बात हर तरफ हो रही है । राजस्थान के बिश्नोई लोग सदियों से पेड़ को काटना या जानवर को मारना महापाप समझते हैं । दुनिया भर के लोग राजस्थान के इन सीधे-सादे लोगों को देखकर चकित हैं ।

बिश्नोई जम्बेश्वर देवता के पुजारी हैं । उनके उनतीस शिष्य थे । इसीलिए उन्हें बिस-नोई (बिश्नोई) कहा गया । १४७६ के अकाल में जम्बेश्वर ने पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और जानवरों को मरते देखा था । तभी उन्होंने तय कर लिया था कि वे लोगों को इनकी रक्षा करना सिखाएंगे ।

आज भी बीकानेर से जोधपुर तक के इलाके में बड़े-बड़े शिकारियों की बंदूकें झुक जाती हैं । उन्हें पता है— यहां बिश्नोई रहते हैं ।

## शौकीन चूहा

न्यूयार्क । रंगीन चश्मा दिखा, रूमाल या टोपी, बस ले भागे । एक बार एक बच्चे ने अपनी चीजों की चोरी की शिकायत लिखवाई तो इनके घर में मिलीं । यह हैं एक चूहे जी । इनकी प्रजाति को 'पैट रैट' या 'ट्रेड रैट' कहते हैं । इनको रंगों से बहुत लगाव है । मान लीजिए यह कोई चीज उठाकर जा रहे हैं, कोई दूसरी अच्छी चीज दिखी, तो पहली को छोड़ उसे उठा लेंगे । इसलिए कई बार ये जिन घरों से चोरी करते हैं, वहां कोई अच्छी चीज छोड़ भी जाते हैं ।

## बाल कवियों से कविताएं आमंत्रित

नई दिल्ली । १९९३ के लिए बालकन जी बारी इंटरनेशनल की ओर से आयोजित राष्ट्रीय बाल कवि अवार्ड के लिए, ८ से १२ तथा १२ से १६ वर्ष तक के बच्चों की कविताएं आमंत्रित की गई हैं । हर आयु वर्ग में ग्यारह-ग्यारह इनाम दिए जाएंगे ।

कविताओं के विषय हैं— १. हम बच्चे विश्व में नया प्रकाश फैलाएंगे; २. मेरा गहना है मेरा चरित्र; ३. देख मत दूसरे के दोषों को ।

कविताएं भेजने की अंतिम तिथि ३१ अक्तूबर, १९९३ है ।

## अजंता का सपना

पेइचिंग । विंध्यांचल की सुंदरता देखकर देवी-देवता सोचते हैं कि क्यों न वे भी वहां चलें । एक दिन वे अजंता की गुफाओं की ओर आते हैं । वहां वे नाचने-गाने लगते हैं । उन्हें इंद्र का आदेश भी याद नहीं रहता । जब वे धरती पर आ रहे थे, तो इंद्र ने कहा था कि पौ फटने से पहले ही वापस आ जाएं । जैसे ही सवेरा होता है, देवी-देवता मूर्तियों में बदल जाते हैं । एक दिन गोपाल नाम का एक लड़का बांसुरी बजाते हुए उधर आता है । सुंदर मूर्तियों को देखकर वह अपनी सुध-बुध खो बैठता है । कुछ ग्रामीण वहां पूजा करके चले जाते हैं, मगर गोपाल वहीं बैठा रहता है । रात को पत्थर के सहारे सो जाता है ।

रात में मूर्तियां जीवित हो, नाचने-गाने लगती हैं । गोपाल भी मधुर

पेइचिंग विश्वविद्यालय के हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने यह नृत्य नाटिका 'अजंता का सपना' प्रस्तुत की । विश्वविद्यालय के पूर्वी अनुसंधान विभाग के इस कार्यक्रम में हिंदी के अलावा, कोरियाई, जापानी, विएतनामी, बर्मी, इंडोनेशियाई आदि बारह भाषाओं के छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम किए । 'अजंता का सपना' को प्रथम पुरस्कार मिला । इसका निर्देशन कोसान सान ने किया । वह पहले वर्ष की छात्रा है ।

---

वाशिंगटन । अमरीका में लोगों से अपील की गई है कि वे घर में भी सिगरेट न पिएं । इसके धुएं से बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

बच्चों का अखबार
# नंदन बाल समाचार

संसार में एक दिन भगवान कृष्ण ही होंगे। —मीराबाई

## चुप हैं, तो सो रहे हैं

हर समाज में और हर दौर में कुछ लोग होते हैं, जो वहां न हों तो अच्छा हो। वे ऐसे काम करते हैं जिनका सबसे बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। चोर-डाकू तो कानून के दायरे में बंध जाते हैं किंतु सफेदपोश मुखौटे वाले कई बार उससे फिसल जाते हैं।

संगीत, फिल्म और कला की आजादी के नाम पर खुली छूट का नतीजा हमारे सामने है। हर जाति और समाज में कुछ नियम होते हैं। उनकी सीमा तोड़ना ठीक नहीं। धन कमाने के लिए भद्दे दृश्य और भौंडे गीत फिल्माना और उनका प्रचार करना घातक है। मर्यादा जो नहीं मानते, उनके लिए कानून सख्त हो।

माता-पिता, शिक्षक और समाज के हर आदमी को इन हरकतों का विरोध करना चाहिए। इन फिल्मों और कार्यक्रमों का डटकर बहिष्कार करना जरूरी है। हम चुप हैं, तो सो रहे हैं—सब कुछ खो रहे हैं। बहिष्कार होता है, तो गलत कामों पर रोक लगती है।

## हमारे मेहमान



दुनिया के पचास से अधिक देशों में गणित पर भाषण देने वाले श्री भूदेव शर्मा 'नंदन' कार्यालय में पधारे। पिछले पांच वर्षों से अमरीका में सेंट जेवियर विश्वविद्यालय (लुइजियाना) में गणित के प्रोफेसर हैं। इससे पहले दिल्ली विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाते थे। अमरीका में रहने वाले श्री शर्मा का मन भारत में बसता है। वहां से 'विश्व विवेक' नाम की हिंदी पत्रिका निकालते हैं। 'नंदन' इन्हें बहुत प्रिय है। नियमित रूप से 'नंदन' वहां मंगाते हैं। चीन सरकार के निमंत्रण पर चीन गए, तो अपने देश में आए बिना न रह सके।

## प्रेत के डर से

बैंकाक। थाईलैंड में कई बूढ़ों की मृत्यु हो गई। गांव के लोग बहुत डर गए। उन्हें लगा कि कोई प्रेत बूढ़ों के पीछे पड़ा है। बस लोगों ने अपने-अपने घरों के सामने बोर्ड लटका दिए। जिन पर लिखा था—यहां कोई बूढ़ा नहीं रहता।

## सरकार के पेड़

बंगलूर। कर्नाटक में छह पेड़ों को राज्य की विरासत घोषित किया जाएगा। ये हैं—नीम, तुलसी, गृहंबरी, अमृतवल्ली, अशोक तथा सोगादी। इन पेड़ों का दवाइयों में बहुत उपयोग है। सरकार इन पेड़ों का संरक्षण करेगी।

## ताजमहल को बचाओ

आगरा। ताजमहल धंस रहा है। अब तक यह अस्सी मि. मी. धंस चुका है। ताजमहल के ढांचे की मिट्टी के नमूनों की जांच से यह बात पता चली है।

## चेतक मेला

चित्तौड़। महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की याद में अक्तूबर में घोड़ों का एक मेला लगेगा। इसमें रंगारंग कार्यक्रम भी होंगे। राजस्थान तथा देश के अन्य भागों से हजारों घोड़े यहां आएंगे। सबसे सुंदर सजी घोड़ी को इनाम भी दिया जाएगा।

## पुराना कपड़ा

इस्तांबूल। तुर्की में खुदाई के दौरान एक औजार पर लिपटा कपड़ा मिला है। माना जाता है कि यह हजारों वर्ष पुराना है। यहां तीस साल से खुदाई चल रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार इतना पुराना कपड़ा मिलना एक बड़ी उपलब्धि है।

## हलका खाना

लंदन। एक युवक होटल में आया। उसने खाना मांगा। वह हलका खाना खाना चाहता था। जब तक बैरा खाना लाता, युवक मेज पर चढ़ गया। उसने दीवार से बल्ब उतारा और खा गया।

## मुझे माफ करना

कलकत्ता। सत्य विश्वास अपने परिवार के साथ दक्षिणेश्वर के काली मंदिर में पूजा करने गया। वहां देवी के जेवर देख उसका मन ललचा गया। बाहर आकर उसने तीन लोगों की मदद ली। रात में मंदिर का ताला खोल, उन लोगों ने जेवर चुरा लिए। संयोग से इन चोरों में से एक के बच्चे की मृत्यु हो गई। उसने सोचा कि जरूर काली के जेवर चुराने के कारण ऐसा हुआ है। एक दूसरे चोर को पुलिस ने पकड़ा। उसके कहने पर पुलिस सत्य विश्वास तक जा पहुंची। उसने कहा—"मुझे अपने पाप की सजा मिलनी चाहिए, लेकिन मैं देवी से माफी मांगना चाहता हूं।" पुलिस उसे मंदिर ले गई। वहां जाकर उसने पूजा की, फिर जेल गया।

## दौड़ी रे दौड़ी

बहरीन। छिपकली का नाम है— कैलीसारस ड्रेकोनाइडस। यह आम छिपकलियों की तरह ही रेंगती है। मगर गुस्सा खा जाए तो पिछली दो टांगों पर किसी कुशल धावक की तरह दौड़ती है। समूह में भी दौड़ती है।

## शौक के लिए

मद्रास। रोजा मुत्तैया को डाक टिकट, डाक की रसीदें, सिनेमा के पोस्टर और छपे हुए कागज इकट्ठे करने का शौक था। रोजा किताबें खूब पढ़ते और बेचते। उन्होंने तमिल पुस्तकों की सूची बनाई। ये सूचियां आज महान संदर्भ ग्रंथ बन गई हैं। किताबें खरीदने के लिए उन्होंने घर की बहुत-सी चीजें बेच दीं। १९९२ में मुत्तैया की मृत्यु हो गई। उस समय उनके पास एक लाख दुर्लभ पुस्तकें, हजारों अखबार और पत्रिकाएं तथा पांच लाख कतरनें थीं। तरह-तरह की गुड़ियां और निमंत्रणपत्र भी थे। अब उनके इस अद्‌भुत संग्रह की देखभाल 'मोझि' नाम की संस्था कर रही है। शिकागो विश्वविद्यालय पूरे संग्रह पर माइक्रोवेव फिल्में बना रहा है।

## अखबारी कुतुबमीनार

जोधपुर। दरियासिंह पेशे से इंजीनियर हैं। उन्हें अखबार और पत्र-पत्रिकाएं इकट्ठा करने का शौक है। उनका कहना है कि यदि सारे अखबार और पत्रिकाओं को इकट्ठा रख दिया जाए तो कुतुबमीनार से भी ऊंची ढेरी बन सकती है।

## सफेद नेवला

उदयपुर। पहली बार एक गांव में सफेद नेवला देखने को मिला है। यह नेवला मादा थी। उसके साथ तीन बच्चे भी थे। सफेद नेवला दुर्लभ होता है और लाखों में एक मिलता है।

नं. बा. स. ३६ स

## विश्व पक्षी दिवस

अहमदाबाद। दुनिया भर में दूर देश से आने वाले पक्षियों की संख्या में कमी हो रही है। इसका कारण पक्षियों का शिकार, प्रदूषण और जल स्रोतों का सूखना है। प्रवासी पक्षियों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए एक दिन निश्चित किया गया है— आठ मई। हर वर्ष इसे विश्व प्रवासी पक्षी दिवस के रूप में मनाया जाया करेगा।

## सरकंडे का ईंधन

लंदन। सरकंडे को अच्छे ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। भारत में सरकंडा बारहों महीने मिलता है। इसे हाथी घास भी कहते हैं। इस घास की ऊंचाई तीन मीटर तक होती है। सरकंडे को किसान भी अच्छा मानते हैं क्योंकि यह तेजी से उग सकता है।

## खिलौना बैंक

कलकत्ता। यहां खिलौना बैंक की एक सौ तीस शाखाएं हैं। इन बैंकों में एक लाख, पैंतीस हजार खिलौने हैं। इन बैंकों की शाखाएं गांव-गांव तक पहुंचें, इसकी योजना बनाई जा रही है। बैंकों में वे बच्चे आकर खेलते हैं जो खिलौने नहीं खरीद सकते। बच्चे इन खिलौनों को बहुत सहेजकर भी रखते हैं।

## छोटी-सी दुनिया—भारत

नई दिल्ली। स्लोवानिया देश के गैस्पर गत ग्यारह सालों से पैदल घूम रहे हैं। इस दौरान तीस देशों की पैदल यात्रा कर चुके हैं। अभी २००२ तक पैदल घूमने का इरादा है। भारत के बारे में उनका कहना है— 'यहां जैसी अच्छी संस्कृति कहीं और नहीं मिलती। भारत तो अपने आप में ही एक दुनिया है।' हर महीने घिस जाने के कारण, उन्हें अपने जूते बदलने पड़ते हैं।

## नन्हे समाचार

□ अमरीका के मिशेल नगर में है मक्का महल। इसकी दीवारों पर भुट्टे लगाकर चित्र बनाए गए हैं।

□ थाईलैंड में घायल और बीमार हाथियों के इलाज के लिए एक अस्पताल का निर्माण किया जा रहा है।

□ तुर्की के नगर इस्तांबूल में टाइपिंग की विश्व प्रतियोगिता हुई। भारत का अभिषेक जैन प्रथम रहा।

□ सिंगापुर की चार राज भाषाएं हैं—अंग्रेजी, मलय, मंदारिन और तमिल।

□ केलिफोर्निया का हेंक डेक्कर नेत्रहीन है, पर बला का साहसी। अकेला ही अंधमहासागर में होते हुए इंग्लैंड पहुंचने के लिए चल दिया है।

□ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं का जापानी भाषा में अनुवाद बारह खंडों में प्रकाशित हुआ है।

□ इंडोनेशिया में विश्व डाक टिकट प्रदर्शनी हुई। उसमें चार भारतीयों को पुरस्कार दिए गए।

□ स्काटलैंड में विश्व रोबोट ओलम्पिक्स होने जा रहे हैं। उसमें रोबोट तरह-तरह के खेल दिखाएंगे।

□ गुजरात के बनासकांठा जिले में अनेक स्थानों पर खुदाई में हड़प्पा युग के अवशेष मिले हैं।

□ एक रेल इंजन कोटा जा रहा था। रास्ते में सिगनल पर ड्राइवर व खलासी उतर गए। तभी एक और ड्राइवर वहां आया और खाली इंजन को लेकर चल दिया। इंजन चोरी की रिपोर्ट की गई। अगले स्टेशन पर इंजन को पटरी से उतार कर रोक दिया गया। दोषी ड्राइवर को गिरफ़्तार कर लिया गया।

□ आस्ट्रिया में एक भारतीय प्रदर्शनी हुई जिसका नाम था—जादुई हाथ। इसे दर्शकों ने बहुत सराहा।

# सचित्र समाचार





↑ सिटी मांटेसरी स्कूल, लखनऊ के छात्र उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोतीलाल वोरा के साथ। ये छात्र जापान के बाल शिविर में भाग लेने गए हैं।

↑ न बिजली की जरूरत, न टेलीफोन के तारों की और दूर-दूर तक टेलीफोन किया जा सकता है। ये फोन सौर ऊर्जा से चलते हैं।

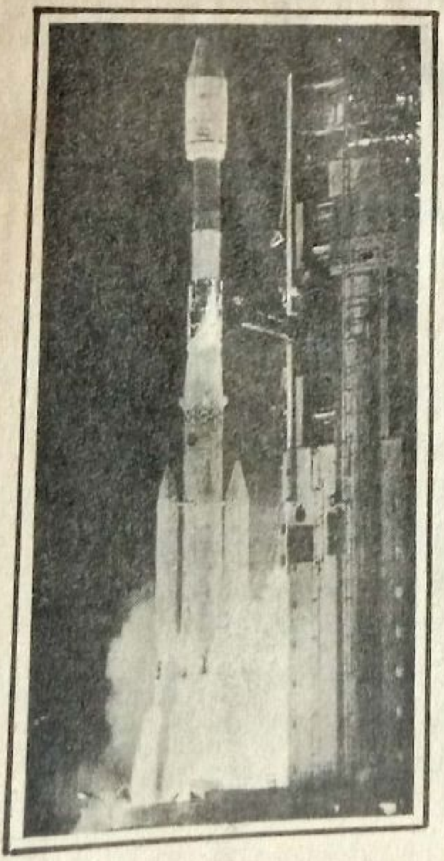


↑ पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा आयोजित कविता प्रतियोगिता में झांसी के पी. आर. शुक्ल को प्रथम पुरस्कार मिला।

भालू हैं तो क्या हुआ ! भाई-भाई की तरह गले तो मिल ही सकते हैं। →



भारत का इनसेट-२ बी उपग्रह। आजकल अंतरिक्ष में बखूबी काम कर रहा है। ←

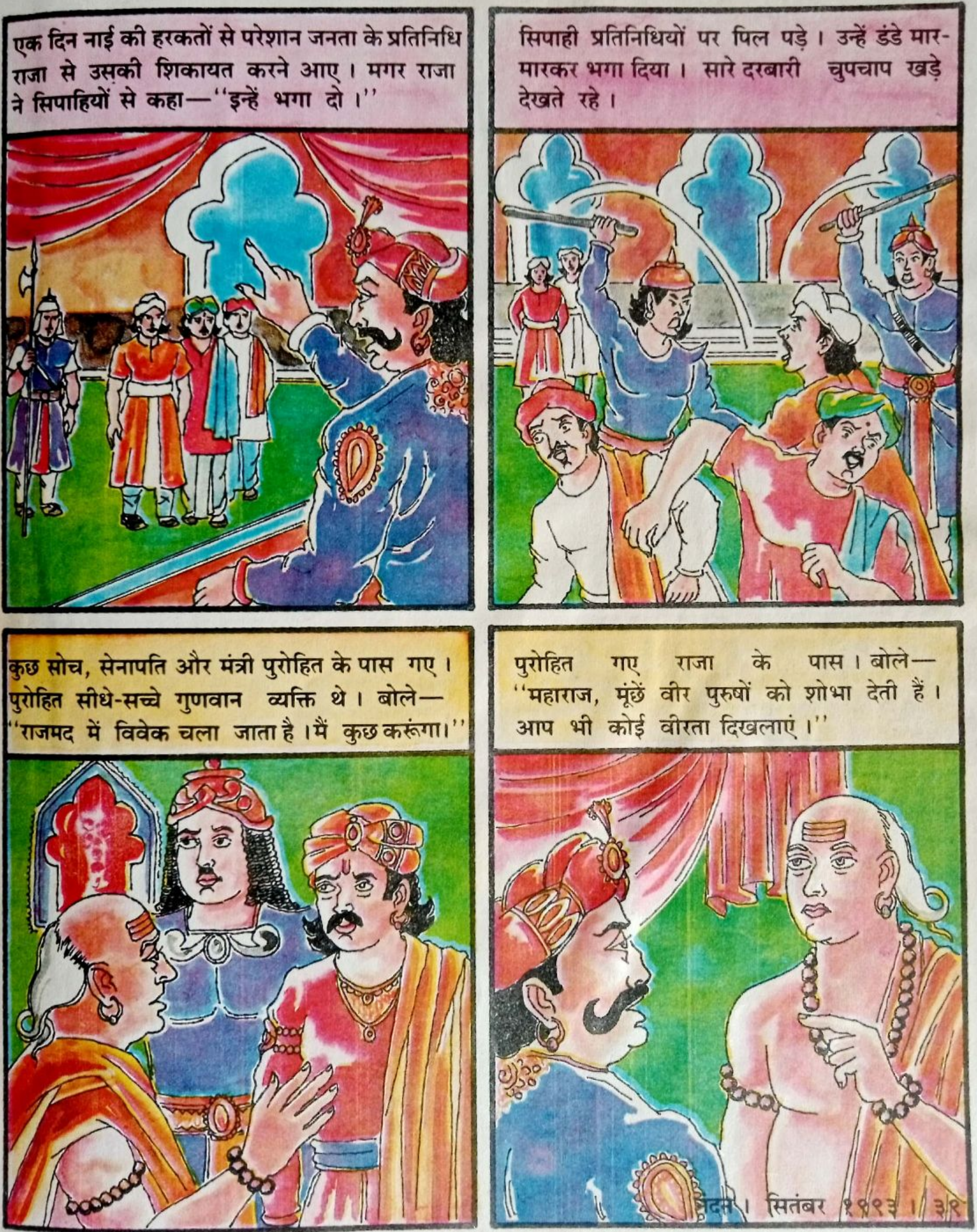


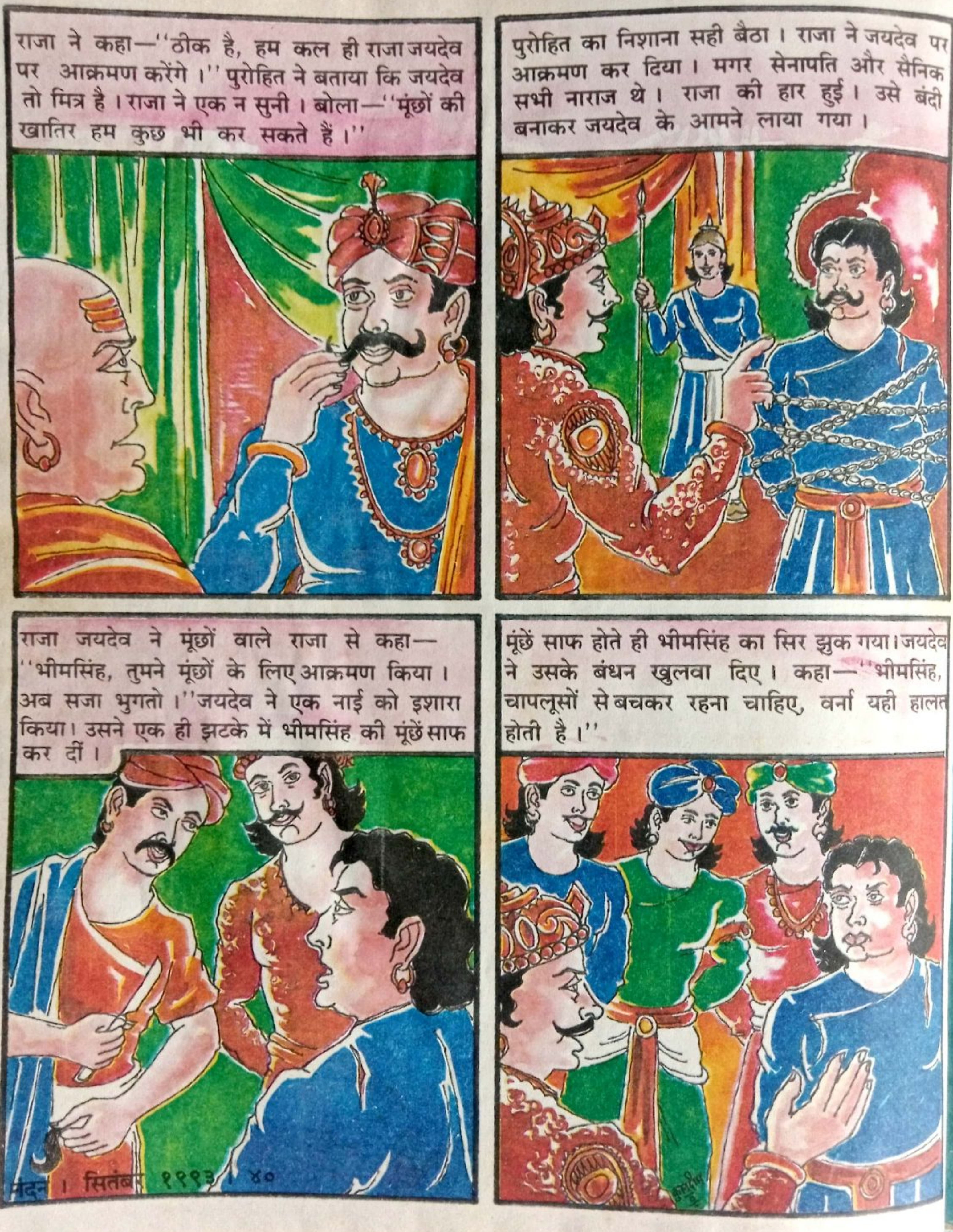


अहमदाबाद से स्केटिंग करते हुए बच्चे दिल्ली पहुंचे। वे राष्ट्रीय एकता का प्रचार कर रहे थे। ↑


हार गया भीम
एक था राजा । लम्बी-लम्बी मूंछों वाला । उसे अपनी मूंछों पर बड़ा गर्व था । महल में रहता, तो शीशे के आगे मूंछों को नुकीला करके ऊपर उठाता रहता ।
दरबारी जानते थे कि अपनी मूंछों की प्रशंसा सुनकर राजा बहुत प्रसन्न होता है, इसीलिए वे काम-धाम छोड़ उसकी मूंछों की प्रशंसा करते रहते थे ।
राजा का नाई था बड़ा मुंह लगा । एक दिन उसने कहा—''महाराज, मैंने सुना है, आपकी देखा-देखी बहुत से लोग लम्बी मूंछें रखने लगे हैं ।''
कोई उसकी बराबरी करे, यह बात कैसे सहन होती सनकी राजा को । हुक्म जारी किया—राजा के सिवा कोई लम्बी मूंछें नहीं रखेगा । नाई को आज्ञा दी—''जिसके लम्बी मूंछ देखो, सफा कर दो ।''


नाई को कई दरबारियों से बदला चुकाना था। पहले उसने सेनापति की लम्बी मूंछों पर कैंची चला दी। सेनापति कसमसाया तो बहुत, मगर राजा की आज्ञा।
इसके बाद नाई ने लम्बी मूंछ वाले दरबारियों को पकड़ा। किसी की मूंछें आधी कर दीं, तो किसी की बिल्कुल सफाचट। सब दहशत खाने लगे।
एक दिन मंत्री ने सेनापति और कुछ प्रमुख दरबारियों से सलाह की। सबका कहना था कि मूंछ-सफाया अभियान से जनता बड़ी परेशान है। कुछ करना चाहिए।
नाई और उसकी बिरादरी वालों ने इसका लाभ उठाना शुरू कर दिया था। लोग नाई और उसके साथियों को रिश्वतें देकर अपनी मूंछें बचाने लगे।


एक दिन नाई की हरकतों से परेशान जनता के प्रतिनिधि राजा से उसकी शिकायत करने आए। मगर राजा ने सिपाहियों से कहा—''इन्हें भगा दो।''
सिपाही प्रतिनिधियों पर पिल पड़े। उन्हें डंडे मार-मारकर भगा दिया। सारे दरबारी चुपचाप खड़े देखते रहे।
कुछ सोच, सेनापति और मंत्री पुरोहित के पास गए। पुरोहित सीधे-सच्चे गुणवान व्यक्ति थे। बोले—''राजमद में विवेक चला जाता है। मैं कुछ करूंगा।''
पुरोहित गए राजा के पास। बोले—''महाराज, मूंछें वीर पुरुषों को शोभा देती हैं। आप भी कोई वीरता दिखलाएं।''


राजा ने कहा—''ठीक है, हम कल ही राजा जयदेव पर आक्रमण करेंगे।'' पुरोहित ने बताया कि जयदेव तो मित्र है। राजा ने एक न सुनी। बोला—''मूंछों की खातिर हम कुछ भी कर सकते हैं।''
पुरोहित का निशाना सही बैठा। राजा ने जयदेव पर आक्रमण कर दिया। मगर सेनापति और सैनिक सभी नाराज थे। राजा की हार हुई। उसे बंदी बनाकर जयदेव के आमने लाया गया।
राजा जयदेव ने मूंछों वाले राजा से कहा—''भीमसिंह, तुमने मूंछों के लिए आक्रमण किया। अब सजा भुगतो।''जयदेव ने एक नाई को इशारा किया। उसने एक ही झटके में भीमसिंह की मूंछें साफ कर दीं।
मूंछें साफ होते ही भीमसिंह का सिर झुक गया। जयदेव ने उसके बंधन खुलवा दिए। कहा—''भीमसिंह, चापलूसों से बचकर रहना चाहिए, वर्ना यही हालत होती है।''

# चांदी की सींक

**— रामपाली भाटी**

लगभग पांच सौ वर्ष पुरानी बात है। जयपुर से पंद्रह कि. मी. दूर एक छोटा-सा कस्बा है सांगानेर। कभी वहां धन और यश के धनी जोगाजी जोशी नाम के व्यक्ति रहते थे। जोगाजी का एक बेटा था छतिर।

छतिर की बेटी का नाम सोदरा था। सोदरा जब विवाह योग्य हुई, तो उसकी सगाई आमेर राज्य के राज पुरोहित कानड़जी के पौत्र और श्रीधरजी के पुत्र हरबल्लभ से कर दी गई। शीघ्र ही विवाह का मुहूर्त निकाला गया। जब लड़के वालों के नाई ने समधी जोगाजी से पूछा कि बारात में कितने आदमी आएं, जोगाजी ने उत्साह में भरकर चावल से भरा एक थाल नाई की झोली में डालते हुए कहा— "इतने।"

निश्चित समय पर कानड़जी अपने पोते हरबल्लभ की बारात लेकर सांगानेर पहुंचे। बारात में बहुत आदमी आए थे। जोगाजी ने बारात के लिए अच्छी व्यवस्था की थी। बारातियों का स्वागत-सत्कार हुआ।

बारात जीमने के लिए बैठ गई। उन दिनों बड़े जीमन पत्तल-दोनों में ही किए जाते थे। जोगाजी ने बारातियों के जीमने के लिए कमल के हरे पत्तों को आपस में जोड़ने के लिए सींकों के स्थान पर चांदी की बनी पतली सींकें काम में ली थीं।

बारातियों ने जब ऐसे अद्भुत पत्तल-दोने देखे, तो वे चकित रह गए। उनमें से कुछ युवकों ने ताना मारा— "जब समधी जी ने पत्तल-दोनों में ही चांदी की सींकें लगवाई हैं, तो फिर जीमन भी सोने-चांदी का ही होना चाहिए।"

यह ताना जोगाजी ने सुना ,वह मुसकराए। भोजन-सामग्री से भरे भंडारों पर उन्होंने तुरंत ताले लगवा दिए। अपने बेटे छतिर से बोले— "हमें बारातियों की सभी मांगें पूरी करनी हैं। तुम बारातियों की पत्तलों में एक-एक सोने की मोहर और चांदी के दो-दो रुपए परोस दो।"

अब बारातियों के चकित होने की बारी थी। सोने की मोहर और चांदी के सिक्के परोसने के बाद वधू पक्ष की ओर से बारातियों को जीमने के लिए कहा गया। कानड़जी बारातियों के ताने का उत्तर अच्छी तरह समझ गए थे। उनके आदेश पर बारातियों ने कुछ देर जीमने का अभिनय किया। फिर हाथ धोकर उठ गए।

छतिर ने हाथ जोड़कर कानड़जी से कहा— "यह तो बात की बात थी समधी जी। अब आप इन बारातियों से कहिए कि वे इन मोहरों को अपनी जेबों में रख लें। हम बारातियों के भोजन की व्यवस्था करते हैं।" कानड़जी ने मित्रों से पूछा, तो उन्होंने कहा— "हम तो अभी भोजन करके उठे हैं। अब पत्तलों में जो कुछ भी पड़ा है, वह तो हमारी ऊंठ (जूठन) है। हम ऊंठ भला कैसे उठा सकते हैं?"

जूठन न उठती देखकर छतिर ने नाई से कहा— "खवास जी, कृपा करके इस जूठन को आप समेट लें।" नाई ने उत्तर दिया— "समधी जी, मैं लड़के वालों का नाई हूं। अपना काम अच्छी तरह से समझता हूं। जूठन उठाना मेरा काम नहीं है।"

जब कोई भी सोने-चांदी की जूठन उठाने को तैयार नहीं हुआ, तो जोगाजी ने अपने नौकरों से कहा— "तुम लोग यह जूठन यहां से साफ कर दो।" नौकरों ने जूठन में पड़े धन को समेट लिया।

बारात को फिर से बढ़िया पकवान जिमाए गए। इस तरह बाई सोदरा का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हो गया।

बारात विदा होने के बाद नौकरों ने एक पंचायत की। समस्या यह थी कि जूठन में मिले धन का क्या किया जाए। अंत में उन्होंने फैसला किया जैसे यह जूठन अद्भुत है ,वैसे ही अद्भुत काम में इस धन को लगाना चाहिए।

कुछ दिनों बाद नौकरों ने आपसी राय से जूठन में मिले धन से सांगानेर में रमणीय स्थान पर एक सुंदर बावड़ी बनवाई। इससे गांव वालों और राहगीरों को पानी की सुविधा हो गई। बावड़ी का नाम रखा गया— 'ऊंठ की बावड़ी।'

आज भी वह बावड़ी सांगानेर के स्टेडियम मैदान से मालपुरा दरवाजे के बाजार में आने वाली सड़क पर स्थित है। ●

# चालीस दिन

—सौरभ शर्मा 'निर्भय'



चांदनी का बचपन अकेले में गुजरा था। उसका भी मन गांव की लड़कियों के साथ खेलने को होता, पर जब वह उनके पास जाती, तो वे उसे देखते ही भाग जातीं। चांदनी खड़ी-खड़ी अपने भाग्य को कोसने लगती।

जब चांदनी विवाह योग्य हुई, तो उसके पिता जमींदार मणिसेन को चिंता हुई। वह अपनी सारी जायदाद उसके विवाह में देने को तैयार थे, फिर भी कोई चांदनी से विवाह करना नहीं चाहता था। बहुत जगह चांदनी के रिश्ते की बात चली, पर सब ओर से निराशा ही हाथ लगी। इन सब बातों का एक ही कारण था कि वह बदसूरत थी।

एक रोज गांव में एक साधु बाबा आए। उनके दर्शन के लिए पूरा गांव उमड़ पड़ा। चांदनी भी उनके पास पहुंची। बोली—"बाबा, देखिए मेरे हाथ में विवाह की कोई रेखा है या नहीं।"

साधु ने उसका हाथ देखा। फिर बोले—"बेटी, विवाह की रेखा तो है, पर बड़ी मुश्किल से तुम्हारा विवाह होगा।"

चांदनी ने और पूछा, तो वह बोले—"हां बेटी! जब तक तुम सुंदर नहीं होगी, तब तक तुम्हारा विवाह होना मुश्किल है।"

"मुझे सुंदर बनने के लिए क्या करना होगा?"—उसने उत्सुकता से पूछा।

—"बेटी, कठिन व्रत है। तुम वह व्रत कर सकोगी?"

—"मैं व्रत करने के लिए तैयार हूं।"

—"तुम्हें चालीस दिन तक अपना मुंह बंद रखना होगा। चालीस दिन जंगल में जाकर रहो। वहां रात में बिना पानी पिए चंद्रदेव की तपस्या करो।"

चांदनी ने साधु को प्रणाम किया और चली गई। वह घर पहुंची, तो मां ने पूछा—"कहां गई थी बेटी?" चांदनी ने कोई जवाब नहीं दिया। किसी से भी उसने बात नहीं की।

शाम होते ही चांदनी घर से निकल पड़ी। उसने किसी को कुछ नहीं बताया। वह एक जंगल में पहुंची। वहां झोंपड़ी बनाकर रहने लगी। चांदनी को न देखकर जमींदार परेशान हो गया। उसने आस-पड़ोस में सब जगह चांदनी की खोज करवाई। पर उसका कहीं कुछ पता न चला।

उधर जंगल में चांदनी दिन में भोजन की तलाश में मारी-मारी फिरती। जंगली फल खाकर अपना पेट भरती और रात होते ही नदी के किनारे बैठ जाती। चंद्र देव की तपस्या करती।

दिन बीतते गए। व्रत का उनतालिसवां दिन आया। उस दिन राजा कृष्णकांत शिकार करते-करते चांदनी की झोंपड़ी पर आ पहुंचे। उन्होंने सोचा—'यह लड़की कोई जादूगरनी है।' इसलिए कड़ककर उससे पूछा—"कौन हो तुम? यहां क्या कर रही हो?" चांदनी ने राजा की बात को सुनकर भी अनसुना कर दिया। इससे राजा का क्रोध और बढ़ गया। बोले—"जानती नहीं, मैं कौन हूं?"

राजा की आवाज इस बार और तेज हो गई। पर चांदनी पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। वह चुपचाप झोंपड़ी में चली गई और दरवाजा बंद कर लिया।

राजा कृष्णकांत सोचने लगे— 'पहली बार किसी ने मेरा इतना अपमान किया है। मैं कल इसको जेल में बंद करा दूंगा।' फिर कुछ देर बाद वह चले गए।

आज चांदनी की तपस्या की आखिरी रात थी। चांदनी तपस्या में लीन थी। तभी उसे लगा, जैसे उसे किसी ने आवाज दी हो। उसने आंखें खोलकर देखा। उसके सामने एक सुंदर आकृति खड़ी थी। सिर पर मुकुट, चमचमाते वस्त्र, पूरे शरीर पर चंदन का लेप।

"मैं चंद्र देव हूं चांदनी।"—आकृति ने कहा। इतना सुनते ही चांदनी ने हाथ जोड़ दिए। "मैं तुम्हारे व्रत से प्रसन्न होकर तुम्हारे मन की इच्छा को पूरा करता हूं।"—कहते हुए चंद्रदेव ने अपना दायां हाथ उठा दिया। चंद्रदेव की हथेली से एक ज्योतिपुंज निकला। वह चांदनी के शरीर में समा गया। चंद्रदेव अंतर्धान हो गए। चांदनी अपनी सुंदरता देख, फूली न समाई।

अगले दिन राजा सिपाहियों को लेकर चांदनी की झोंपड़ी पर आए। चांदनी मुंह फेरकर बैठी थी। "सिपाहियो! गिरफ्तार कर लो इसे। यह बहुत खतरनाक ....।" अभी राजा का वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि चांदनी ने मुंह घुमाकर राजा को देखा। राजा चांदनी को देखते ही अपनी सुध-बुध खो बैठे। उन्होंने इतनी सुंदर युवती पहले कभी नहीं देखी थी। वह आश्चर्य से बोले—"कल यहां एक बदसूरत लड़की थी, जो जादूगरनी लगती थी। कहां गई वह ?"

"मैं ही हूं वह लड़की।"—चांदनी ने धीरे से कहा।

"आप! यह कैसे सम्भव है? सच-सच बताओ, आप कोई जादू तो नहीं जानतीं ?"—राजा ने विस्मित होकर पूछा।

—"नहीं, मैं हरीपुर गांव के जमींदार मणिसेन की इकलौती पुत्री चांदनी हूं। यहां तो मैं एक व्रत को पूरा करने आई थी। इसीलिए कल मैंने आपकी किसी बात का जवाब नहीं दिया।" फिर चांदनी ने राजा को पूरी कहानी सुना दी।

कृष्णकांत अब तक अविवाहित थे। उन्हें चांदनी जैसी सुंदर लड़की की तलाश थी। चांदनी से अपने विवाह की बात चलाई। चांदनी बोली—"मैं पिता की आज्ञा के बिना कोई निर्णय नहीं ले सकती। इसलिए आपको पहले मेरे पिता से बात करनी होगी।"

कृष्णकांत चांदनी के साथ उसके पिता के पास पहुंचे। पहले तो जमींदार को विश्वास ही नहीं हुआ कि वह चांदनी है। राजा ने उसे चांदनी के व्रत की बात बताई, तब जाकर उसे विश्वास हुआ।

बातें सुनते ही जमींदार ने चांदनी का विवाह उनसे पक्का कर दिया।

कुछ दिन बाद बड़ी धूमधाम से राजा और चांदनी का विवाह हो गया। चांदनी अब रानी बन गई थी। फिर भी वह सब से मीठा बोलती थी। ●





# पानी-पानी

—राकेशकुमार श्रीवास्तव

सऊदी अरब में निजामुद्दीन अली नाम का एक फल का व्यापारी रहता था। वह कई बाग-बगीचों का मालिक था। उसके एक बाग में पानी का एक छोटा-सा ताल भी था। निजामुद्दीन का एक ही बेटा था—अलाउद्दीन।वह नाना के पास रहता था।

अलाउद्दीन की मां बचपन में ही चल बसी थी। निजामुद्दीन का एक नौकर था अब्दुल रशीद। वह भी निजामुद्दीन की ही तरह कंजूस था। निजामुद्दीन उसके सुझावों पर अमल भी करता था।

एक दिन निजामुद्दीन उदास बैठा था। तभी रशीद ने पूछा—"हजूर, आखिर बात क्या है ? इधर कई दिनों से आपको उदास देख रहा हूं।"

—"अब्दुल, इस साल कारोबार में हानि हुई है। समझ में नहीं आता कि इसकी भरपाई कैसे होगी ?"

अब्दुल बोला—"हुजूर ! आपके पास एक बहुत बड़ी पूंजी है। क्यों न हम हानि की भरपाई उसी से करें ? अपने ताल के पानी का व्यापार कैसा रहेगा ?"

—"पानी का व्यापार ? कैसी बातें करते हो ?"

—"मालिक, यदि इधर आने-जाने वाले व्यापारियों से पानी के बदले पैसे लें, तो अच्छी आमदनी हो सकती है।"

अगले दिन ही ताल के चारों ओर एक मजबूत बाड़ लग गई। व्यापारियों और राहगीरों से पानी के बदले पैसा वसूलने का जिम्मा अब्दुल पर था।

देखते ही देखते निजामुद्दीन अली का खजाना बढ़ता चला गया। यह सिलसिला वर्षों तक चला। अब निजामुद्दीन बूढ़ा हो गया था। एक दिन ऊंट पर सवार एक युवक व्यापारी ताल के पास पहुचा। वह प्यास से बेचैन था। 'पानी-पानी' कहता हुआ वह गिर गया।

"पानी यहां बेमोल नहीं मिलता जनाब !"—अब्दुल व्यापारी से बोला।

—"पानी के बदले कितने दीनार लोगे ? जो कुछ लेना हो, जल्दी कहो और मुझे पानी दे दो।"

"ठीक है, मैं अभी आया।"—कहता हुआ अब्दुल निजामुद्दीन के पास गया।

"हुजूर ! एक व्यापारी पानी पीने आया है। खुद को अरब का बतलाता है। वह बहुत धनी लगता है।"—अब्दुल ने अपने मालिक से कहा।

"उससे जाकर कहो, पानी के बदले सारी दौलत हमें सौंप दे।"—निजामुद्दीन बोला।

अब्दुल भागा-भागा ताल पर पहुंचा। युवक से बोला—"पानी पीना है, तो अपना सारा धन मुझे सौंप दो।"

—"ठीक है भाई। तुम मेरा सारा धन ले लो।"

अब अब्दुल का लालच और बढ़ गया। वह बोला—"मैं तुम्हें पानी दे दूंगा, लेकिन तुम्हें अपना ऊंट भी देना होगा।"

—"ठीक है, तुम ऊंट भी ले लो।"

अचानक अब्दुल की नजर युवक के गले में लटकी सोने के ताबीज पर पड़ी। व्यापारी उसके मन को ताड़ गया। बोला—"तुम कैसे आदमी हो ? तुममें तनिक भी दया नहीं। अच्छा, यह सोने का ताबीज भी ले लो।।" कहते हुए व्यापारी ने ताबीज उसे दे दिया। वह ताबीज लेकर निजामुद्दीन के पास पहुंचा। बोला—"हुजूर, आज आप मालामाल हो गए। अब मुझे भी भरपूर बख्शीश मिलनी चाहिए।" उधर व्यापारी अपना सब कुछ अब्दुल को देकर भी

प्यासा छटपटा रहा था।

"आज तुम बहुत खुश हो?"—मालिक ने पूछा।

"बात ही ऐसी है हुजूर !"—कहते हुए अब्दुल ने दीनारों की थैली और ताबीज उसके हाथ में रख दिया। निजामुद्दीन ने ताबीज को उलट-पलटकर देखा, तो उसे सांप सूंघ गया —"अरे ! यह तो मेरे बेटे अलाउद्दीन का ताबीज है।"

निजामुद्दीन तुरंत ताल पर पहुंचा। पर यह क्या ? वहां तो उसका बेटा बेसुध पड़ा था। यह देख वह सकपका गया। उसने अब्दुल को देखा। फिर बोला—"जाओ, जल्दी से किसी वैद्य-हकीम को बुलाकर लाओ।"

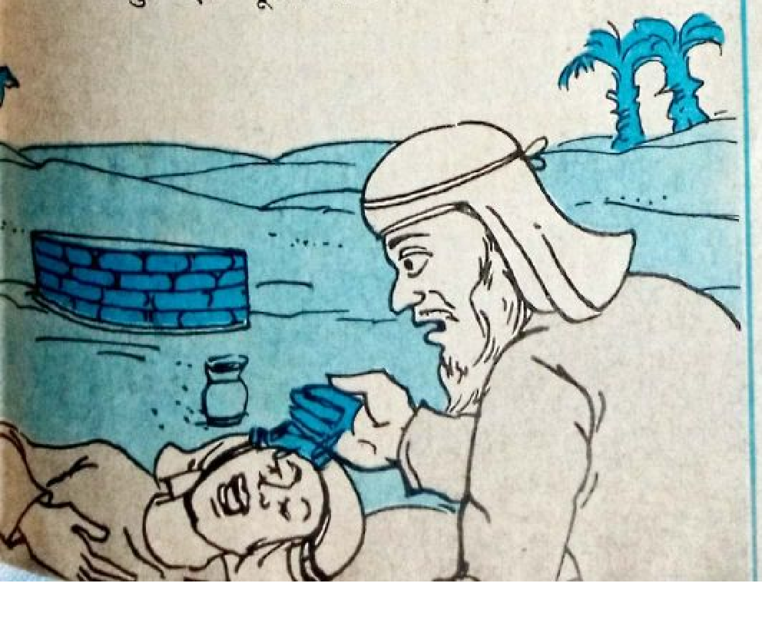
अब्दुल फौरन ऊंट पर बैठा। अब उसका ऊंट शहर की ओर भाग रहा था।

निजामुद्दीन ने अपने बेटे का सिर अपनी गोद में रखा।

तभी एक फकीर ने आवाज दी—"पानी-पानी"। निजामुद्दीन तुरंत उठा। फकीर को पानी पिलाते वह फूट-फूटकर रो पड़ा। फकीर ने पूछा, तो वह बोला—"फकीर बाबा ! मैं अपने पापों का ही फल भोग रहा हूं। मेरे लालच ने मेरा इकलौता बेटा भी मुझसे छीन लिया। मैं बर्बाद हो गया।"

फकीर ने निजामुद्दीन को समझा-बुझाकर शांत किया। फिर उसने आंखें बंद कीं। कुछ देर बाद आंखें खोलीं। अपना हाथ पानी में डाला। बेहोश पड़े निजामुद्दीन के बेटे पर उसने पानी के छींटे मारे।

कुछ देर बाद अलाउद्दीन ने आंखें खोल दीं। पिता-पुत्र एक दूसरे से मिलते ही रो पड़े। ●



# दो में एक

—डा. ओमप्रकाश सिंहल

चीन का सूच ओ शहर एक ऐतिहासिक नगर है। बहुत से कवियों ने इसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर कविताएं लिखी हैं।

इस शहर की सबसे सुंदर जगह है हू छि यू। किसी जमाने में इसे हे योंग सान कहते थे। हे योंग सान का मतलब है, समुद्र में से उठती पहाड़ी। कहते हैं कि कभी यहां एक विशाल समुद्र था। एक दिन उसके बीचोंबीच एक छोटा-सा टापू उठा। समुद्र की तेज लहरों ने उसे बेहिसाब थपेड़े मारे, पर वह अपनी जगह से न हिला।

इस पहाड़ी पर दो शेर रहते थे—एक सफेद और दूसरा हरा। सफेद शेर दुष्ट था। दूसरों को सताने में उसे खूब मजा आता था। वह कभी पहाड़ी पर चर रही भेड़ों को मार डालता। कभी गायों के झुंड पर हमला बोलता। कभी पशुओं के हंसते-खेलते बच्चों को मार गिराता। पशु उससे लुक-छिपकर रहने लगे।

जब शेर को पहाड़ी पर मनमानी करने का मौका न मिलता, तो पड़ोस के गांव में चला जाता। वहां भी खूब तबाही मचाता। न बच्चों को छोड़ता, न बूढ़ों को। जिस किसी को भी देखता, उसे धर दबोचता। गांव वाले भी उसके उत्पात से परेशान हो गए।

पहाड़ी पर एक बौद्ध भिक्षु तपस्या कर रहे थे। उनका नाम था वेन छू। शेर के उत्पात से केवल वही बचे थे। क्योंकि हरा शेर उन्हें अपना गुरु मानता था और हर समय उनकी रखवाली करता रहता था। शक्ति और साहस में सफेद शेर उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। उसका ध्यान आते ही सफेद शेर को उधर देखने की हिम्मत तक न होती।

हरा शेर दयालु था। सफेद शेर के उत्पात की कहानियां उसके कानों तक पहुंचतीं, तो वह उदास हो जाता। उसका मन करता कि वह सफेद शेर को अपनी करनी का फल चखाए। वह सोचता कि सफेद शेर का काम तमाम करके पहाड़ी के पशुओं और गांव के लोगों पर हो रहे अत्याचार को हमेशा के लिए खत्म

कर दिया जाए। लेकिन गुरु की अनुमति के बिना वह कुछ नहीं कर सकता था।

एक दिन हरे शेर ने अपने गुरु को सफेद शेर के अत्याचार की कहानी सुनाई। फिर उससे लड़ने की अनुमति मांगी। लेकिन उसके गुरु थे सच्चे बौद्ध, दया के अवतार। उनके मन में दुष्टों के लिए भी दया का भाव था। वह अपने शत्रु का भी बुरा नहीं सोचते थे। इसीलिए वह बोधिसत्व कहलाते थे। उन्होंने हरे शेर को सफेद शेर से लड़ाई करने की अनुमति नहीं दी।

एक दिन वेन छू समाधि में बैठे थे। हरा शेर उनके पास बैठा रखवाली कर रहा था। सहसा उसने रोने-चीखने की आवाज सुनी। धीरे-धीरे आवाज तेज होती गई। हरा शेर समझ गया कि सफेद शेर ने गांव में जाकर फिर उत्पात मचाया है। उससे रहा न गया।

हरा शेर मन में रह-रहकर यही विचारता रहा कि यह अत्याचार खत्म होना ही चाहिए। पर वह क्या करे? गुरु तो समाधि में बैठे थे। उनसे अनुमति मांगेगा, तो उनकी समाधि टूट जाएगी। अपने आप तो



पता नहीं वह कब उठेंगे। दिन, हफ्ते और महीने तो क्या, कई साल तक भी चलती रह सकती है यह समाधि। इतने में तो यह गांव ही समाप्त हो जाएगा।

हरा शेर सोचते-सोचते परेशान हो गया कि क्या करे, क्या न करे। आखिर उसने फैसला कर लिया। दूसरों का भला करने में देरी नहीं होनी चाहिए। बुराई को जितनी जल्दी दूर कर सको, उतना ही अच्छा है। उसने गुरु के सामने सिर झुकाया। फिर वहां से चल दिया।

हरा शेर सीधा सफेद शेर की मांद के सामने पहुंचा। उसने जोर से दहाड़ कर सफेद शेर को लड़ने की चुनौती दी। सफेद शेर मांद से बाहर निकल आया। उसने चुनौती स्वीकार कर ली। दोनों ने अपने-अपने जौहर दिखाए। कभी हरा शेर बाजी मार ले जाता, तो कभी सफेद शेर।

कई घंटे तक उठा पटक होती रही। आखिर में सफेद शेर का शरीर लहू-लुहान हो गया। उसमें लड़ने की ताकत नहीं रही। फिर भी उसने हार नहीं मानी। लड़ता ही रहा। सहसा वह संतुलन खो बैठा और जमीन पर लुढ़क गया। यह देखकर हरा शेर खुश हो गया।

वेन छू को योग बल से यह पता लग गया कि हरा शेर सफेद शेर से लड़ने गया है। उन्होंने सोचा कि इस समय हरे शेर को उपदेश की सख्त जरूरत है। वह समाधि से उठे और सफेद शेर की मांद वाले रास्ते पर चल दिए।

सफेद शेर को मार गिराने के बाद हरा शेर भी उसी रास्ते से लौट रहा था। वह यह सोचकर बहुत खुश हो रहा था कि अब गांव के लोग सुख की सांस ले सकेंगे। तभी अचानक उसे अपने गुरु के दर्शन हो गए।

वेन छू को बिना बताए ही सब कुछ पता लग चुका था। वह यह सोचकर दुखी थे कि उनके शिष्य ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का पालन नहीं किया।

यह सोचते ही वेन छू ने एक मंत्र पढ़ा। हरा शेर हरी पहाड़ी में बदल गया। आज भी लोग इसे हरी पहाड़ी कहते हैं।

(चीन)



# बदले में हाथी

—सावित्री चौधरी

उस रोज भीषण गरमी थी। आसमान से जैसे आग बरस रही थी। घर से बाहर निकलना मुश्किल था।

उसी दिन राजा भोज के एक दरबारी कवि को किसी काम से नगर से बाहर जाना पड़ा। किंतु दरबार में उसी दिन हाजिर होने के लिए उनका वापस आना भी जरूरी था। इस कारण उस धधकती दोपहरी में ही, राजकवि नगर के लिए रवाना हो गए। गरमी के मारे पसीना-पसीना हो रहे थे। वह तेज गति से नगर की ओर बढ़े जा रहे थे।

थोड़ी दूरी तय कर पाए थे कि उनकी निगाह कमजोर वृद्ध पर जा ठहरी। वह नंगे पांव चल रहा था। बेचारा वृद्ध पांव जलने के कारण ठीक से नहीं चल पा रहा था। धरती की तपन से पांवों को बचाने के लिए उसने भागने की कोशिश की, परंतु कमजोरी के कारण गिर पड़ा।

राजकवि को उस वृद्ध की हालत देख बड़ा तरस आया। वह लपककर उसके पास पहुंचे। अपने जूते उतारकर उसे थमाते हुए कहा—"बाबा जी, इन्हें पहन लें। इससे आपके पांवों की जलन कुछ कम हो जाएगी।"

अपने जूते उसे देते समय राजकवि ने अपने पांवों के बारे में कतई नहीं सोचा। वह जीवन में बिना जूतों के कभी एक कदम भी नहीं चले थे। नगर की सीमा तक पहुंचते-पहुंचते उनके पांव छालों से भर गए। चलने से पांवों में भारी पीड़ा होने लगी।

फिर भी राजकवि को अपने दान पर तनिक भी पछतावा या रंज न था।

हां, रह-रह कर उनके चेहरे पर असीम वेदना के भाव छा जाते। पर वह मन में बड़े मगन हो रहे थे कि उन्होंने आज एक दुखी आदमी की सहायता की है।

तभी सामने से एक महावत राजा भोज के हाथी को लेकर आ रहा था। वह राजकवि को तुरंत पहचान गया। चिलचिलाती धूप में उनको नंगे पांव चलते देखा, तो बड़ी खुशामद करके उन्हें हाथी पर बैठा लिया। तब कहीं राजकवि की जान में जान आई।

उसी दिन दोपहर में राजा भोज भी हाथी पर बैठे नगर का दौरा कर रहे थे।

संयोग से नगर द्वार पर ही राजा भोज और राजकवि का सामना हो गया। "वाह कवि जी आप हाथी पर बिराजे हैं!"—राजा भोज ने हंसकर कहा। फिर उत्सुकता से पूछा—"आपको हाथी मिला कैसे?"

"जूते देने पर।"—राजकवि ने अपने नंगे पांवों की ओर इशारा करके हंसकर कहा।

—"क्या कहा, जूते देने पर? मैं समझा नहीं।"

राजा भोज को हैरान होते देखकर, कवि ने हाथ जोड़कर कहा—"राजन, कुछ देर पहले एक दीन-हीन वृद्ध को धूप में नंगे पांव चलते देखकर, मैंने अपने जूते उसे दान कर दिए। शायद उन जूतों का प्रताप है कि आपके इस महावत ने मुझे नंगे पांव चलते देख, हाथी पर बैठा लिया।"

राजकवि का दया भाव देखकर, राजा भोज निहाल हो गए। उन्होंने उसी क्षण वह हाथी कवि को ईनाम में दे दिया। ●

# चटपट

□ एक पड़ोसिन—बहन जी, मुझे आप से एक शिकायत है।

दूसरी पड़ोसिन—बहन, एक शिकायत भी क्या करनी ? तीन-चार शिकायतें इकट्ठी ही कर देना।

□ एक मित्र—कल हमने मेहमानों के लिए ढेर सारा खाना बनाया था, वे आए नहीं। सब फेंकना पड़ा।

दूसरा मित्र—मुझे बुला लिया होता, तो तुम्हें कम से कम खाना फेंकने का कष्ट तो न उठाना पड़ता।

□ दुकानदार— बिल्कुल ताजी जलेबियां हैं, साहब कितनी तोल दूं ?

ग्राहक— कितनी ताजी हैं, यह तो जलेबियों पर भिनभिनाती मक्खियां ही बता रही हैं।

□ रोगी—डाक्टर साहब, आपने मुझे दो इंजेक्शन क्यों लगाए थे ?

डाक्टर—एक बेहोशी का था और दूसरा होश में आने का।

□ पिता—बेटा, तुम्हें स्कूल से भागकर नहीं आना चाहिए था।

बेटा—ठीक है, अब मैं धीरे-धीरे चलकर आया करूंगा।

□ मैनेजर—क्यों साहब ! यह होटल आपको कैसा लगा ?

यात्री—बहुत अच्छा लगा, पर एक कमी है। यहां से बाहर जाने का एक ही रास्ता है और उस पर भी हमेशा संतरी बैठा रहता है।

□ अध्यापक—यदि रात और बड़ी होने लगे, तो क्या होगा ?

छात्र—पहरेदार को ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। और हमें सोने के लिए ज्यादा समय मिलेगा।

□ दारोगा—पहले लड़ते हो, फिर यहां माफी मांगने चले आते हो ?

अभियुक्त—ऐसी बात है, तो अब मैं किसी से लड़ने से पहले ही आपसे माफी मांग लूंगा।

□ नरेश—सुनील, तुम्हारा दोस्त है बहुत खराब। कल मैं उसके पास चंदे के लिए गया था। उसने खाली हाथ लौटा दिया।

सुनील—गनीमत है, मैंने कल अपने नौकर को उसके घर रुपए लाने भेजा था। वह अभी तक नहीं लौटा।

□ एक यात्री—आपके पास कल का और आज का भी अखबार है, ऐसा क्यों ?

दूसरा—आज का अखबार तो मैं पढ़ूंगा, कल का अखबार आप जैसे लोगों के लिए है।

□ मां—बेटा, जेब में से पांच रुपए निकाल लो।

बेटा—अच्छा मां, यदि पांच का न मिला, तो दस का नोट ले लूंगा। फिर मैं और पिंकी आधा-आधा कर लेंगे।

□ मां—बेटा, हमेशा कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

बेटा—इसीलिए तो मैं हमेशा आराम करता रहता हूं।

□ एक सहेली—मेरा मन तो बाग में हवा खाने को कर रहा है।

दूसरी सहेली—कोई बात नहीं। तुम वहां हवा खाना और मैं आम खाऊंगी।

□ सुनार—मनोहर, सोने की अंगूठी ले गए थे। उसके दाम कब चुकाओगे ?

मनोहर—जैसे ही पीतल की अंगूठी पर चढ़ी सोने की पालिश उतर जाएगी।

□ पिता— बेटा, तुम स्कूल की दौड़ में दूसरे स्थान पर कैसे आ गए ?

बेटा— पिता जी, जो लड़का पहले स्थान पर आया, मैंने पीछे से उसकी बनियान पकड़ रखी थी। बस, उसके बाद तो मेरा दूसरा नम्बर ही आना था।

□ अध्यापक— रामू, तुम्हारे पिता क्या काम करते हैं ?

रामू— जो काम मम्मी नहीं कर पातीं, वे सारे काम पिता जी करते हैं।

□ अजय— विजय, तुम तो कहते थे कि मंत्री जी को तुम जानते हो, पर उन्होंने तो तुम्हें पहचाना तक नहीं।

विजय— पर मैंने यह तो नहीं कहा था कि मंत्री जी भी मुझे जानते हैं।

# तेनालीराम ३०५

## पुरानी हवेली



एक बार नगर सेठ ने राजा कृष्णदेव राय से अकेले में फरियाद की— "मंत्री ने मुझ से बिना लिखत-पढ़त के दो लाख मुद्राएं उधार ली थीं। बदले में विशाखा की पुरानी हवेली रेहन रखी थी। कई वर्ष बीतने पर जब उसने ऋण नहीं चुकाया, तो मैंने हवेली पर कब्जा करना चाहा। किंतु पता चला, वह हवेली मंत्री की नहीं, राज्य की सम्पत्ति है। आप न्याय कीजिए, मैं क्या करूं। एक तरफ मंत्री से शत्रुता, दूसरी ओर नुक्सान।"



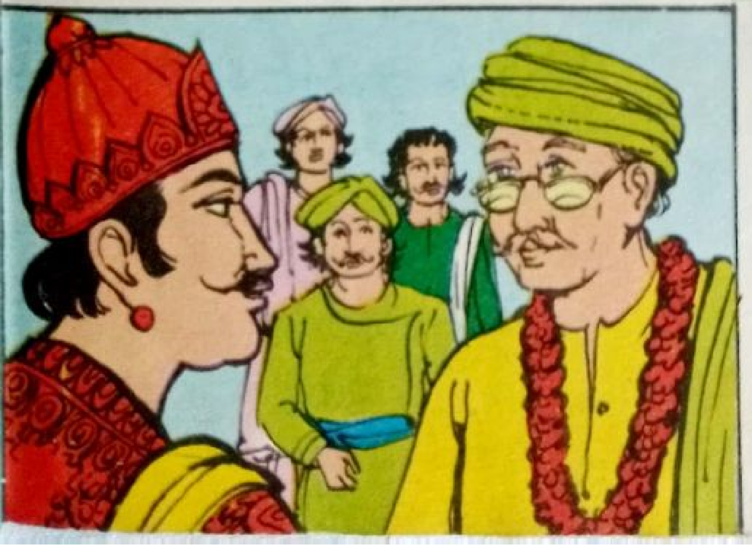
सुनकर राजा परेशान हो गए। मंत्री पर खुले दरबार में आरोप लगे तो राज्य की बदनामी। उल्टे वह नगर सेठ से खार खा बैठेगा। राज्य वक्त जरूरत काम आने वाले नगर सेठ से हाथ धो बैठेगा। नगर सेठ को चुप रहने को कहें, तो यह न्याय नहीं होगा। ऐसी समस्या उनके सामने कभी नहीं आई थी। पड़ौसी राजाओं से युद्ध जैसी स्थिति बन रही थी। ऐसे में वह न मंत्री से पूछताछ कर सकते थे, न उसके विरुद्ध छानबीन करा सकते थे।

हारकर उन्होंने तेनालीराम को बुलाया। सारी बातें उससे कह, पूछा— "ऐसी हालत में क्या करना चाहिए ?"



तेनालीराम ने कुछ सोचकर राजा को योजना बता दी। अगले ही दिन राज्य में मुनादी होने लगी— "विशाखा की पुरानी हवेली की नीलामी होगी। जो सबसे ऊंची बोली लगाएगा, हवेली उसे दे दी जाएगी।"

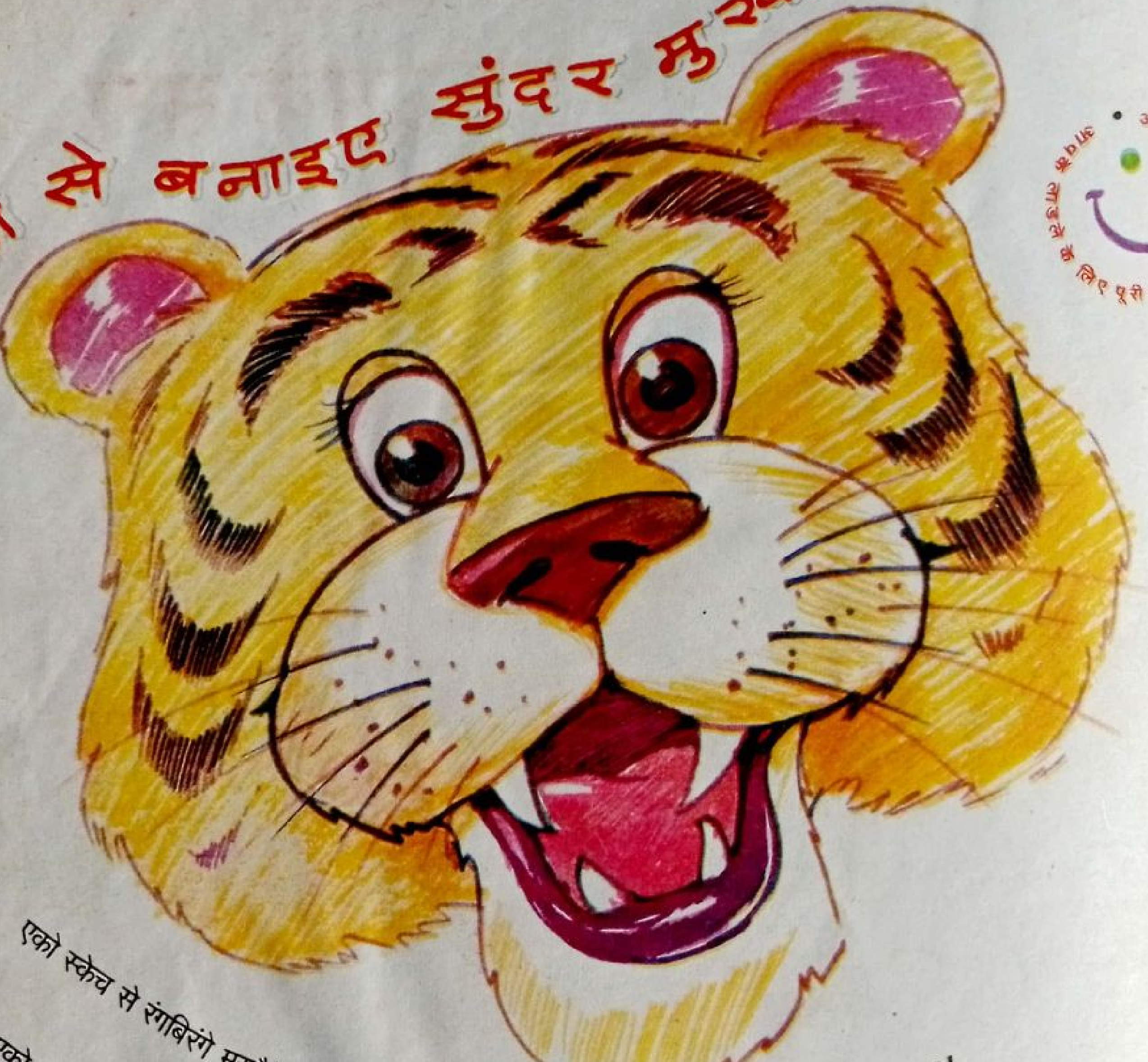
मंत्री ने यह घोषणा सुनी, तो उसके होश उड़ गए— 'यदि नगर सेठ को हवेली की नीलामी के बारे में पता चल गया, तो वह दरबार में जाकर सारी पोल खोल देगा। हवेली पर अपना दावा करेगा।'



उसने तुरंत जाकर नगर सेठ का समूचा ऋण चुका दिया। यह बात राजा कृष्णदेव राय को पता चली, तो उन्होंने हवेली नीलाम करने की घोषणा रुकवा दी। अगले दिन दरबार में तेनालीराम का भव्य सम्मान किया। सिर्फ इतना कहा कि उसने हमें अब तक की सबसे बड़ी उलझन से उबार लिया।

उलझन कौन-सी थी, इसके बारे में किसी को कभी पता न चल सका।

# एको से बनाइए सुंदर मुखौटे!



एको स्केच से रंगबिरंगे मुखौटे न केवल बनाना आसान... बल्कि ये है मौज-मस्ती का सामान!
एको – अनेक सुंदर रंगों में १२, २४ और ३० के पैक में उपलब्ध.
और एको की सबसे बड़ी खूबी, ये हैं वॉटर-बेस रंग और अविषैले भी यानी
इनका इस्तेमाल भी नन्हें-मुन्नों के लिए पूरी तरह सुरक्षित है!
और फिर जब मम्मी देखेंगी आपका कमाल... तो खुशी से होगा बुरा हाल!

एको – मौज़मस्ती का बेहिसाब हंगामा!

तो आओ बच्चो... हजारों इनाम जीतो!




**Ekco**®

आपकी कला की सुंदर अभिव्यक्ति.

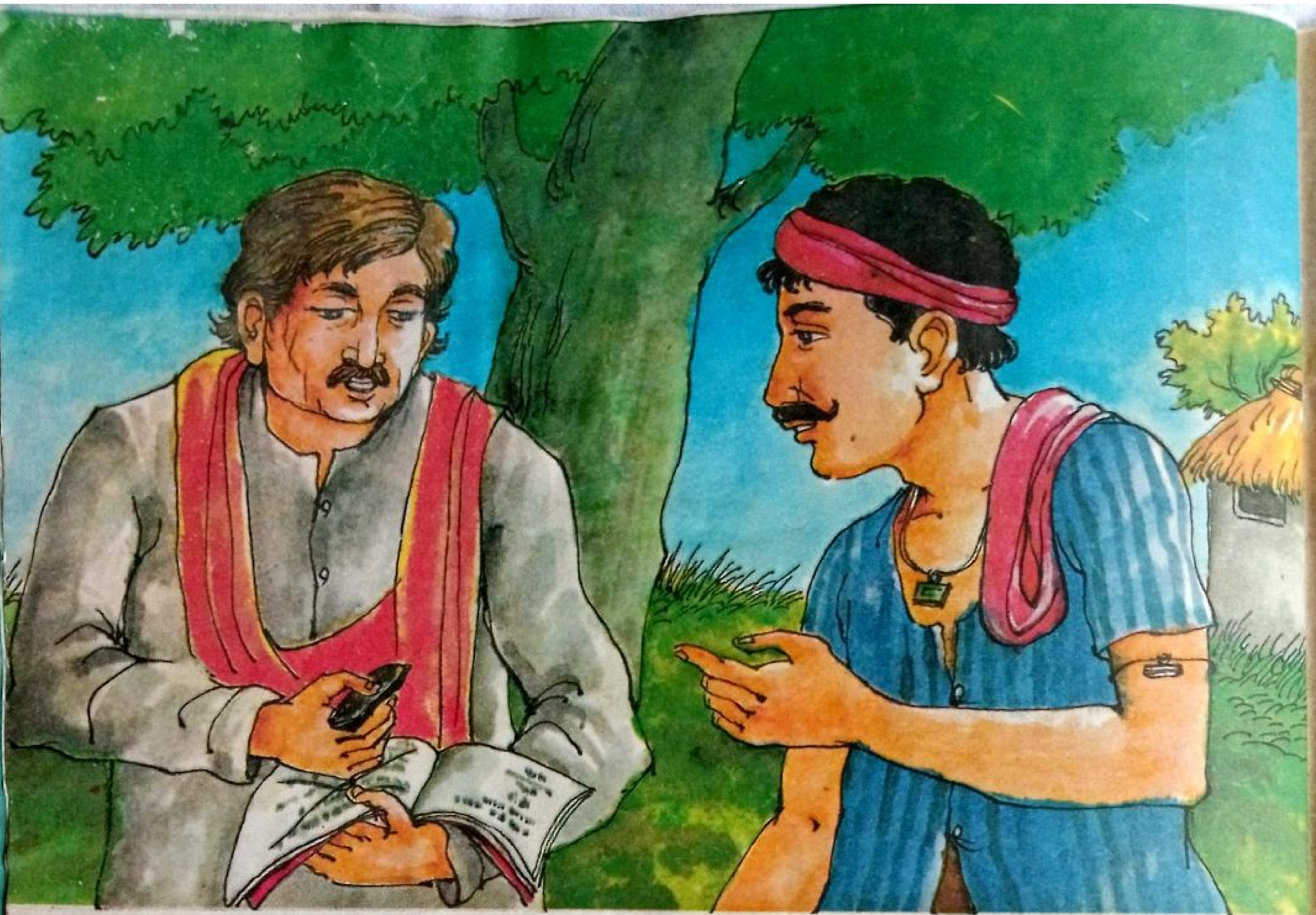








VAMICOL
ART AND CRAFT ADHES
50 gm.
VAMICOL



# फैसला

—हरिवल्लभ बोहरा 'हरि'

जैसलमेर राज्य का काठोड़ी गांव । इसी गांव में रहता था हीरालाल । वह रुपयों के लेन-देन का व्यवसाय करता था । कभी किसी मामले में उसके मन में खोट नहीं आया था । हर जरूरतमंद की वह सहायता करता था । मगर उस का पुत्र कन्हैयालाल पिता के गुणों से ठीक विपरीत था ।

एक बार गांव के एक किसान वासुदेव की बड़ी बेटी की शादी थी । वासुदेव ने हीरालाल से थोड़ा-सा धन उधार लिया । हीरालाल ने धन देकर अपने बहीखाते में लिख लिया । वासुदेव का अंगूठा लगवा लिया । काफी समय बीत गया, इस बात को ।

एक दिन हीरालाल पड़ोस के गांव में अपनी रकम वसूल करने जा रहा था । वह वासुदेव के खेत के पास से होकर गुजरा । वासुदेव उस दिन खेत पर ही काम कर रहा था । हीरालाल को देख वासुदेव उसके पास गया । प्रणाम करके कहने लगा—"सेठ जी ! मैं काफी दिनों से आपकी ड्योढ़ी पर आने की सोच रहा था, पर क्या करूं ? अकेला आदमी हूं । खेत नहीं छोड़ सकता । यह लीजिए आपका धन, जो मैंने बिटिया की शादी पर उधार लिया था । ब्याज सहित जमा कर लीजिए ।" कहकर उसने अपनी गांठ में दबी रुपयों की थैली हीरालाल को सौंप दी ।

हीरालाल ने थैली से रुपए निकाल कर गिने । संतुष्ट होकर रख लिए । वहीं खेत पर खड़े-खड़े उसने बहीखाता खोलकर वासुदेव के खाते पर कोयले के

टुकड़े से लकीरें खींच दीं। वासुदेव को दिखाता हुआ बोला—"देख ले, भाई वासु ! तेरा रुपया जमा करके मैंने खाता बंद कर दिया है।"

कुछ समय बाद हीरालाल की मृत्यु हो गई। सारा कारोबार कन्हैयालाल के हाथ में आ गया। पुराने खातों की छानबीन करते-करते एक दिन उसे वासुदेव का खाता दिखा। बहुत अधिक समय बीत जाने के कारण रकम पर खींची हुई कोयले की लकीरें एकदम मिट-सी गई थीं। उन्हें देख, कन्हैयालाल के मन में कपट जाग उठा। उसने कुछ महीने और इंतजार करना ठीक समझा। ताकि कोयले की रही-सही झलक भी मिट जाए।

लगभग छह माह बाद वह एक दिन वासुदेव के घर जा धमका। रुपयों का तकाजा किया। कन्हैयालाल की बात सुनकर वासुदेव चकरा गया। उसने हाथ जोड़, विनती की—"मैं तो रुपए सेठ जी को लौटा चुका था।"

वासुदेव की बात सुनकर कन्हैयालाल आग बबूला हो उठा। जोर-जोर से अनाप-शनाप बकने लगा। धीरे-धीरे झगड़ा बढ़ता गया और बात राजा के कानों तक जा पहुंची।

उन दिनों जैसलमेर राज्य पर महारावल मूलराज का शासन था। महारावल बड़े ही विद्वान और न्यायप्रिय शासक थे। उन्होंने बड़े ध्यान से पूरे विवाद को सुना। बहीखाते को भी देखा। फिर सोचकर बही अपने पास रख ली। दोनों को दूसरे दिन दरबार में आने को कहा।

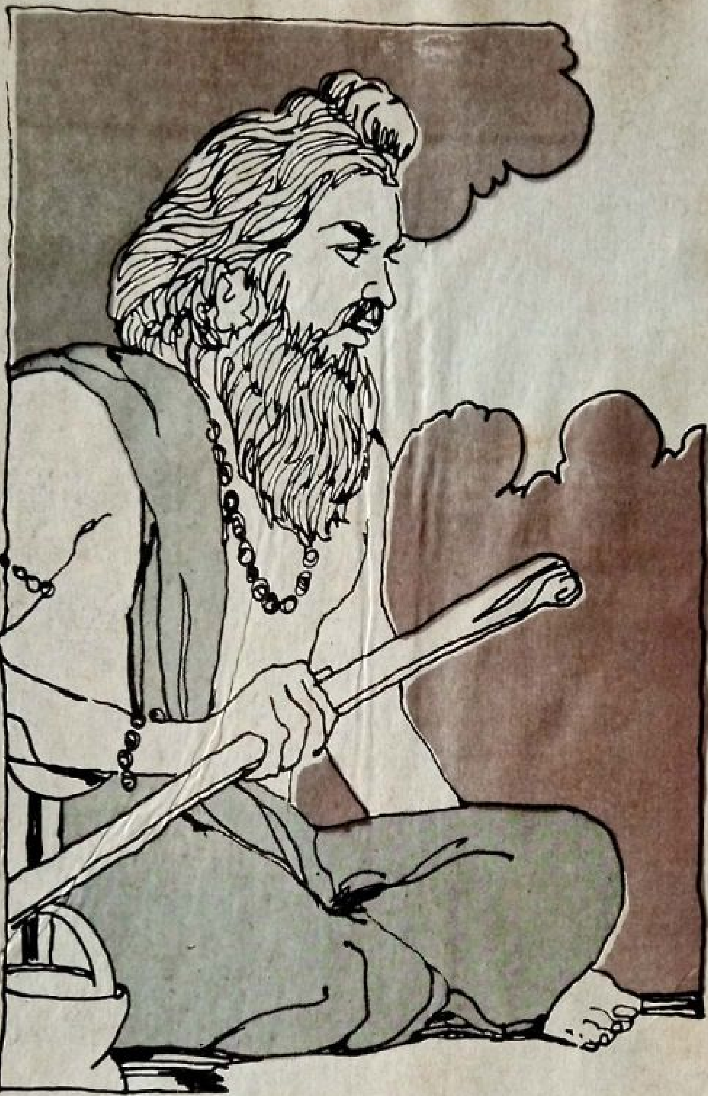
दूसरे दिन जब दरबार लग चुका, तो वासुदेव और कन्हैयालाल दोनों दरबार में हाजिर हुए। उन दोनों को देखकर महारावल ने कन्हैयालाल को कैद करने का आदेश दे दिया। आदेश सुनकर दरबारी और स्वयं कन्हैयालाल चकरा उठे।

महारावल ने गुस्से में भरकर कहा—"कन्हैयालाल धूर्त और कपटी है। यह जानता है कि वासुदेव इसके पिता को ब्याज सहित सारा धन लौटा चुका है। फिर भी हालात का फायदा उठाकर यह उस धन को दोबारा वसूल करना चाहता है।" एक पल रुक कर महारावल ने एक बर्तन में पानी लाने का इशारा किया। सेवक ने पानी का बर्तन दरबार में लाकर रख दिया। महारावल की आज्ञा से पास में रखी बही का वह पन्ना, जिस पर वासुदेव का हिसाब लिखा था, बही से निकालकर पानी में डुबो दिया। जब उसे बाहर निकाला गया, तो सारे दरबारी व कन्हैयालाल चौंक उठे।

सब ने देखा, पानी से भीगे वासुदेव के खाते पर कुछ आड़ी-तिरछी रेखाएं चमक रही थीं।

सारे दरबारी और प्रजाजन महारावल की विद्वत्ता एवं न्याय करने के ढंग को देखकर जयजयकार कर उठे। वासुदेव की आंखों से खुशी के आंसू टपक पड़े। आज भी जैसलमेर राज्य में महारावल मूलराज की विद्वत्ता के किस्से कहे-सुने जाते हैं। ●





# छड़ी की आवाज

—यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

बहुत पहले की बात है। उस समय राजस्थान से कलकत्ता, बम्बई जाने के लिए रेलगाड़ियां नहीं थीं। लोग पैदल, ऊंट और बैलगाड़ियों से आया-जाया करते थे।

राजस्थान का हीरे-जवाहरात का एक व्यापारी काफी धन कमाकर, कलकत्ता से राजस्थान के लिए चला। उस समय रास्ते में तरह-तरह के भय थे।

व्यापारी ने सोचा कि इतना धन लेकर जाना तो अपने को संकट में डालना है। उसने खूब सोचा-विचारा। फिर अपनी सुरक्षा के लिए साधु का वेश बना लिया।

गेरुए वस्त्र, गले में रुद्राक्ष व चमकदार मोतियों की माला, हाथों में दो-दो कड़े – एक पीतल का तथा एक लोहे का।

उसने अपने सारे हीरे-जवाहरात एक खोखली छड़ी में भरवा लिए। वह छड़ी दूर से एकदम साधारण लगती थी।

व्यापारी निश्चिंत हो गया कि अब उसे कोई खतरा नहीं है। उसने सारा काम छिपकर किया, ताकि किसी को उसकी असलियत की भनक न पड़े। हाथ में कमंडल और कंधे पर झोली। अलख निरंजन और नारायण-नारायण की रट लगाने लगा। इस प्रकार वह एक-एक गांव और शहर पार करता गया।

चलता रहा, चलता रहा।

आखिर राम-नाम जपते हुए वह राजस्थान की सीमा पर पहुंच गया।

उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। नीम के एक पेड़ के नीचे वह सुस्ताया, फिर चल पड़ा।

रास्ते में एक गांव पड़ा। इस गांव के बहुत-से लोग चोर थे। वे लूटपाट और चोरी करके पेट भरते थे, पर अपनी मर्यादा को कभी नहीं भूलते थे। तब उनके यहां धर्म-नियम था कि जो कोई उनके घर पानी या रोटी खा लेता या वे जिसके घर पानी पी लेते या रोटी खा लेते, उनके यहां चोरी नहीं करते थे।

साधु बने व्यापारी को इस धर्म-नियम का पता नहीं था। एक घर के सामने पहुंचकर उसने पानी मांगा। घर के लोगों ने साधु को बिठाया। साधु ने एक ओर कमंडल रखा, दूसरी ओर झोली। मगर छड़ी वह पकड़े ही रहा। घर वालों से पानी लेकर जैसे ही उसने पिया, घर के मालिक देवला ने अपना माथा पीट लिया। वह बोला—"मैं तो लुट गया। मेरी सारी मेहनत बेकार गई।"

साधु बने सेठ ने पूछा—"क्यों भाई, क्या कुछ अनोखा घट गया?"

"सब नष्ट हो गया।"—देवला ने कहा।

"पर बात क्या हुई?"—साधु बने व्यापारी ने अचरज से कहा—"पानी ही पिया है, दूध तो नहीं

पिया।"

देवला ने पछतावे से कहा—"तू ने तो अमृत पी लिया। मेरे घर का पानी तेरे लिए अमृत है।"

—"मैं समझा नहीं।"

देवला ने उसे पेड़ की छांव तले बिठाया। लम्बी सांस लेकर कहा—"महात्मा जी! आप क्या हैं, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं।"

व्यापारी एकदम घबरा गया। रुक-रुककर बोला—"क्या जानते हो?"

—"तू साधु नहीं है।"

"तो मैं क्या हूं?"—उसने डरते हुए पूछा।

देवला जरा-सा मुसकराया। फिर बोला—"तू साधु नहीं, व्यापारी है। जौहरी है।"

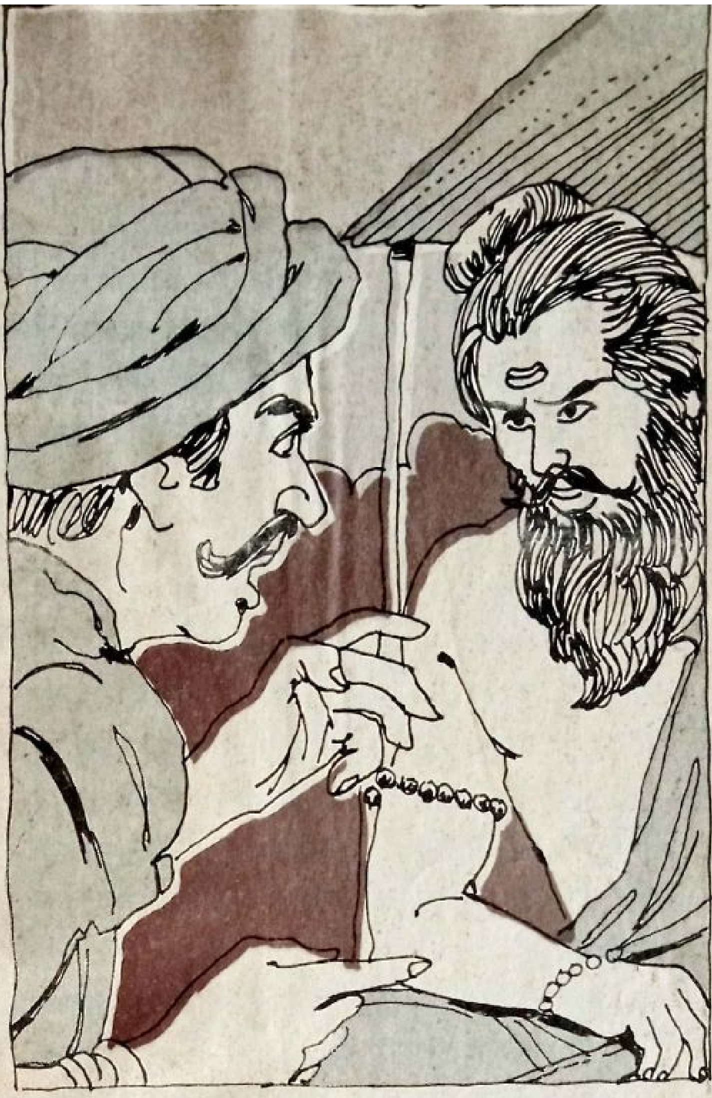
"नहीं, भाई नहीं।"—व्यापारी ने साफ इनकार करते हुए कहा—"मैं तो मांगकर पेट भरने वाला साधु हूं।"

देवला ने इस बार जरा नाराजगी से कहा—"मुझे समझाने की जरूरत नहीं है। तू जौहरी है। तू ने अपने मूल्यवान हीरे-मोती कहां छिपा रखे हैं? मुझे इसका भी पता है।"

व्यापारी मन ही मन कांप गया। फिर उसने सोचा कि छड़ी में छिपे हीरे-मोतियों के बारे में यह कैसे जानकारी पा सकता है? बनावटी हंसी हंसकर बोला—"क्या बात करते हो भाई! इस बार तुम्हारा दावा झूठा होगा।"

देवला अभिमान से भरकर बोला—" यदि तू जानना ही चाहता है, तो जान ले। तेरा सारा धन इस छड़ी के भीतर है। क्योंकि जब-जब यह जमीन पर टिकती थी, तब-तब आवाज खोखलेपन की आती थी। जब तू हमारे घर पर आया था, तभी मैं समझ गया था कि तेरी छड़ी खोखली है। मेरा शक तब पक्का हो गया जब तूने सारी चीजें तो एक तरफ रख दी, मगर छड़ी को पकड़े ही रहा। तू कहे तो इस छड़ी को तोड़कर दिखाऊं?"

देवला ने उसकी छड़ी को लेना चाहा, पर व्यापारी दूर खिसक गया। एकदम हाथ जोड़ गिड़गिड़ा कर



बोला—"भाई मेरे, मुझे माफ कर दे। मैं व्यापारी ही हूं। मेरा सारा धन इस छड़ी में है। पर मुझ पर दया कर। यदि तू मेरा यह धन छीन लेगा, तो मेरी बरसों की कमाई चली जाएगी। मुझे अपनी बेटी का विवाह करना है।"

देवला ने व्यापारी के कंधे पर हाथ रख कर कहा—"भाई! मैंने तुझसे कहा न, तूने पानी नहीं, अमृत पिया है। इसका मतलब यह है कि अब मैं तुझे लूट नहीं सकता। तुझे हानि नहीं पहुंचा सकता, बल्कि मैं तुझे हिफाजत से तेरे घर तक पहुंचा कर आऊंगा, ताकि तुझे कोई लूटे नहीं। यह हमारा धर्म है।"

और देवला व्यापारी को उसके घर पहुंचाकर आया। व्यापारी ने उसे अपना चौकीदार बना लिया। क्योंकि वह अब उसे कभी हानि नहीं पहुंचा सकता था। ●

# नया नौकर

—कुमार नरेंद्र चूरा

किसी जमाने में रघुराज नाम के एक व्यापारी थे। स्वभाव से वह विनम्र और व्यवहार कुशल थे साथ ही बुद्धिमान भी। गांव के बीच स्थित एक बड़े-से बड़ के पेड़ के नीचे उनकी दुकान थी। दुकान में हर तरह का सामान मिलता। इसलिए बिक्री खूब होती और कमाई भी।

सेठ जी का व्यापार जब बढ़ गया, तो उन्होंने सोचा—'क्यों न दुकान में एक नौकर रख लूं? मैं शहर से सामान ले आऊंगा, वह दुकान में बैठकर बेचेगा।' उनका कोई पुत्र नहीं था इसलिए किसी न किसी पर तो विश्वास करना ही था। उन्होंने अपने रिश्तेदारों और परिचितों से कह दिया कि एक मेहनती और ईमानदार आदमी की जरूरत है जो दुकान संभाल सके।

कुछ ही दिनों में सेठ जी के पास नौकरी पाने के लिए चार युवक आए। सेठ जी को तो एक आदमी की जरूरत थी। उन्होंने सोचा—'चारों की परीक्षा लेनी चाहिए। इनमें से जो बुद्धिमान होगा, उसे नौकरी पर रख लूंगा।' उन्होंने उन चारों युवकों से अगले दिन अलग-अलग समय पर आने को कहा।

दूसरे दिन सवेरे सबसे पहले मणिराम नाम का युवक आया। सेठ जी ने अपने हाथ में एक कंघा लेकर उससे कहा—"मैं एक गंजा ग्राहक हूं और तुम दुकानदार। तुम मुझे यह कंघा कैसे बेचोगे?"

"सेठ जी, अगर आप गंजे हैं तो कंघा क्यों खरीदेंगे? गंजा आदमी भला कंघे का क्या करेगा?"—मणिराम ने जवाब दिया।

सेठ जी ने कहा—"तुम्हारी बात सही है। गंजा आदमी कंघा नहीं खरीदेगा। अब तुम जा सकते हो।"

थोड़ी ही देर में धनि[illegible]लाल नाम का युवक आया। सेठ जी ने वही प्रश्न उसके आगे भी दोहरा दिया। उसने जवाब दिया—"पहली बात तो यह कि



आप गंजे नहीं हैं, फिर आपके पास तो बहुत सारे कंघे हैं। आप कंघा क्यों खरीदेंगे?" सेठ जी ने उसकी बात को भी सही बताया और उसे जाने के लिए कह दिया। वह समझ गए कि यह तो मणिराम से भी अधिक मूर्ख है।

उसके बाद मदनलाल आया। प्रश्न सुनकर वह बोला—"गंजा आदमी तो कंघा नहीं लेगा। यदि बालों वाला कोई ग्राहक आए, तो उसे कुछ कम दाम बताने से वह कंघा ले लेगा।" सेठ जी ने उसकी बात को भी सही बताते हुए उसे जाने को कह दिया।

कुछ देर बाद चौथा युवक धर्मपाल भी आ पहुंचा। सेठ जी ने उससे भी वही प्रश्न पूछा। इस पर उसने जवाब दिया—"देखिए साहब, आप रोजाना स्नान करने के बाद अपने सिर में तेल लगाएं और इस कंघे को पंद्रह-बीस बार सिर में फिराएं। अगर नियमित रूप से आपने ऐसा किया, तो आपके सिर पर बाल उग सकते हैं। यह कंघा मजबूत और टिकाऊ भी है। इसकी कीमत मात्र चार रुपए है।"

सेठ जी समझ गए कि यह युवक व्यापार के गुर भलीभांति जानता है। उन्होंने उसे शाबाशी देते हुए नौकरी पर रख लिया।

फिर कहा—"देखो, मेरी दुकान पर उचित दाम लेकर सही चीज देने की परम्परा है। तुम पूरी ईमानदारी से काम करना।"

धर्मपाल ने कहा–"जी, ऐसा ही होगा।" वह सचमुच बहुत मेहनती और ईमानदार था। ●

# नंदन ज्ञान पहेली

## १०००रु॰ पुरस्कार
**कोई शुल्क नहीं**

### नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

## संकेत

### बाएं से दाएं

१. यह सफेद— तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा।
(मोती/ मोर)

२. हम जादुई— बनाना जानते हैं राजन्।
(नावें/ नाल)

४. जल्दी बताओ,— कहां है ?
(हाथी/ हार)

८. छुटकी,— को जाकर खीर दे आ।
(भाई/ भाभी)

९. बस महाराज, मुझे— दिन का समय और चाहिए।
(दो/ सौ)

१०. उस सुराही का जल पीते ही— सब पहले जैसे हो गए।
(ये/ वे)

१२. तमिलनाडु की एक प्रसिद्ध नदी।

### ऊपर से नीचे

३. इन— का अब क्या भरोसा ?
(पैसों/ सांसों)

५. हां, मैंने ही यह— बनाया था।
(चित्र/ इत्र)

६. देखते ही देखते— की मूरत बोलने लगी।
(माटी/ माशा)

७. क्या कहा,— फिर टूट गया ?
(पुल/ नल)

११. कभी खाया है यह फल ?

काटिए

## नंदन ज्ञान-पहेली : २९७

नाम ____________________

उम्र ______ पता ______________

______________________________




नं॰ ज्ञा॰ प॰ : २९७

# अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

**पेट की गड़बड़ी?**

**स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।**

सर्वाधिक रोगों का कारण — पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार






**पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए**

**डा. सरकार का एक अनोखी खोज आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।**

## लिवोसिन

**सेवन विधि :**

जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

# लिवोसिन

## एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

**आर्निकाप्लस-ट्रायोफर** निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter - की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by :
allen's india **Allen's India Marketing Pvt. Ltd.**
ArnikaPlus Apartment, Sealdah
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

**जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।**

Allen's Ad. India

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-2844

# सौ बोरे जौ

—उषा गर्ग

तिब्बत के राजा सोंगुस्टन गांपो का एक मंत्री था। उसका नाम लोंपो गार था। वह अपनी बुद्धिमत्ता और चतुराई के लिए प्रसिद्ध था।

अपने पुत्र के जवान होते ही वह उसके भविष्य के बारे में सोचकर परेशान रहने लगा। एक दिन उसने सोचा—'मेरा पुत्र बहुत होशियार नहीं है। मुझे उसके लिए एक सुंदर और चतुर पत्नी की खोज करनी होगी।' उसने बहुत प्रयास किए, लेकिन अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। जब उसे कोई उपाय नहीं सूझा, तो एक दिन उसने अपने बेटे को बुलाया। उसे एक सौ मेढ़े दिए। बोला—"देखो, न तो तुम इन्हें मारोगे और न ही बेचोगे। कुछ भी हो, तुम्हें ये मेढ़े घर वापस लाने हैं। लेकिन इनके साथ-साथ जौ से भरे एक सौ बोरे लाने होंगे। यदि तुम यह काम नहीं कर सके, तो मैं तुम्हें घर में प्रवेश नहीं करने दूंगा।"

लोंपो गार का बेटा इधर-उधर चक्कर काटता रहा। भूखा-प्यासा, थका-हारा एक शहर जा पहुंचा। वह अपने पिता की शर्त पूरी करता तो कैसे? उसके पास एक सौ बोरे तो क्या, एक बोरा भी खरीदने के लिए धन नहीं था। वह उनमें जौ किस प्रकार भरता? इसी उलझन में परेशान होकर वह नगर के दूसरे छोर तक पहुंच गया। उसका दिल बैठने लगा। सिर चक्कर खाने लगा। अचानक उसे लगा कि कोई उसके सिर के बाल सहला रहा है। उसने आंखें खोलकर देखा, तो उसके सामने एक सुंदर युवती खड़ी थी।

सारी कहानी सुनकर वह बोली—"इतना दुखी होने की कोई बात नहीं है। तुम यहां से पचास कदम आगे जाओ। वहां तुम्हें एक सरोवर मिलेगा। तुम उसमें एक घंटे तक लगातार पत्थर फेंकते रहना। एक छछूंदर बाहर आएगा। उससे तुम जो चाहे मांग लेना।"

उसने जैसा बताया था, वैसा किया। छछूंदर ने प्रकट होकर उसकी बात सुनी। बोला—"इसमें



परेशान होने की क्या बात है?" यह कहकर उसने तत्काल सारे मेढ़ों की ऊन कुतरी, बाजार में बेची। उसके बदले मैं जौ से भरे एक सौ बोरे लाकर दे दिए।

लोंपो गार खुश था। उसे लगा कि उसका पिता उसके इस काम से बहुत प्रसन्न होगा। उसने घर आकर सारी बात अपने पिता को बताई। पर वह 'हूं-हां' करता रहा।

अगले दिन उसने अपने बेटे को फिर बुलाया। बोला—"कल तो तुमने सारे मेढ़ों की ऊन कुतरवा दी। मुझे यह कतई पसंद नहीं है। कल तुम एक सौ मेढ़े लेकर फिर जाओ। इनके साथ-साथ जौ से भरे एक सौ बोरे लेकर लौटना। वरना घर मत आना।" लोंपो ने अगले दिन अपने पुत्र को फिर भेज दिया।

निराश होकर वह शहर के उसी छोर पर फिर आ बैठा। सुंदर युवती ने प्रकट होकर उसे फिर उसी सरोवर पर जाकर उसमें एक घंटे तक पत्थर फेंकने का सुझाव दिया। उसने वैसा ही किया। छछूंदर ने प्रकट होकर उसकी चिंता का कारण पूछा। सारी बात सुनकर वह बोला—"तुम्हें परेशान होने की कोई आवश्यकता

नहीं है। मैं अभी प्रबंध कर देता हूं।''

यह कहकर उसने सारे मेढ़ों के सींग काटकर उनसे चाकू और औजारों के हैंडल बनाए। बाजार में बेचकर उनसे कमाए धन से जौ से भरे एक सौ बोरे खरीदे। वे लोंपो के पुत्र को थमा दिए।

लोंपो का बेटा बहुत प्रसन्न हुआ। खुशी-खुशी घर पहुंचकर उसने जौ से भरे एक सौ बोरों का अपने पिता के सामने ढेर लगा दिया। लेकिन जब उसके पिता ने मेढ़ों के सिर से सींग गायब देखे, तो आगबबूला हो उठा।

पुत्र से सारी कहानी सुनकर उसने कहा—''जाओ, उस छछूंदर से कहो, यदि वह इतना चतुर है तो राख से नौ हाथ लम्बी एक रस्सी बनाकर मुझे दिखाए।''

उसने तत्काल जाकर अपने पिता का संदेश छछूंदर को सुनाया। थोड़ी देर सोचकर छछूंदर बोला—''यदि मैं ऐसी रस्सी बना दूं, तो क्या तुम्हारे पिता उसे अपनी गर्दन में लपेटना चाहेंगे? जाओ, अपने पिता से पूछकर आओ।''

छछूंदर की चुनौती सुनकर लोंपो गार सोच में पड़ गया। फिर भी उसे लगा कि ऐसा होना असम्भव है। उसने राख की रस्सी अपने गर्दन में लपेटने का वचन दे दिया।

छछूंदर ने लोंपो गार के बेटे से सारी बात सुनी। उसे सरोवर से दूर उसी स्थान पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा, जहां उसे वह युवती मिली थी।

वह सीधा एक बूढ़े नेवले के पास गया। नौ हाथ लम्बी रस्सी हासिल करने में उसके सहयोग के लिए अनुरोध किया। नेवला इस बात के लिए खुशी-खुशी तैयार हो गया। दोनों बाजार गए और रस्सी वाले की दुकान तलाश करने लगे। बहुत घूमने-फिरने के बाद उन्हें एक दुकान दिखाई दी, जिसमें रस्सियों का अम्बार लगा था।

दुकान देखकर दोनों सरोवर पर लौट आए। थोड़ी देर दोनों में कानाफूसी हुई। छछूंदर सरोवर में चला गया और नेवला अपने बिल में। दोनों ने रस्सी वाले की दुकान तक पहुंचने के लिए जमीन के अंदर रास्ते तैयार किए। दोनों अपने-अपने रास्ते से रात में रस्सी वाले की दुकान में घुसे। दोनों ने अपने मजबूत दांतों से रस्सियों के दो बंडल दबाए और बिलों के बाहर आ गए।

रस्सी की लम्बाई नौ हाथ नापने के लिए छछूंदर दोनों बंडल लेकर लोंपो गार के पुत्र के पास पहुंचा। दोनों रस्सियों के बंडल खोलकर उन्हें एक पत्थर पर फैला दिए। लोंपो गार के बेटे ने नापकर देखा, तो दोनों रस्सियां नौ हाथ लम्बी थी। फिर क्या था! छछूंदर एक पनवाड़ी की दुकान से माचिस ले आया। एक तीली से दोनों रस्सियों में आग लगा दी। थोड़ी देर में वे राख बन गईं। इस प्रकार राख की नौ हाथ लम्बी दो रस्सियां तैयार हो गईं।

नेवले की सहायता से छछूंदर दोनों रस्सियां लेकर लोंपो गार के सामने उपस्थित हुआ। बोला—''चतुर मंत्री, तुम्हें अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत गर्व है। तुम्हें आज तक कोई पराजित नहीं कर सका। लेकिन अब तुम क्या करोगे? नौ हाथ लम्बी एक नहीं, दो रस्सियां तुम्हारे सामने मौजूद हैं। जिसे चाहे गर्दन में लपेटो।''

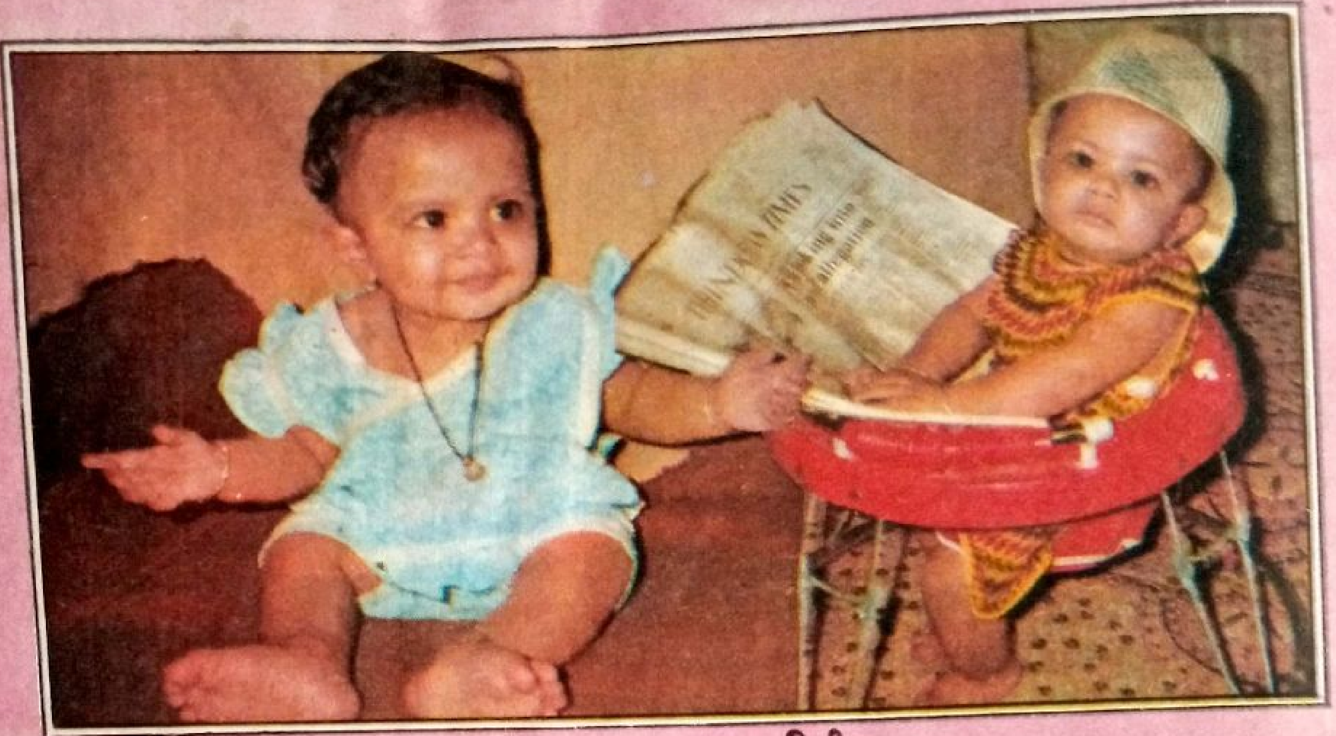
छछूंदर की बात सुनकर लोंपो गार बहुत लज्जित हुआ।

लोंपो गार ने झिझकते हुए छछूंदर से उस युवती के संबंध में पूछा, जो उसके पुत्र को नगर के दूसरे छोर पर मिली थी। वह बोला— ''महोदय, वह कन्या मैं ही हूं। पिछले जन्म में मैं आपके पुत्र की पत्नी थी, लेकिन उसके साथ दुर्व्यवहार करने के कारण मुझे इस जन्म में छछूंदर का रूप मिला। मैं अपने किए पर बहुत लज्जित थी। पश्चात्ताप करते हुए मैंने एक तपस्वी की जीजान से सेवा की। बहुत प्रसन्न होकर उन्होंने इस जन्म में मुझे अपने पिछले जन्म के पति की इस प्रकार सहायता करने का वरदान दिया।"

लोंपो गार उस युवती की बातों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने तत्काल अपने पुत्र का विवाह उससे कर दिया। वह बहुत प्रसन्न था, क्योंकि वह अपने पुत्र के लिए योग्य पत्नी की तलाश करने में सफल हो गया था।

# चीटू-नीटू


दूसरों का भला करने में बड़ाई मिलती है, इसलिए जब भी हो सके ...
पापा, हम आज से ही...
... मक्खियां भिन-भिना रही हैं ऐसी गंदी चाट क्यों खा रहे हो, बीमार पड़ जाओगे, —फेंको दोना
मेरा एक रुपए का नुकसान अभी तुम्हारी मम्मी से...
भीख देकर इसकी आदत खराब न कीजिए, इसे कोई काम-धंधा...
बड़ा आया काम-धंधे वाला... मेरा ही धंधा...
देखो, पैसा कमाने की खातिर बंदर को पीट रहा है, उसे बचाएं
इसे मदारी के चंगुल से छुड़ाया, हमारे ही पीछे पड़ गया... घर को भागें, भीतर से दरवाजा बंद कर लेंगे
बाहर निकलो, देखो सारे लोग तुम्हारी ही बुराई कर रहे हैं



## शीर्षक बताइए

पढ़ने का नाटक करता हूं : इस चित्र को ध्यान से देखिए। इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर-सा, छोटा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिख कर १५ सितम्बर '९३ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार मिलेंगे।

परिणाम : नवम्बर '९३ अंक




## पुरस्कृत चित्र

**कु. सरिता कुमारी, आयु १२ वर्ष, द्वारा श्री मुन्नालाल १४-२-५६४ गोशा महल, चंदनवाड़ी, हैदराबाद-५०००१२**

**इनके चित्र भी पसंद आए**—अनुज अग्रवाल, कलकत्ता; रुचि जैन, बम्बई; हरक चंद जाटोलिया, कुली (सीकर); पारुल कुब्बा, नई दिल्ली; ध्रुव गुप्ता, गुडगांव (हरि); सीमा सिकरवार, ग्वालियर।

# उसे बुला

—हरफूल सुईवाल

सुजानगढ़ राज्य के करणपुर गांव में एक चित्रकार रहता था— मणिधर। वह अपनी कला में खूब कुशल था। उसके बनाए चित्र देखकर, कोई भी उन चित्रों की प्रशंसा किए बिना नहीं रहता था। अपने चित्रों की लोगों के बीच प्रशंसा सुनता, तो मणिधर को इतनी खुशी होती कि वह अपनी गरीबी की बात भूल जाता।

मणिधर गरीब होते हुए भी ईमानदार और भला आदमी था। उसने कभी बेईमानी और चालाकी से स्वयं को धनी बनाने की बात नहीं सोची। उसके मन में दूसरों के प्रति खूब दया थी।

एक दिन उसकी पत्नी ने उसको सलाह दी कि वह कोई सुंदर और अनोखा चित्र बनाए, जिसे राजा को भेंट करे। यदि राजा खुश हो गए, तो उसे बहुत सारा धन इनाम में मिल सकता है।

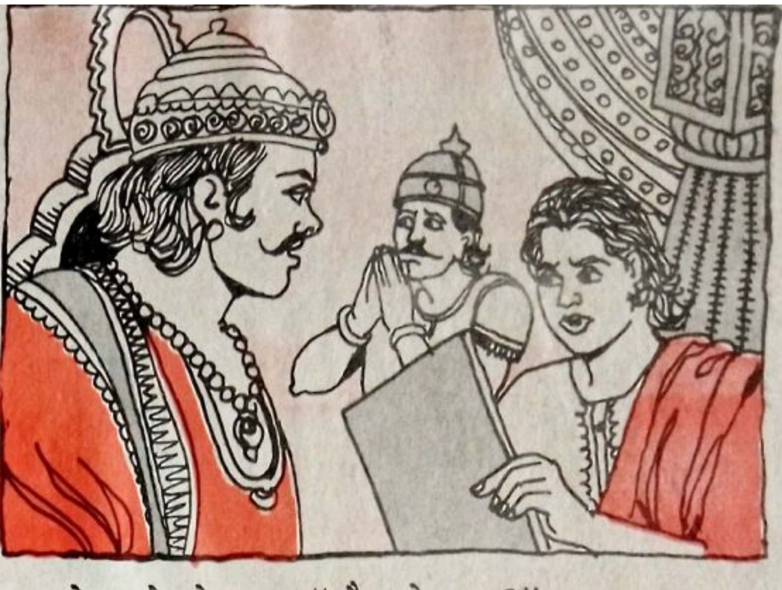
पत्नी की बात मणिधर को खूब पसंद आई। उसने सोचा— 'यदि ऐसा हुआ तो मेरा जीवन ही बदल जाएगा।' उसी क्षण, कुछ सोचने-विचारने के बाद वह चित्र बनाने में जुट गया।

अगले दिन तक उसने चित्र बना लिया। उसने राजा का ही चित्र बनाया था। चित्र में उसने राजा की बहादुरी दिखाई थी। उसमें था घना जंगल और तपती दोपहरी। ऐसे में घोड़ा दौड़ाते हुए राजा ने भाले का निशाना साधकर एक ही वार में शेर का शिकार कर डाला।

उस चित्र को देखकर, मणिधर की पत्नी खुशी से बोली— "वाह! कितना सुंदर चित्र है। राजा की वीरता का तो जवाब नहीं। क्या निशाना साधा है, जो भाला सीधा शेर की पीठ में जा घुसा।"

पत्नी की बात सुनकर, मणिधर के चेहरे पर खुशी छा गई।

अगले ही दिन वह चित्र लेकर, राजधानी की ओर चल पड़ा। जब मणिधर महल के अंदर जाने लगा तो



पहरेदार ने टोका— "कौन हो तुम?"

—"मैं करणपुर गांव का मणिधर चित्रकार हूं। महाराज को अपना बनाया चित्र भेंट करना चाहता हूं।"

पहरेदार कड़ककर बोला— "तुम कोई भी हो, लेकिन बिना आज्ञा के अंदर आने की तुमने हिम्मत कैसे की? दिखाओ अपना चित्र, जरा मैं भी तो देखूं कि कैसा चित्र बनाया है?"

पहरेदार के व्यवहार से मणिधर ठगा-सा खड़ा रह गया। अगले ही क्षण उसने वह चित्र पहरेदार को पकड़ा दिया। ज्योंही पहरेदार ने वह चित्र खोलकर देखा, तो देखता ही रह गया।

वह था चालाक आदमी। सोचा— 'यदि यह चित्र महाराज के सम्मुख पहुंच गया, तो जरूर वह इससे खुश होकर ढेर सारा इनाम दे देंगे। क्यों न मैं इससे यह चित्र हड़प लूं। खुद महाराज को देकर खुश करूं, तो वह इनाम मुझे मिल जाएगा।' पहरेदार बोला— "हूं! यह क्या चित्र बनाकर लाए हो? आखिर इसमें खास बात ही क्या है? भला इसी में है कि चुपचाप यहीं से लौट जाओ। अगर महाराज यह चित्र देख, कहीं बिगड़ गए, तो फिर फांसी से कम दंड नहीं मिलेगा।"

उसकी बात सुनकर मणिधर एकदम से निराश हो उठा। उसके चेहरे पर उदासी देखकर, पहरेदार बोला— "आखिर तुमने मेहनत तो की ही है भाई।" फिर उसने जेब से सोने की एक मोहर निकालकर मणिधर को पकड़ाते हुए कहा— "अरे, निराश मत

हो। इस एक मोहर के बदले, तुम्हारा यह चित्र मैं खरीद लेता हूं।''

मणिधर, एक क्षण तो पहरेदार की बात सुनकर चौंक उठा। आज तक उसे कभी अपने एक चित्र के बदले, सोने की एक मोहर नहीं मिली थी। वह सोने की मोहर लेकर खुशी-खुशी अपने घर लौट चला।

उसके लौटते ही पहरेदार ने वह चित्र अपने पास संभालकर रख लिया। किसी ऐसे मौके की तलाश में रहने लगा कि चित्र महाराज को देकर इनाम पा सके।

एक दिन, राजा बगीचे में टहल रहे थे। अच्छा मौका देखकर, पहरेदार वहां पहुंचा। बोला— ''महाराज, आपके लिए यह एक भेंट है।''

राजा ने ज्योंही वह चित्र खोलकर देखा, तो खुश हो उठे। चित्र राजा को इतना पसंद आया कि उनके चेहरे पर खुशी छा गई। राजा की खुशी देखकर, पहरेदार भी मन ही मन खूब प्रसन्न हुआ। सोचा, महाराज जब इतने खुश हुए हैं, तो जरूर अब कोई मुंहमांगा इनाम ही मिलेगा।

राजा बोले— ''पहरेदार, चित्र को पाकर तो मैं बहुत खुश हूं। आखिर मेरा इतना सुंदर चित्र बनाकर, मुझे भेंट करने वाला यह कलाकार है कौन ?''

राजा की बात सुनते ही पहरेदार के पांवों की जमीन खिसक गई। कहां तो वह चित्र के बदले इनाम पाना चाहता था। इनाम के बजाए यहां तो बात ही बदल गई। पहरेदार ने झूठ कहा— ''महाराज, आपके ही राज्य के करणपुर गांव में मेरा मित्र मणिधर चित्रकार है। उसी ने यह भेंट भेजी है।''

—''अपने राज्य के इस कुशल कलाकार से मैं मिलना चाहता हूं।''

उसी क्षण, राजा की आज्ञा पर एक सैनिक उपस्थित हुआ। राजा ने करणपुर गांव से मणिधर चित्रकार को बुलाकर लाने का हुक्म दिया।

वह अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ सीधा करणपुर जाकर ठहरा। गांव में मणिधर के घर पहुंचते उसे देर नहीं लगी। जब सैनिक ने मणिधर से साथ चलने की बात कही, तो वह डरता हुआ-सा उसके साथ चला।

जिस समय मणिधर राजा के पास पहुंचा, तो राजा ने कहा— ''मणिधर, तुम्हारे चित्र को देखकर, मैं खूब प्रसन्न हुआ हूं। आखिर तुम जैसा कुशल कलाकार अब तक छिपा कैसे रहा ? बोलो क्या चाहते हो ? तुम्हें मुंहमांगा इनाम मिलेगा।''

राजा की बात सुनकर, मणिधर समझ गया कि वह बेकार ही डर रहा था। महाराज तो उसके चित्र से खूब प्रसन्न हुए हैं। वह बोला— ''महाराज ! वह चित्र मैंने बनाया जरूर है, लेकिन चित्र के इनाम का असली हकदार तो अब वह पहरेदार ही है, मैं नहीं।''

''क्या मतलब ?''— राजा ने चौंककर कहा।

''वह चित्र मैं आपको भेंट करने आया था। तब पहरेदार ने सोने की एक मोहर देकर, मुझसे चित्र खरीद लिया था। यह कहा था कि महाराज इस साधारण से चित्र को देखकर, खुश होने के बजाए नाराज ही होंगे।''

मणिधर की बात सुनकर, राजा को पहरेदार की इस हरकत पर गुस्सा आया। उसी क्षण पहरेदार को अपने पास हाजिर होने का हुक्म दिया। पहरेदार को इस बात का डर तो था ही कि मणिधर जरूर राजा के सामने उसकी पोल खोल देगा। वह आते ही बोल उठा— ''महाराज, मुझे क्षमा कर दें। मैं चित्र की सुंदरता देखकर, आपसे इनाम पाने के लोभ में आ गया था।''

मणिधर ने देखा कि पहरेदार पर राजा का गुस्सा ज्यों का त्यों बना है। उसे पहरेदार पर दया आ गई।

राजा ने कहा— ''मणिधर, यह चित्र पहरेदार ने तुमसे खरीदा नहीं बल्कि ठग कर लिया था। इसलिए अब भी उसके बदले इनाम पाने का हक तुम्हारा ही है।''

—''महाराज, अगर आप मुझे इनाम ही देना चाहते हैं, तो इस पहरेदार को क्षमा कर दें।''

मणिधर की बात सुनकर, राजा और अधिक प्रसन्न हुए। बोले— ''मणिधर, तुम एक कलाकार ही नहीं, सच्चे इंसान भी हो। तुम्हारी इस सच्चाई पर खुश होकर, मैं सौ सोने की मोहरें इनाम में देता हूं।''

राजा की बात सुनकर मणिधर खुशी से भर उठा। ●

# शेर घोड़ा

—चन्द्रेश्वर प्रसाद



पुराने जमाने की बात है। एक राजा था। नाम था उग्रसिंह। यद्यपि उसका नाम उग्रसिंह था पर स्वभाव से शांत और न्यायप्रिय था। वह हर समय, प्रजा के हित में लगा रहता था। जंगल के बीच, पहाड़ की एक गुफा में, एक संन्यासी रहता था।

वह संन्यासी महीने-दो महीने में अपनी गुफा से निकलता था। उससे लोग डरते थे। उसे किसी ने हंसते या किसी से बात करते, कभी नहीं देखा था। हमेशा कठोर मुद्रा बनाए रहता। वह सीधा राजा के पास पहुंचता। राजा उसे खूब दान देते थे। उसके बारे में अनेक तरह की कहानियां प्रचलित थीं। लोग उसे तांत्रिक भी कहते थे।

एक दिन की बात है, विष्णुपुर में उत्सव मनाया जा रहा था। रानी अपनी सहेलियों और दासियों के साथ भगवान विष्णु की पूजा करने के लिए मंदिर जा रही थीं। साथ में हाथी, घोड़े, दास-दासियां थीं। सब लोग राजा-रानी की जय-जयकार कर रहे थे। उसी दिन संयोगवश वह संन्यासी भी महल की ओर आ रहा था। उसने रानी का ठाठ-बाट देखा, तो चकित रह गया। सोचने लगा—'यदि मैं भी राजा होता,तो सब मेरी भी जय बोलते। मैं भी जंगल की जगह महल में रहता।' बस, उसने मन में ठान लिया कि वह राजा से आधा राज्य हासिल करेगा।

उस दिन वह दान लेने राज दरबार में नहीं गया। वापस अपनी गुफा में लौट आया। अपनी तंत्र शक्ति से एक विचित्र व भयावह पशु का निर्माण किया। उस पशु का मुंह शेर जैसा और शरीर घोड़े जैसा था। संन्यासी ने उसका नाम सिंह-मुख रखा।

अब वह आए दिन उस पशु पर बैठकर निकलता, तो पशु के मुख से निकलती लपटों से गांव जलने लगते। पशु भाग जाते।

संन्यासी की इस हरकत से जनता त्राहि-त्राहि कर उठी। सभी लोगों ने राजा से इसकी शिकायत की।

राजा ने परेशान होकर यह घोषणा कर दी कि जो प्रजा की तबाही से रक्षा करेगा, उसे वह मुंहमांगा इनाम देगा। यह घोषणा सुनकर, संन्यासी बहुत खुश हुआ। वह दरबार में आया और बोला—"राजा, मैं तुम्हारी प्रजा को इस तबाही से बचा सकता हूं, पर एक शर्त है। तुम्हें अपना आधा राज्य मेरे हवाले करना होगा।"

संन्यासी की बात सुनकर पूरे दरबार में सन्नाटा छा गया। राजा ने हाथ जोड़कर कहा—"महाराज, मैं आधा राज्य आपको तत्काल देने के लिए तैयार हूं, लेकिन आप संन्यासी होकर राज्य का क्या करेंगे?"

संन्यासी क्रुद्ध स्वर में बोला—"राजा, तुम्हें इससे क्या मतलब? यदि तुमने आधा राज्य मुझे नहीं दिया तो मैं तुम्हारा और प्रजा का सर्वनाश कर दूंगा। मेरा सिंह-मुख प्रलय ला देगा।"

राजा भयभीत था। उसने कहा—"महाराज! दस दिन बाद आपको आधा राज्य सौंप दूंगा। मेरी शर्त यह है कि उस भयावह पशु को आप मुझे सौंप दें।" संन्यासी ने उसकी शर्त मान ली।

इसके बाद संन्यासी दस दिन बीतने पर फिर आया। राजा ने एक अलग सिंहासन पर उसे बैठाया। संन्यासी बोला—"तुम चार सैनिकों को मेरे साथ भेज दो। मैं सिंह-मुख तुम्हें सौंप दूंगा।"

संन्यासी के साथ चार सैनिक और प्रधान मंत्री चले। लेकिन उस दिन प्रकृति की विचित्रलीला हुई। जंगल में अचानक तूफान आ गया। तेज वर्षा होने लगी। थोड़ी देर में फिर शांति छा गई। जब संन्यासी वहां पहुंचा, तो देखा कि गुफा का कहीं नाम निशान नहीं है। वह अचकचा उठा कि यह क्या हुआ? उसकी गुफा बारिश और तूफान से ऐसे नष्ट हो गई थी जैसे कि मिट्टी की बनी हो। गुफा के साथ-साथ उस पशु का भी कहीं पता न था। संन्यासी की परेशानी देख मंत्री को मौका मिल गया। उसने संन्यासी को गिरफ़्तार करने का आदेश दिया। ●




स्वाति मोहित पूजा विपुल गौरव

## शीर्षक बताइए :

### परिणाम



ढेर सारे शीर्षक मिले। नंदन जुलाई '९३ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए।

**मैं परियों की रानी हूं, बच्ची नहीं सयानी हूं।**
—वनिता राठी, १७/ए-१४ तक्षिला, महाकाली रोड, अंधेरी (ईस्ट) बम्बई।

**खुशी बांटना मेरा काम, श्वेत परी है मेरा नाम।**
—गौरव उनियाल, ए ४७१ आई. डी. पी. एल. वीरभद्र, ऋषिकेश, देहरादून।

**परियों-सी मैं सज-धज कर, लगती हूं सबसे सुंदर।**
—महिमा गुप्ता, ८६ मिंट स्ट्रीट, तृतीय तल, मद्रास।

**परियों के मैं पंख लगाऊं, दूर गगन में उड़ती जाऊं।**
—पवनकुमार चौधरी ६ जी-१५, जवाहरनगर, श्रीगंगानगर (राज.)

**इनके शीर्षक भी सराहे गए—** सुषमा प्रताप, मालवीय नगर, नई दिल्ली; कुशल खंडेलवाल, हिंद मोटर (प. बं.); चारु भटनागर, शिमला; एस. के. आर. पवन, डिब्रूगढ़, असम।

## आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर के पेड़ में एक शाख अधिक है।
२. उसके पार का बादल अधिक लम्बा है।
३. नीचे उगे फर्न की एक पत्ती अधिक लम्बी है।
४. किनारे पर खड़ी महिला का टोप चपटा है।
५. उसके पर्स का रंग बदल गया है।
६. पानी में खड़े व्यक्ति की पोटली छोटी है।
७. दाईं ओर की बत्तखों में से एक की चोंच खुली है।
८. मकान की चिमनी से निकलता धुआं ऊंचा है।
९. एक घर की छत पर लगा झंडा गायब है।
१०. बादलों के ऊपर उड़ता पक्षी नहीं है।

## नंदन ज्ञान-पहेली : २९५



### परिणाम

पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। लेकिन सर्वशुद्ध हल सिर्फ एक आया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

**सर्वशुद्ध : एक : चार सौ रुपए**

एकता कौशिक, ९ सराय बलिहाराज, गांधी चौक, बुलंदशहर।

**एक गलती : चार : प्रत्येक को एक सौ पचास रुपए**

१. सजन गर्ग, राऊरकेला; २. अरुणकुमार, पोखरिया (बेगूसराय); ३. अनिल विज, अबोहर; ४. हेमंत राठी, भाटापारा (रायपुर)।

# नई पुस्तकें

**कम्प्यूटर सबके लिए—लेखक : श्यामसुंदर शर्मा; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-१; मूल्य : इक्कीस रुपए ।**

आज इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, संस्थानों और कार्यालयों के लिए कम्प्यूटर आवश्यक हो गया है । इतना ही नहीं, यह आम आदमी के जीवन से जुड़ता जा रहा है । स्कूल-कालिजों में इसके पाठ्यक्रम चलते ही हैं ।

मानव चांद पर पहुंचा, दूर के ग्रहों की खोज में यान भेज रहा है—यह सब कम्प्यूटर का कमाल है । ग्यारह अध्यायों में लेखक ने सरल ढंग से कम्प्यूटर के बारे में जानकारी कराई है । कुछ शीर्षक हैं—गिनतारा से इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर तक, कम्प्यूटर को निर्देश कैसे दें, इलेक्ट्रानिक अनुवादक और कवि, शिक्षक और चिकित्सक, भारत में कम्प्यूटर, भविष्य की झांकी ।

कम्प्यूटर जितना जटिल होता है, पुस्तक में कहीं वैसी जटिलता नहीं आई है । नई पीढ़ी के लिए यह सचित्र पुस्तक पठनीय है ।

**राजस्थानी मेंहदी—लेखक : डा. रत्ना चड्ढा; प्रकाशक : डा. वैश्य पोली क्लीनिक, नंद स्वीटस् के ऊपर, १००१४ ईस्ट पार्क रोड, दिल्ली; बड़ा आकार, मूल्य : पचास रुपए ।**

मेंहदी लगाने का रिवाज बहुत पुराना है । हाथ-पांव पर खासतौर से बालिकाएं और स्त्रियां मेंहदी रचाया करती हैं । राजस्थान में सुंदर-सुंदर कलात्मक डिजाइन मेंहदी के बनाते हैं । इस पुस्तक में एक से बढ़कर एक मेंहदी के सैकड़ों डिजाइन दिए गए हैं । लेखिका मेंहदी कला की अच्छी जानकार हैं । हिंदी और अंग्रेजी में मेंहदी बनाने की विधि और उसके लाभ भी बताए गए हैं ।

पुस्तक की छपाई अच्छी है । बालिकाओं व महिलाओं के लिए विशेष उपयोगी है ।

**आओ बच्चों सैर करें शिमला से बदरीनाथ—लेखक : शमशेर अ. खान; प्रकाशक : मिनहाज प्रकाशन, आर २/११४ नया राजनगर, गाजियाबाद; मूल्य : अठारह रुपए ।**

सैर-सपाटे की चर्चा करो तो बच्चे झूम उठते हैं । अगर कहीं बच्चों को सैर के लिए लें चलें तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता । सैर से मनोरंजन तो होता ही है, ज्ञान भी बढ़ता है । घुमक्कड़ी करते-करते ही राहुल सांकृत्यायन 'महापंडित' हो गए थे । लेकिन बच्चों के लिए घुमक्कड़ी कराने वाली किताबें अधिक नहीं हैं । युवा लेखक शमशेर अ. खान ने पहले 'गाजियाबाद से जम्मू तवी' पुस्तक लिखी, अब 'शिमला से बदरीनाथ तक' । दोनों पुस्तकें पठनीय हैं, रोचक हैं ।

शिमला से बदरीनाथ' को बच्चे ही नहीं, बड़े भी पसंद करेंगे । बीच-बीच में चित्र दिए गए हैं । कई जगहों से जुड़ी कथाएं भी हैं ।

**१. जैसे को तैसा**
**२. चतुर चरवाहा**
**दोनों पुस्तकों की लेखिका : उषा महाजन; प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, २/३८, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२; प्रत्येक का मूल्य : बारह रुपए ।**

बच्चों की रोचक कहानियां लिखने में उषा महाजन का नाम जाना-पहचाना है । 'नंदन' में उनकी कहानियां छपती रहती हैं ।

'जैसे को तैसा' पुस्तक में ये छह कहानियां हैं—मामा आया, किस्सा कुतों का, असली आस्तिक, काला-सफेद, बराबरी का दर्जा, जैसे को तैसा । कहानियां सभी अच्छी हैं किंतु 'मामा आया' पाठक को छू जाती है । 'जैसे को तैसा' दिलचस्प है और पुस्तक में सबसे मजेदार भी ।

चतुर चरवाहा—इस पुस्तक में पांच कहानियां हैं । चरवाहा कभी झूठ नहीं बोलता । दो राजा आपस में शर्त लगा लेते हैं । प्रशिया का राजा अनेक लालच देता है किंतु चरवाहा अडिग रहता है । पर जब भूल कर बैठता है, तब अपनी चतुराई से अपने राजा को जिता देता है । 'गलतफहमी' और 'मुत्री की विदाई' कहानियां भी बहुत दिलचस्प और प्रेरक हैं ।

**कब्बू रानी—लेखक : विजयदान देथा; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली; मूल्य : अठारह रुपए ।**

पुस्तक में पांच मनोरंजक कहानियां हैं । विजयदान देथा लोक-कथाओं का संकलन करने में अग्रणी हैं । राजस्थानी लोक-कथाओं को बोल-चाल की भाषा में लिखते रहे हैं । इस पुस्तक में भी ऐसी ही कथाएं हैं जो बच्चे और बड़े सभी पसंद करेंगे । लेकिन पुस्तक से भ्रम होता है मानो ये लोक-कथाएं न हों, बल्कि देथा जी की मौलिक बाल कथाएं हों । छपाई अच्छी है ।

# माओ और सोनू

एक गांव में सोनू नाम का एक बहुत ही शरारती लड़का रहता था। पूरा गांव उसकी शरारतों से परेशान था। लोग सोनू की शिकायत उसके पिता जी से करते। सोनू के पिता भी उसे बहुत समझाते पर वह अपनी शरारतों से बाज न आता।

उसी गांव में माओ नाम की बुढ़िया रहती थी। उसने अपने घर पर बहुत ही सुंदर बगीचा लगा रखा था! माओ के बगीचे में हर मौसम के फल-फूल लगा करते। फलों को देखकर, बच्चों के मुंह में पानी आ जाता।

माओ थी बहुत गुस्सैल। इसीलिए बच्चे उसके बगीचे में जाने की हिम्मत ही न करते। हां, कभी-कभी माओ ही बच्चों को पके-पके आम, संतरे, अमरूद और दूसरे मौसमी फल दे देती थी। पर जो बच्चा चोरी से उसके बगीचे के फल तोड़ता, उसे वह पीटती भी थी। इसीलिए बच्चे खुद ही ऐसा नहीं करते थे। जब भी उन्हें फल खाने होते, वे माओ से मांग लेते।

एक दिन सोनू को एक अजीब सी शरारत सूझी! उसने सोचा—'क्यों न माओ के बगीचे के फल तोड़े जाएं। वैसे तो माओ फल दे ही देती है, यदि चोरी से फल तोड़े, तो माओ जरूर नाराज हो जाएगी, फिर तो बड़ा मजा आएगा!' उसी दिन, दोपहर के वक्त, सोनू माओ के बगीचे में पहुंचा। माओ उस समय बगीचे में बैठी ठंडी-ठंडी हवा का आनंद ले रही थी। सोनू को पेड़ पर चढ़ा देखकर, माओ आग बबूला हो गई। उसने पास में पड़ी कुल्हाड़ी उठा ली और सोनू को मारने दौड़ पड़ी। सोनू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

अब तो माओ को और गुस्सा आ गया। उसने सोनू से कहा—"यदि नीचे आ जाओ तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगी।"

सोनू ने सोचा कि वह पेड़ पर सुरक्षित है। यहां



माओ उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी, अतः वह नीचे नहीं आया। फिर क्या था ! माओ ने आव देखा न ताव, धड़ाधड़ पेड़ काटने में जुट गई। सोनू आखिर था बच्चा ही, वह घबरा गया। उसने सोचा कि आज तो माओ उसे छोड़ेगी नहीं। वह जोर-जोर से रोने लगा। रोते-रोते कहने लगा—"मुझे माफ कर दो। मैं आज से तुम्हारे बगीचे में चोरी नहीं करूंगा।" माओ को दया आ गई। उसने कहा—"ठीक है। मैं तुम्हें माफ कर दूंगी। पहले वायदा करो कि अब तुम कभी चोरी नहीं करोगे।" सोनू मान गया। माओ ने सोनू को दो पके आम दिए। कहा—"तुम आज से अच्छे बच्चे बन गए हो, इसलिए तुम्हें छोड़ती हूं।" उस दिन से सोनू ने कभी ऐसी शरारत नहीं की।

**—उषा तिवारी, हरपालपुर (म.प्र.)**

## पानी देना

**टिंकू** बहुत ही प्यारा बच्चा था। लेकिन मां-बाप के लाड़-प्यार के कारण, वह शैतान हो गया था। प्रतिदिन उसकी शैतानियां बढ़ती ही जा रही थीं। उसके अड़ोस-पड़ोस के बच्चे उसी के कहे अनुसार चलते थे। सभी उन बच्चों से बहुत परेशान थे।

लेकिन उन बच्चों से सबसे ज्यादा परेशान थी, बाग वाली बूढ़ी अम्मा। बेचारी के कोई औलाद नहीं थी। अपने बाग के फलों को बेचकर गुजारा चलाती थी।

टिंकू और उसके दोस्त, बाग में घुसकर पेड़ों से फल चुरा लेते थे। जबकि अम्मा की रोजी-रोटी का साधन, तो वही एक छोटा-सा बाग था। शैतान बच्चों से बचे फलों को बेचकर ही वह अपना गुजारा चलाती थी। एक दिन, उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह इन शैतान बच्चों को सबक सिखाएगी। वह छिपकर बाग पर पहरा देने लगी।

एक दिन, टिंकू और उसके दोस्त फलों की चोरी करने आए। टिंकू पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ने लगा। अचानक, बूढ़ी अम्मा सामने प्रकट हुई। उसे देखकर, सभी बच्चे टिंकू को अकेला छोड़कर भाग खड़े हुए। टिंकू बेचारा मुसीबत में पड़ गया।

बूढ़ी अम्मा ने उसे नीचे आने के लिए कहा। लेकिन टिंकू बेचारे की तो डर के मारे जान निकल रही थी। जब बहुत कहने के बाद भी, वह नीचे नहीं उतरा, तो बूढ़ी अम्मा ने पास ही पड़ी कुल्हाड़ी उठा ली। बोली—"आज मैं इन सब पेड़ों को काट दूंगी। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।" और कुल्हाड़ी लेकर वह उस पेड़ को काटने लगी जिस पर टिंकू बैठा था।

टिंकू के लिए दोनों ओर से जान का खतरा था। पेड़ कटने पर वह नीचे गिर जाता, उतरता तो अम्मा मारती।

हिम्मत बटोरकर, वह पेड़ से नीचे उतर आया और बूढ़ी अम्मा से माफी मांगने लगा। कभी शैतानी न करने के लिए वचन दिया। बूढ़ी अम्मा ने उसे एक शर्त पर माफ करने के लिए कहा — यदि वह प्रतिदिन बाग के पेड़ों को पानी देगा, तो वह उसे माफ कर देगी। टिंकू ने उसकी शर्त मान ली।

अब प्रतिदिन वह पानी देने बाग में आने लगा। उसने शैतानी भी छोड़ दी थी। वह पेड़ों से प्यार करने लगा था। उसका अपने मतलबी दोस्तों पर से भी विश्वास उठ गया था। बूढ़ी अम्मा उसे पेट भर फल भी खिलाती और अपने पोते की तरह प्यार करती।

**—अंकित बंसल**, चांदपुर (उ.प्र)

**इनकी कहानियां भी पसंद की गईं :** चंचल गाड़िया, **चिड़ावा; आरती उडवाल**, गुड़गांव; नवनीत ग्रेवाल, **लुधियाना।**

# पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ———————— आयु ———

पूरा पता ————————

————————

रुचि ————————

**पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :**

१. अमि जैन, १५ वर्ष, २५३ जवाहर मार्ग, राज मुहल्ला, इंदौर; २. रोहित राज, १३, के-१६९ पी. सी. कालोनी, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना; ३. रश्मि शर्मा, १०, ५८७/५१ आदर्श नगर, सीपरी बाजार, झांसी; ४. मीनाक्षी शर्मा, १५, टी/७ रेलवे कालोनी, पीलीभीत; ५. रविकुमार बगड़िया, १५, १४ जी. ई. एल. शापिंग काम्प्लेक्स, मेन रोड, रांची; ६. गौरव श्रीवास्तव, ८, ५३०/८ मदनपुरी, गुड़गांव (हरि.); ७. मनीषकुमार शुक्ल, १२, विद्यासागर शुक्ल, बलरामपुर, गोंडा; ८. सुरेंद्रसिंह, १६, ए-२१२ शास्त्री नगर, नई दिल्ली; ९. अभिषेक दुबे, १३, ३/२३८ श्रीराम कालोनी, बुधनी, सीहोर (म. प्र.); १०. नवीन रश्मि, १२, १९ एल. बी. शास्त्री मार्ग, फतेहपुर; ११. ऋत्विक राज, १२, कावेरी हाउस, भुवनेश्वर (उड़ीसा); १२. नताशा मुखर्जी, १०, ए. के. बनर्जी, हैदर रोड, कोकर, रांची; १३. मोहम्मद इरशाद, १५, ५५६/जे रैस्ट कैम्प कालोनी, टूंडला, फिरोजाबाद; १४. रश्मि प्रियदर्शनी, ९, प्रकाश कुंज, मानपुर, मल्लाह टोली, पो. बुनियाद गंज, गया; १५.मुकुल अग्रवाल, १५, राकेश अग्रवाल, पो. झालू, बिजनौर; १६. मनीषकुमार जैन, १६, २३२ नई बस्ती, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पास, ललितपुर; १७. रश्मि माहेश्वरी, ११, ७० कट्टा फार्म, गोपालपुरा स्कीम नं. सी, रेलवे फाटक, जयपुर; १८. विकास कुमार, ११, शिवपूजन प्रसाद, शेखपुरा, ए. जी. कालोनी, पटना; १९. अमितसिंह, १३, ४ छात्रावास परिसर, अतर्रा डिग्री कालेज, अतर्रा, बांदा; २०. शत्रुघ्नसिंह, १४, निकट-श्याम साइकिल, गुलाबगंज, आरोन, गुना; २१. यशोवर्धन गौतम, १५, हर्षवर्धन गौतम, ग्रा. सेदरिया, पो. मदुरारा, मथुरा; २२. विपुल रंजन, १०, डा. प्रशांत कुमार, बड़ी खंजरपुर, तिलका मांझी, भागलपुर; २३. यामिनी ताम्रकार, १६, एच. एल. ताम्रकार, काशीराम चौक, दुर्ग; २४. अजय रामानी, १६, गंगा प्रोविजन स्टोर, मल्लीनाथ मार्केट, बाड़मेर (राज.); २५. सौरभकुमार सिन्हा, ११, कुमार निवास, चित्रगुप्त नगर, खगड़िया (बि.); २६. संजीवकुमार सिंह, १६, १५० एफ पुष्प विहार, नई दिल्ली; २७. कौशिक चटर्जी, १४, आर ८/३ हाउसिंग कालोनी, आदित्यपुर, जमशेदपुर; २८. विमलकुमार शुक्ला, १५, ३ए/३०/९ भिलाई, दुर्ग; २९. नितिनकुमार सिंह, १२, गुलाब सिंह, १९ एल. बी. शास्त्री मार्ग, फतेहपुर; ३०. ओम्प्रकाश, १३, १२२२, १/सी बोकारो स्टील सिटी (बि.)।

**खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि :**

१. सुमन कुमारी, १५ वर्ष, शब्दाकार हाउस, पो. मौदह बुजुर्ग (पातेपुर), वैशाली; २. ज्योति रावल, १०, कुंज हाइस, गोकुलपुरा, आगरा; ३. विवेक नौटियाल, ९, दून नर्सिंग होम, हरिद्वार रोड, देहरादून; ४. राजीवकुमार, १६, ललिता देवी, ग्रा.+पो. बलियापुर, धनबाद; ५. विवेककुमार गुप्ता, १६, ई-१/३०३ शहीद नगर, आगरा; ६. हेमंतकुमार, डूंगरवाल, १६ महेशकुमार, निकट-पोस्ट आफिस, छोटी सादड़ी (राज.); ७. कौशिककुमार भट्टाचार्य, ११, डा. शंकर भट्टाचार्य, लालबाग, दरभंगा; ८. कीर्ति जोशी, १२, एच-१० नर्मदा धाम कालोनी, मंडलेश्वर, खरगोन (म. प्र.); ९. अनुज गुप्ता, १२. डा. एम. प्रकाश, पुख्ता बाजार, जहांगीराबाद, बुलंदशहर; १०. मयंक दाधीच, १२, तरुणकुमार दाधीच, ६ स्टेशन रोड, मावली जंक्शन, उदयपुर; ११. राकेशकुमार, ११, लालजी शर्मा, पो. कतरासगढ़ (बि.); १२. विकासकुमार गुप्ता, १४, श्रृंगार जनरल स्टोर्स, निकट-हाईस्कूल, बरही (म. प्र.);१३. लोकनाथ मोदी, १४, ६४ सुवर्ण पार्क, हावड़ा-१; १४. प्रेमचंद गुप्ता, १६, २१५३ जवाहर कालोनी; उबुआ सब्जी मंडी मोड़, फरीदाबाद; १५. निशांतसिंह, १२, ११७ डी. मीरापुर, इलाहाबाद; १६. डी. सचदेव, १६, मुहल्ला खरादियान १३८/१७ कैथल (हरि.); १७. सौरभ गुप्ता, १२, ९७ लूकरगंज, इलाहाबाद; १८. अभिषेक गौरव, १२, तारा निवास (नवीन विद्यालय) शीतल टोला, आरा, भोजपुर; १९. विजय बोबरिया, १२, २१३ तोपखाना रोड, उज्जैन; २०. जितेंद्रकुमार, १३, १५४६ डा. मुखर्जी नगर, फेज-३, दिल्ली; २१. संजय नाथ, १४, गुरुचरण प्रसाद, ग्राम+पो. जादोपुर, गोपालगंज (बि.); २२. धनराज सैनी, १६, शिव क्लाथ सेंटर, रतननगर, चुरू (राज.); २३. शरदिंदु, ९, कृष्णमोहन सिन्हा, आदर्श नगर, समस्तीपुर; २४. अमित जैन, १५, १३७१ वैदबाड़ा, चांदनी चौक, दिल्ली; २५ अमृता, १४, शिवध्यानचंद्र सिन्हा, शास्त्री नगर, सिवान (बि.); २६. विवेक पाठक, १३, अच्युतानंद पाठक अधिवक्ता, हवाई पट्टी, बाईपास रोड, फैजाबाद; २७. तृप्ति जैन, १५, ४९९ सुरेश नगर, घाटीपुर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

# ताकत की जंग

MASTERS OF THE UNIVERSE

क़दम-क़दम पर 'बुराई' का खतरा... आपके साथ है 'नेकी' की शक्ति. 'ग्रेस्कल' किला है मंज़िल और तय करना है–इटर्निया का दुश्वार रास्ता. आइए, 'मास्टर्स ऑफ़ द यूनिवर्स' के साथ क़दम मिलाइए. बस, एक पाँसा हो, एक साथी हो तो इस रोमांचक खेल का मज़ा आए.




CUT HERE



अंग्रेज़ी सिखाये
आत्मविश्वास जगाये
ज़िन्दगी की दौड़ में
आगे बढ़ाये
विशेषज्ञों द्वारा तैयार
डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
एक ऐसा कोर्स जो आपको कुछ शब्द या वाक्य रटवाने की बजाय एक नवीन पद्धति द्वारा आधुनिक अंग्रेज़ी की गहराई तक पहुँचाता है। बेहद आसान निर्देशों व अनेक उदाहरणों के माध्यम से, यह कोर्स शब्द व वाक्य बनाने के नियमों, विभिन्न परिस्थितियों में बातचीत, महत्वपूर्ण विषयों के समानार्थक अंग्रेज़ी शब्दों व भाषा के अन्य पहलुओं से आपको अवगत कराता है।
देखते ही देखते अंग्रेज़ी पर आपका अपनी मातृभाषा की तरह अधिकार हो जाता है और आपके अंदर पैदा होता है ऐसा आत्मविश्वास कि आप हर जगह, हर व्यक्ति पर एक अमिट प्रभाव छोड़ पाते हैं।
देशभर में हर उम्र के लाखों व्यक्ति इस कोर्स का लाभ उठा चुके हैं।
आप क्यों पीछे रहते हैं?
डॉयमन्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
मूल्य 42/-
'डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' बंगाली, गुजराती, मराठी, नेपाली, उर्दू माध्यम में भी उपलब्ध है
मूल्य 36/-
मूल्य 42/-
मूल्य 36 -
मूल्य 36 -
मूल्य 32 -
आर्डर के साथ
आधा मूल्य
एडवांस भेजें।
डाक व्यय प्रत्येक 5/-
डायमण्ड पब्लिकेशन्स
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3273493, 3272495